श्रीमद भगवद्गीता
करमयोग
अनुवाद
पंडित राम सरन ऐडवोकेट
सहयोग
डा. नीरा शर्मा – डा. विभा शर्मा
अरुण पब्लिशिंग हाऊस, चण्डीगढ़ – (इंडिया)

श्रीमद भगवद्गीता (कर्मयोग)
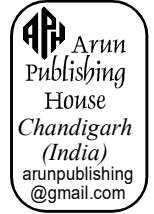
Pt. Ram Saran B. A., L. L. B. Advocate
Translator of the
Sb. Bhagwat Gita in Punjabee verse.

प. राम सरन जी

जिन्होंने इस अमूल्य ज्ञान को
हम सब के साथ सांझा किया

भेंट

पूजनीक पिता
पंडित मोहनलाल जी
दी
सेवा विच
बडे प्रेम ते सत्कार भरे ह्रदय नाल
इह पुस्तक
अर्पण करदा हां
उहनां दी कृपा ते उत्साह नाल ही
इह कारज सिरे चढ़या है

श्रीमद भगवद्गीता
(कर्मयोग)

पंडित राम सरन ऐडवोकेट
लाहौर

Arun Publishing House
SCO 49-51, Sector - 17C,
Chandigarh - 160 017 (India)

Arun Publishing House
SCO 49-51, SECTOR 17 C,
CHANDIGARH - 160 017
EMAIL: **arunpublishing@gmail.com**
Tel. - (0172) - 2702189

Sales/Liaison/Warehouses-Godowns/Stokists/Distributors/Branches
Chandigarh➢New Delhi➢Bengaluru➢Hyderabad➢Cochin➢Goa➢ Guwahati➢Derabassi➢Austraila➢Canada

श्रीमद भगवद्‌गीता (कर्मयोग) – *पंडित राम सरन ऐडवोकेट*
Srimad Bhagwad Gita (Karamyog) - Pandit Ram Saran, Advocate

International Standard Book Number (ISBN): ***978-81-8048-149-9***

First Published: 1935
2001 Arun Publishing House
2022, This Edition/Print 2024

Designed and Photo-composed at:
New Era Book Agency, SCO 49-51 (Basement), Sector - 17C, Chandigarh - 160 017 (India), Tel.: 0172-2702318

Printed in India **₹ 251/-**

Published by and printed through Arun Publishing House, Chandigarh - 160 017 (India)

Title Page of First Edition Published in the Year - 1935)

A BOOK FOR
EVERY PUNJABEE HOME

Bhagwat Gita

(PUNJABEE VERSE)

By

Pt. RAM SARAN B. A. L.L.B. Advocate
Lahore.

SRI DARBAR PRESS,
Nisbet Road, Lahore.
and others leading Booksellers.

Price Dev-Nagri Script Annas 10
Gurmukhi ,, Annas 5.

Opinions from first print....

Dr. ROBINDRA NATH TAGORE:—

was kind enough to hear recitations from this translation of Bhagwat Gita on 21st Febuary 1935. The poet compared some verses with the Sanskrit original and some Punjabee words were explained to him. The first words that dropped from his lips were."The translation [illegible] ful and homely." The poet was requested to give his blessings to the publication. He smiled a most charming smile and with his own hands gave blessings on the first copy of the publication.

RAM CHAND MANCHANDA Advocate.

It is a matter of great pleasure to see in homely standard Punjabee verse the subtle philosophy of Bhagwat Gita. This is a great achievement and only those who know the philosophy of life as profounded by Maharishi Vyas and have made attempts to express, it can [illegible]y estimate its value and see for themselves the [illegible] of this unique work in our mother toungue [illegible] sure the book will find its [illegible] to every Punjab House.

Pt. RAM GOPAL JI SHASTURI VAIDYA.
Ex Research Scholar and Professor D. A. V. College Lahore.

Atfer going through this Punjabee translation of Bhagwat Gita I am of opinion that this poetic rendering is sweet and simple and fully expresses and explains the teachings of Vyas.

GOSWAMI TYAGMURTI Pt. GANESH DUTT JI

This is a literal rendering of the original Shlokas of the Bhagwat Gita. The translation is of a very high merit. I have seen a good many poetic renderings of the Bhagwat Gita, but I have never so far come accross a better translation. The poetry is so

simple that even children can easily follow and understand the philosophy. I hope the book will receive universal appreciation.

Dr. SIR. GOKAL CHAND NARANG M.A. Ph. D.

I have read with great interest the translation of the 1st 6 chapters of Bhagwat Gita by Pt. Ram Saran B. A. L.L. B. Advocate of Lahore. The translation is in very simple and homely Punjabee verse and I have no doubt will be very much appreciated by those Punjabee who love their mother tongue and have no access to the original.

R.B.L .MUKAND LAL Puri M.A.(PUNJAB AND OXON) M.L.C., BARRISTER-AT-LAW. LAHORE.

I have read with great pleasure and interest the translation in Punjabee verse of the first six chapters of Shrimad Bhagwad Gita by Pt. Ram Saran advocate of Lahore. It is an accurate translation in simple and homely verse and will be enjoyed and appreciated by all who read it. I consider it to be a valuable addition to the literature on Bhagwad Gita and is eminently fitted to placed in the hands of ladies and girls.

R. B. DURGA DAS, B. A., L. L. B. Advocate.

I congratulate you upon your new publication Gita in Punjabee. You have done a great service to the cause of true religion as well as of the Punjabee language. Your rendering in Punjabee Verse is both correct and simple.

MEHTA AMIN CHAND B. A. L. L. B Advocate.

It is a pleasure to read it and find the Punjabee rendering of Sanskrit verses so faithful I am sure, you will immortalise your name in Punjabee literature.

From the Gurmukhi Version

धनवाद

इह उल्खा करन समय कई सज्जणां ने मेरी बहुत सारी सहायता कीती, मैं सब दा सच्चे दिलौं धनवाद करदा हाँ।

श्री शहिंशा महाराज, लाला विशन दास विष्णु एडवोकेट, पंडित बिहारी लाल साबर, लाला लक्ष्मी नाराइन एडवोकेट, श्रीमान सत्यार्थी जी, लाला अमरनाथ चोपड़ा, लाला धनी राम जी भल्ला ते लाला अमोलक राम कपूर दा ख़ासकर के धनवाद कीता जांदा है।

अंत विच मैं बाबा गुरबख़्श सिंह निरंकारी दा बहुत सारा धनवादी हाँ, जिन्हां ने पुस्तक दे प्रकाशित करन विच बहुत सारा उत्साह प्रगट कीता।

पंडित राम सरन

पाठ दे गान दी विधि

गीता दे करम काण्ड दा इह पंजाबी उल्खा हिंदी ते पंजाबी दे प्रसिद्ध चौपाई छंद विच कीता होया है। इसे छँदा बंधनी विच ही गोस्वामी तुलसीदास दी रामायण है।

जे पाठ करना होवे, तां सुखमनी साहिब दे रहां ते लै नाल पाठ कीता जा सकदा है। जे गांऊणा होवे तां रामायण दी प्रसिद्ध सुर–

'रघुपत राघव राजा राम।
पतित पावन सीता राम।'

जां मशहूर पुराण तुलसी रामायण दी सुर विच गाईया जा सकदा है, जां काफीयां दी लै–

'मुरली अचरज काहन वजाई।'

दो रहा ते इह गीता गाई जा सकदी ऐ। एह छंद प्राचीन समय तो भगती ते प्रेमरस भीनी कविता विच कवि शरां ने वर्तिया है। गीता दा संस्कृत अष्टपदी छंद वी इस चौपाई छंद नाल बहुत सारा मिलदा ऐ। एक होर वाधा चौपाई छन्दा–बंधी विच ऐह है कि हर वेले गाईया जा सकदा ऐ।

सावित्री कुमारी

मन तरंग

बचपन दा ज़माना सी, तिन मितर सां, पं. विश्वेश्वर, मोती राम साहणी ते मैं। धरम पुस्तकां पढन दा शौंक सी, पर जिस पुस्तक नूं हथ लाईदा सी समझ घट आऊंदी सी। कई वारी आपो विच गल करदे सां कि धरम पोथीआं साड्डी अपणी मातृ बोली विच क्यों नहीं।

स्वर्गवासी माता जी नित सवेरे वेले भगवद्गीता दा पाठ करदे होदें सन, माता जी ने पिछली अवस्था विच ही हिन्दी पढनी सिखी सी। पास बैठ के मैं वी सुणदा सां, पर फेर वी गीता दे गिआन दी समझ नहीं सी आऊंदी। 'तोता', 'बकरा', 'गणका' आदि दीआं कहाणीआं वाले गीता दे महातमां नूं सूणन वल मन दी रची रेहिदी सी। जी विच आइआ कि पंजाबी बोली विच गीता दा वारतक उलखा अरंभ करां, पर बाल बुद्धि सी, थोड़ा जिहा करके दड दिता। 1917 विच माता जी चल बसी, गल ठंडी पै गई, गीता दा उलखा विचे ही रह गिया। कई वरे बीत गये, विआह होया, घर पुत्रीयां होईयां पुत्रीयां सिआणीआं होइआं ते विचार आईया कि ओह कोई धरम पुस्तक पढ़िआ करण, पर ओही पहिले वाला सवाल सामने आईया कि धरम ग्रंथ समझ विच किस तरहां आउण। बचपन दी गल फेर चेते आई, ते सपुत्री सावित्री दी सहायता नाल भगवद्गीता दा पंजाबी कविता विच उलखा करना आरम्भ कर दिता। जद पिता जी नूं इस गल दा पता लगा तां ओहना ने घड़ी मुड़ी उत्साह देके इस कम दे जोश नूं ठण्डा न पैण दिता।

फिर इक ऐसी धटना होई, जिस ने होर प्ररिया कि कम नू छेती सिरे चहड़िया जाए। मितर लाला मोती राम साहणी काल वस हो गए, दिल नूं इक ठोकर लगी। पुत्री सावित्री दी मेहनत रंग ते उत्साह नाल भगवद्गीता दा करमयोग तैयार कर के छपवाण दी कीती।

गीता दा करम कांड पहले तो छेवें अध्याय तक है, नितनेम करण लई। इस तो उत्तम ते सरल हिन्दू शास्त्रां विच शायद ही कोई पाठ होवे। सारा पाठ प्रेम नाल कीतिआं इक धण्टे विच मुक जांदा है।

बचपन दी आस पूरी होई, भगवद्गीता सरल रूप विच मिठी बोली विच परमात्मा दी किरपा नाल रोज पाठ करन लई सब पंजाबी भैणा–वीरां दी सेवा विच रखी जांदी है।

आशा है कि पंजाबी भैण अते वीर इस दा नित पाठ कीता करन गे।

लाहौर, 1 मार्च 1935 *राम सरन*

प्रसंगवश

प्रस्तुत भगवद्गीता के सभी अध्यायों का पंजाबी अनुवाद जो देवनागरी लिपि में है, पंडित राम सरन दास जी ने किया है। यह अनुवाद स्वतंत्रता के पूर्व का है। यह संस्करण डा. नीरा शर्मा और डा. विभा शर्मा के अथक प्रयासो व सहयोग से संभव हुआ है। आशा है पाठक इस अमूल्य कृति का भरपूर लाभ उठा सकन गे। गीता के अनुसार वह कर्म जो निष्काम भाव से ईश्वर के लिए जाते हैं वह बंधन नहीं उत्पन्न करते तथा ऐसे कर्म मोक्षरूप परमपद की प्राप्ति में सहायक होते हैं। इस प्रकार फल की कामना न कर ईश्वर के लिए कर्म करना वास्तविक रूप से कर्मयोग है। भारतीय दर्शन में कर्म, बंधन का कारण माना गया है। किंतु कर्मयोग में कर्म के उस स्वरूप का निरूपण किया गया है जो बंधन का कारण नहीं होता। अब यह प्रश्न उठता है कि कौन से कर्म बंधन उत्पन्न करते हैं और कौन से नहीं? गीता के अनुसार जो कर्म निष्काम भाव से ईश्वर के लिए जाते हैं वे बंधन नहीं उत्पन्न करते। वे मोक्षरूप परमपद की प्राप्ति में सहायक होते हैं। गीता के अनुसार कर्मों से संन्यास लेने अथवा उनका परित्याग करने की अपेक्षा कर्मयोग अधिक श्रेयस्कर है। मनुष्य एक क्षण भी कर्म किए बिना नहीं रहता। कर्म करना मनुष्य के लिए अनिवार्य है। उसके बिना शरीर का निर्वाह भी संभव नहीं है। भगवान कृष्ण के अनुसार तीनों लोकों में उनका कोई भी कर्तव्य नहीं है। उन्हें कोई भी अप्राप्त वस्तु प्राप्त करनी नहीं रहती। फिर भी वे कर्म में संलग्न रहते हैं। यदि वे कर्म न करें तो मनुष्य भी उनके चलाए हुए मार्ग का अनुसरण करने से निष्क्रिय हो जाएँगे। अज्ञानी मनुष्य जिस प्रकार फलप्राप्ति की आकांक्षा से कर्म करता है उसी प्रकार आत्मज्ञानी को लोकसंग्रह के लिए आसक्तिरहित होकर कर्म करना चाहिए। इस प्रकार आत्मज्ञान से संपन्न व्यक्ति ही, गीता के अनुसार, वास्तविक रूप से कर्मयोगी हो सकता है।

पंडित राम सरन एडवोकेट (1 मार्च 1895–12 सितम्बर 1946) – प्रसिद्ध कवि व लेखक

श्रीमद भगवद्गीता के सभी अध्यायों का यह पंजाबी अनुवाद जो देवनागरी लिपि में है, पंडित राम सरन दास जी द्वारा किया गया है। यह अनुवाद आजादी के पहले का है। पंडित राम सरन दास जी लाहौर में रहने वाले एक प्रसिद्ध वकील थे। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरन वह क्रांतिकारियों के वकील थे और देशभक्ति की कविताएँ भी लिखते थे। उनका निधन स्वतंत्रता से पहले ही हो गया था। श्रीमद भगवद्गीता का अनुवाद गुरमुखी लिपि में भी है जो मुझे पंजाब डिजिटल लाइब्रेरी, चंडीगढ़ से मिला। पंडित राम सरन जी मेरे नानाजी थे। अब मैं उनका संक्षिप्त परिचय व कुछ प्रमख उपलब्धियां के बारे में जानकारी देती हूँ।

पंडित राम सरन जी, पुत्र श्री मोहनलाल जी, का जन्म 1 मार्च 1895 में हुआ था। पंडित राम सरन एडवोकेट/पंडित राम सरन दास लाहौर के कानूनी और साहित्यिक हलकों में एक प्रमुख व्यक्ति थे। उनकी मृत्यु सितम्बर 12, 1946 में लाहौर में हार्ट अटैक से हुई थी।

मौला बख्श खुस्ता की पुस्तक 'पंजाबी शायरों का तज़करा' के अनुसार पंडित राम सरन जी ने 1918 तक उर्दू और हिंदी में कवितायें लिखना शुरू कर दिया था। वारिस शाह की 'हीर' उन्होंने तीन बार पढ़ने के बाद याद कर ली थी। बाद में उन्होंने अपनी मातृभाषा पंजाबी में लिखना शुरू किया। यह महसूस करने के बाद कि अमृतसर में पंजाबी भाषा का ह्रास हो रहा है, पंडित राम सरन जी ने पंजाबी भाषा को बढ़ावा देने के लिए लाहौर में 'पंजाबी लिटरेरी लीग' की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । वह 'पंजाबी सभा' पंजाब के उपाध्यक्ष भी थे। पंडित राम सरन जी रेडियो द्वारा आयोजित 'कवि दरबारों' में भी भाग लिया लिया करते थे। 7 जून 1944 में प्रकाशित 'द इंडियन लिसनर' के 16–30 जून, 1944 के कार्यक्रमों में इसका उल्लेख है। वह 24 जून, 1944 को लाहौर रेडियो द्वारा आयोजित 'कवि दरबार' में भाग लेने वाले प्रमुख कवियों में से एक थे।

पंडित राम सरन एक प्रसिद्ध लेखक थे, उनकी लिखित कुछ कृतियां नीचे दी गयी हैं –

1. ***श्रीमद भगवद्गीता* (1935)**– पंडित राम सरन जी ने श्रीमद भगवद्गीता का अनुवाद पंजाबी (काव्य) में किया। यह अनुवाद देवनागरी और गुरुमुखी दोनों लिपिओं में है। श्रीमदभगवद् के सभी अध्यायों का यह गुरुमुखी अनुवाद देवनागरी लिपि में है।
2. ***'पंजाब दे गीत'* (1931)**– पंजाबी साहित्य में भी उनका बहुमूल्य योगदान है। पंडित जी ने पंजाबी लोकगीतों का संग्रह 'पंजाब दे गीत' (1931) को लाहौर में शाहमुखी में छपवाया। पंजाबी साहित्य की लगभग सभी पुस्तकों में *'पंजाब दे गीत'* का उल्लेख है। मैं इस पुस्तक को गुरमुखी लिपि में जल्द ही प्रकाशित करवाउंगी ताकि पाठक पंडित राम सरन जी के इन लोकगीतों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकें।
3. ***वैदिक संध्या***– पंडित राम सरन जी ने *'वैदिक संध्या'* का भी सरल हिंदी (काव्य) में अनुवाद किया था।

4. **शरहः बैंत शाह मुहमद**— मौला बख्श कुश्ता की किताब ***'पंजाबी शायरों का तज़करा'*** में ज़िक्र है कि पंडित जी ने शाह मुहमद की बैंतां का विवरण छपवाया।
5. ***सप्तपदी***— पंडित राम सरन जी ने 'सप्तपदी' का भी सरल हिंदी (काव्य) में अनुवाद किया था।
6. **कविताएँ**— पंडित जी की कईं कवितायें *'प्रीत लड़ी'* और *'फुलवारी'* पत्रिकाओं में छपीं थी। कुछ जो मुझे मिली— *'कुरबानी दा आख़री दिन', 'हक़ खलकत भुल गई ऐ'।*
6. **लेख**— पंडित राम सरन जी के लेख *'प्रीत लड़ी'* और *'फुलवारी'* पत्रिकाओं में छपते रहे हैं।

अभी हाल ही में मेरा संपर्क श्री सुभाष शर्मा जी से हुआ जो उस्ताद शायर पंडित बरकत राम 'युमन' जी के पौत्र है और नई दिल्ली के निवासी हैं। श्री सुभाष शर्मा जी ने बताया कि पंडित राम सरन जी, उनके दादा जी, पंडित बरकत राम 'युमन' जी, के काव्य गुरु थे। दोनों में बहुत स्नेह था। दोनों और साथ में दूसरे कवि साथी आजादी के लिए अंग्रेजों के खिलाफ कविताएं पढ़ते थे। उन्होंने कुछ पुरानी यादें व संस्मरण जो मुझे बताये, निम्नलिखित हैं :—

पंजाबी कवि, श्री बरकत राम 'युमन 'जी के पौत्र श्री सुभाष शर्मा जी ने यह भी बताया कि जिस दिन पंडित जी की मृत्यु हुई थी, उस दिन पंडित बरकत राम 'युमन' जी उनके साथ थे। उस दिन बहुत तेज बारिश हो रही थी और उनका अंतिम संस्कार करने में बहुत कठिनाई हुई थी।

श्री सुभाष शर्मा ने अपनी बुआ जी, श्रीमती प्रकाश वती जी (श्री बरकत राम 'युमान' की पुत्री) से पंडित राम सरन जी के बारे में बात की। श्रीमती प्रकाश वती बटाला शहर में रहने वाली एक नब्बे वर्षीय महिला हैं। वह 1947 में 16 साल की थीं। श्रीमती प्रकाश वती जी ने श्री सुभाष जी को बताया कि उन्होंने पंडित राम सरन एडवोकेट जी को लाहौर के ग्वालमंडी मुहल्ले की ऐतिहासिक इमारत 'अमृतधारा' के हॉल में आयोजित कवि दरबारों में कई बार देखा था। श्रीमती प्रकाश वती जी ने आगे बताया की वह एक बहुत विद्वान और देशभक्त व्यक्ति थे। गोरे रंग के थे और चश्मा पहनते थे। वह सिल्क का कुर्ता और हिन्दू विद्वानों की तरह धोती पहनते थे।

स्वर्गीय पंडित राम सरन एडवोकेट जी की नवासी
डा. विभा शर्मा *सह–प्राध्यापक (सेवानिवृत)*
एम.सी.एम. डी.ए.वी कॉलेज, सैक्टर 36, चण्डीगढ
email - vibhasharma9@gmail-com

अगर किसी को पंडित राम सरन दास/पंडित राम सरन एडवोकेट (मार्च 1895 – सितंबर 1946, लाहौर, अन–डिवाइडेड इंडिया) के बारे में कुछ पता है तो कृपया दिए गए ईमेल पर मुझसे संपर्क करें। धन्यवाद

पंडित राम सरन दास– *कुछ संस्मरण एवं परिचय*

पंडित राम सरन, एक जाने–माने वकील थे। पंडित जी ने लाहौर से वकालत की डिग्री हासिल की और वहीं हाईकोर्ट में वकालत किया करते थे। लाहौर के अनारकली बाजार में उनकी हवेली थी। पंडित राम सरन जी, पुत्र श्री मोहनलाल जी, का जन्म 1 मार्च 1895 में हुआ था। उनकी मृत्यु सितम्बर 12, 1946 में लाहौर में हार्ट अटैक से हुई थी। हमने सुना है कि उन्होंने वहां कुछ वकीलों और अन्य लोगों के साथ मिल कर 'गैतीं फौज' का गठन किया था, जो स्वतंत्रता संग्राम में छिपे तौर पर भाग लेती थी। पंडित राम सरन दास जी ''लाहौर कांस्पीरेसी केस'' में भी वकील थे इसका उल्लेख प्रसिद्ध पंजाबी उपन्यासकार नानक सिंह ने अपने उपन्यास 'इक मियां दो तलवारें' के पृष्ठ 189 पर किया है। इसमें लिखा है कि ''....कानूनी सदस्य सर अली इमाम से मिलकर अभियुक्तों के प्रमुख वकील पंडित राम सरन दास ने कानूनी पक्ष से उसे सहमत कर लिया कि सचमुच मृत्यु–दंड देने वाले जजों ने पक्षपात और कट्टरता से काम लिया। इस भागदौड़ का इतना परिणाम अवश्य हुआ कि अंत में वाइसराय ने इसके उपर दोबारा दृष्टिपात करना स्वीकार कर लिया, और कहा कि जब तक यह कार्य पूरा न हो, दोषिओं को फाँसी न दी जाए''।

उनकी बड़ी बेटी दिवंगत सावित्री देवी की पुत्री, वीना शर्मा ने बताया कि पंडित राम सरन जी शहीद भगतसिंह केस में भी एक वकील थे। उनकी माता जी पंडित जी के पास लाहौर घर पर आतीं थीं। शहीद भगतसिंह जी की शहादत से कुछ दिन पहले पंडित जी उनकी माता (सावित्री देवी) को शहीद भगत सिंह जी से मिलवाने जेल लेकर गए थे। उस समय वह (सावित्री देवी) बहुत छोटी थी और उन्हें पंडित जी ने सफेद परिधान पहनाए हुए थे। पंडित जी ने सावित्री जी को शहीद भगत सिंह जी को प्रणाम कर उन से आशीर्वाद लेने को कहा। उन्होंने आगे कहा की जब शहीद भगतसिंह जी को फाँसी दी गयी थी उस समय उनके माता–पिता पंडित जी के घर में ही थे।

परिवार– पंडित जी के पूर्वज कश्मीरी पंडित थे और कश्मीर में लकड़ी–लट्ठों का व्यापार करते थे। मुगलों के शासन में उन का परिवार कश्मीर से गुरुओं की संगत के साथ बाबा बकाला आ गया था। वहां से परिवार के लोग लाहौर और अमृतसर में बस गए। पंडित जी के छोटे भाई स्वर्गीय श्री बिशनदास शर्मा जी जालंधर में रहते थे और वहां के जाने–माने शिक्षाविद् थे।

पंडित जी के दो बेटे (वेद प्रकाश और ओम प्रकाश) और चार बेटियां (सावित्री देवी, कृष्णा, स्वराज और शारदा) थीं, जो अब इस नश्वर संसार में नहीं हैं। उनके बेटे वेद प्रकाश ने भारतीय सेना की अर्टिलरी में और ओम प्रकाश दिल्ली में निजी क्षेत्र में कार्यरत थे। बेटियों में सावित्री देवी अमृतसर और कृष्णा, स्वराज और शारदा चंडीगढ़ में रहती थी।

पंडित राम सरन दास जी के परिवार में अब उनके पोते, पड़पोते, नवासे, और नवासियाँ हैं। हम दोनों – नीरा शर्मा (दिवंगत कृष्णा की बेटी) और विभा शर्मा (दिवंगत स्वराज की बेटी) उनकी नवासियाँ हैं। हमने सोचा कि उनका यह अनुवाद फिर से प्रकाशित किया जाए ताकि लोगों को उनकी इस उत्कृष्ट और लोकप्रिय कृति को पढ़ने का अवसर मिले। पंडित जी के गीता के इस दुर्लभ अनुवाद की एक प्रति उनकी पुत्री श्रीमती कृष्णा के पास उपलब्ध थी जो अब उनकी पुत्री श्रीमती नीरा शर्मा के पास है।

पंडित राम सरन दास जी के जीवन से जुड़ी कुछ घटनाएं–

हमने अपनी–अपनी माता जी व कुछ अन्य लोगो से पंडित राम सरन दास जी के जीवन से जुड़ी कुछ घटनाएं सुनी हैं जिसका हम वर्णन कर रही हैं।

श्रीमती वीना जी ने बताया की पंडित जी ने लाला लाजपत राय जी के साथ, साइमन कमीशन के विरुद, प्रदर्शन में भाग लिया था। जिसके लिए उन्हें दो अन्य विद्यार्थिओं के साथ, एक सत्र के लिए कॉलेज से निलंबित किया गया था। वह लाहौर के जत्थे में शामिल हो जलिआँवाला बाग के प्रदर्शन में भी शामिल थे। हत्याकाण्ड से कुछ समय ही पहले वह लोग लंगर के लिए निकले थे, और वहीँ उन्हें हत्याकाण्ड का पता चला।

श्रीमती वीना जी को उनकी माता सावित्री देवी जी ने यह भी बताया कि पंडित राम सरन जी के पास एक दिन सुबह–सुबह एक व्यक्ति 'खान चाचा' उनके घर आये और कहा 'काम हो गया'। पहले तो सबके पूछने पर पंडित जी ने कुछ नहीं बताया, बाद में पता चला कि 'खान चाचा' 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस' के काबुल पहुंचने का समाचार दे रहे थे।

श्रीमती वीना जी ने बताया की उनकी माता जी ने 'गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर जी' को श्रीमद भगवद्गीता के इस अनुवाद का कुछ भाग गा कर सुनाया था जब गुरुदेव लाहौर आये थे और लाला धनी राम भल्ला जी की कोठी में ठहरे थे। गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर जी को यह अनुवाद बहुत पसंद आया था।

पंडित राम सरन दास जी की दूसरी पुत्री श्रीमती कृष्णाजी की पुत्री, श्रीमती नीरा शर्मा का कहना है कि जब उनकी माता जी (श्रीमती कृष्णा) छोटी थीं तब उनकी मुलाकात शहीद भगतसिंह जी की माता जी से लाहौर स्थित उनके घर में हुई थी। पंडित जी ने उनका परिचय कराया था और उन्होंने भगत सिंह की माता जी को साष्टांग प्रणाम किया था।

मेरी (विभा शर्मा) की माता जी स्वर्गीय स्वराज शर्मा ने मुझे बताया था कि मेरे नाना जी (दिवंगत राम सरन दास) ने उनका (मेरी मां) नाम आंदोलन से जुड़ी 'स्वराज पार्टी' के नाम पर रखा था। उन्होंने यह भी कहा कि वे क्रांतिकारी कविताएँ लिखते थे और यह कविताएँ पंडित जी अपने वास्तविक नाम से नहीं बल्कि अपनाए हुए दूसरे कल्पित नाम से लिखते थे।

पंडित राम सरन दास जी की 1935 में प्रकाशित गीता का प्रथम पृष्ठ और विभिन्न महापुरुषों के सरल भाषा में अनुवाद की चर्चा हमें डॉ. जवाहर लाल गैंदर जी (जो पंडित जी की बेटी सावित्री देवी के ज्येष्ठ दामाद हैं) ने दी है। वह रुड़की में रहते थे। इसलिए हम उनके आभारी हैं। उनके पास पंडित जी की अन्य प्रकाशित पुस्तकें भी थी।

मैं अपने जीवन साथी श्री अश्वनी कुमार तुक्नायत जी का भी हार्दिक धन्यवाद करती हूँ जिनके निरंतर समर्थन व प्रेरणा के कारण ही यह प्रकाशन सम्भव हुआ।

पंडित जी की इस कृति को इस सूंदर स्वरुप में लाने के लिए हम 'अरुण पब्लिशिंग हाउस', चंडीगढ़ के स्वर्गीय नलिन शर्मा जी और श्री अनिल शर्मा जी का भी हार्दिक धन्यवाद करते हैं। उनके सहयोग के बिना यह संभव नहीं था।

हम दोनों नीरा शर्मा और विभा शर्मा आशा करतीं हैं कि जो कोई भी भगवद्‌गीता के इस अनुवाद को पढ़ेगा वह गीता के सार को समझ, अपने जीवन में अवश्य ही लागू कर, निस्संदेह प्रगति करेगा।

स्वर्गीय पंडित राम सरन एडवोकेट जी की नवासियाँ

डा. नीरा शर्मा
प्रधानाचार्य
डी.ए.वी. स्कूल, लॉरेन्स रोड, अमृतसर
forneera@gmail.com

डा. विभा शर्मा
सह–प्राध्यापक
एम.सी.एम. डी.ए.वी कॉलेज, सैक्टर 36, चण्डीगढ
vibhasharma9@gmail.com

अनुक्रमणिका

पहला अध्याय : अर्जुन विशाद योग

1

धृतराष्ट्र उवाच

धर्म खेत कुरुक्षेत्र आके
जुड़ के युद्ध दा रंग रचा के
कौरव पांडव राज दुलारे
की करदे दस्स संजय प्यारे।

2

संजय उवाच

दूर्योधन ने जद राजा जी
पांडू सैना सजदी वेखी
द्रोण गुरू दी शरणी आया
आके मुख थों वचन सुनाया।

3

गुरु देव सैनां वल वेखो
पांडू पुत्रां दा दल वेखो
धृष्टद्युमन शिश दी चतुराई,
व्यूह रचना उस खूब रचाई।

4

भीम, अर्जुन जहे शानां वाले
योद्धे तीर कमानां वाले
महारथी 'युयुधान' नूं वेखो
द्रुपद, विराट दी शान नूं वेखो।

5

'धृष्टकेत', 'चिकतान' नूं वेखो
'काशी राज' बलवान नूं वेखो
'पुरूजित', 'कुन्तीभोज' नूं वेखो
'शिवी–वीर दे ओज नूं वेखो।

6

युद्धामन्यु, रणधीर नूं वेखो
उत्तमौजा बीर नूं वेखो
अभिमन्यु ते द्रौपदी जाए
महारथी सब रण विच आए।

7

साडे वल जो योद्धे सूरे
नाम सुनावां पूरे पूरे
जो सैना दे नायक मेरे
वर्णन करां मैं सन्मुख तेरे।

8

आप तुसी भीष्म ते कर्ण
कृपाचार्य बलवान विकर्ण
अश्वत्थामा वीर कहावे
भूरी शरवा तेज बखावे।

9

होर कई योद्धे बलकारी
कई तरां दे शसतर धारी
मेरी खातर लड़न नूं आए
जानां सदके करन नूं आए।

10

सैना भीष्म रक्षक जिस दा
उस दा बल पूरा नहीं दिसदा
पांडू सैना भीम संभाली
ओह दिसदी बहुते बल वाली।

11

थांओं थांई हुण हट जाओ
मोरचयां ते सब डट जाओ
रस्ते रोक जान ते लड़ना
भीष्म जी दी रक्षा करना।

12

भीष्म जी तद संख बजाया
खुशी विच दुर्योधन आया
उच्ची वाज संख इयों वजदा
जियों बेले विच्च शींह पिआ गजदा।

13

जंगी वाजे वजदे सारे
तुरम तूतियां ढोल नगारे
संखां ऐसा शोर मचाया
धरती ते आकाश हिलाया।

14

चिट्टे घोड़े जुत्ते अग्गे
जंगी रथ किहा सोहणा लग्गे
रथ विच अर्जुन कृष्ण सुहांदे
दिव्य अलौकिक संख बजांदे।

15

'पंचजन्य' श्री कृष्ण बजाया
'देवदत्त' अर्जुन गरजाया
'भीम' भयंकर कर्म कमावे
'पौंडर' नामी संख वजावे।

16

वीर युधिष्ठिर कुन्ती जाया
संख 'अनंत विजय' गरजाया
संख 'नकुल' सहदेव वजांदे
जो 'सुघोख' 'मणी पुष्प' कहांदे।

17

काशी राजा धनुष घमंडी
महारथी रणवीर 'शिखंडी'
'धृष्टद्युमन' ते 'विराट' एह सारे
सात्यकी जो न रण विच हारे।

18

राजा 'द्रुपद' ते 'द्रौपदी' जाए
'अभिमन्यु' महाबाहू कहाये
सारे योद्धे वीर जवान
आपो अपने संख वजान।

19

संखां ऐसा शोर मचाया
धरती ते आकाश गुंजाया
नाद भयंकर सुन संखादे
कौरवां दे हिरदे घबरांदे।

20

कौरव रण विचकार खड़े सन
युद्ध लई तय्यार खड़े सन
अर्जुन जिसदा कपी निशान
पकड़ लिया उस तीर कमान।

21

अर्जुनोवाच

बोलिया अर्जुन हे गिरधारी!
हे माधव! हे कृष्ण मुरारी!
रथ नूं हे भगवान चलाओ
दो सैना विचकार लै जाओ।

22

वेख लवां मैं केहड़े केहड़े
रण विच नाल लड़नगे मेरे
कौन सूरमें मावां जाए
युद्ध कामना कर के आए।

23

वेखां कौन कौन बलवान
केहड़े योद्धे सूर जवान
दुर्योधन दा पख करनगे
उस मूरख लई लड़न मरनगे।

24

संजय उवाच

जद अर्जुन ने हे राजा जी
एह गल ऋषिकेष नूं आखी
रथ नूं तद् भगवान चलांदे
दो सैनां विचकार लै जांदे।

25

भीष्म द्रोण होर कई राजे
दिसदे सैना विच्च विराजे

कृष्ण कहे – हे पारथ प्यारे,
वेख खड़े ने कौरव सारे।

26

अर्जुन ने जद नज़र उठाई
वेखे बन्धू, मित्तर, भाई
सौहरे, चाचे, मामे वेखे
पुत्तर, पिता, पितामे वेखे।

27

गुरू संबन्धी पोते वेखे
विच मैदान खलोते वेखे
मोह वस हो अर्जुन घबराया
मुख थों फिर एह वचन सुनाया।

28

अर्जुनोवाच

सज्जन युद्ध करन सब आए
वेख वेख मेरा मन घबराए।

29

हथ पैर मेरे किरदे जान
मूंह पिया सुकदा हे भगवान
देह कंबदी हे कृष्ण मुरारी
उट्ठन लूं कंडे गिरधारी।

30

गांडिव धनुष खिसकदा जावे
तपे शरीर ते मन घबरावे
हे भगवान की दस्सां तैनूं
रण विच्च ठैहरना मुशकिल मैनूं।

31

हे मधुसूदन कृष्ण मुरारे
पुट्ठे लच्छन देखां सारे
रण विच सज्जन मार मुकावां
इस थों की वडयाई पावां।

32

सज्जन मार जेत न चाहवां
क्यों सुख भोगां राज कमावां

ऐसा राज भोग की करना
इस जीवन थों चंगा मरना।

33

जिन्हां खातर राज मैं चाहवां
राज भोग सुख ताज मैं चाहवां
सो सब आए युद्ध करन नूं
त्याग प्राण धन खड़े मरन नूं।

34

पुत्तर, पोते, पिता, पितामे
सौहरे, साले, समधी, मामे,
गुरू, मित्र, चाचे ते ताए
सारे सज्जन रण विच आए।

35

त्रैलोकी दा राज धिक्कारां
मैं पर सज्जन कदे न मारां
तुच्छ चीज पृथ्वी दा राज
हे मधुसूदन, हे महाराज

भावें रण विच मैं मर जावां
सज्जन मार राज न चाहवां।

36

जे मारां मैं कौरवां तांई
इस विच मैंनू सुख ते नाहीं
भावें चुक लई अत्त भरावां
मार इन्हां क्यों पाप कमावां।

37

धृतराष्ट्र दे बेटे जेहड़े
हे माधो, सब वीर ने मेरे
कीकण माराँ भाईयाँ तांई
मार इन्हाँ सुख मिलना नाहीं।

38

पापी सो जो कुल नूँ मारे
मित्रां नाल जो वैर गुजारे
लालच विच बुद्धि भरमाई
कौरवां नूं एह समझ न आई।

39

कुल हत्या दे जो जो औगुण
मै तां सारे जाणां भगवन
फिर मैं पाप कमावां क्यों
कुल घातक सदवावां क्यों।

40

कुल हत्या थों एह फल पाणा
नाश होवे कुल धर्म पुराणा
जद कुल धर्म नाश हो जावे
बेधर्मी तद ज़ोर वखावे।

41

बेधर्मी तद लोकी होण
इस्त्रीआं तद बिगड़ खलोण
नारीआं बिगड़ जान जद भगवन
वर्णहीन बालक तद जम्मण।

42

वर्णहीन जिस कुल विच आवे
सारे कुल नूं नरक पहुंचावे

तरपण पिंड होवण सब नास
पितर करन नरकां विच वास।

43

वर्णहीन जिस कारण जम्मन
ओह सब दोष पाप मधुसूदन
कुलघातक दी कुल विच आंदे
सब कुल धर्म नाश हो जांदे।

44

कुल धर्मा नूं जो छड्ड जावण
ओह तां सदा नरक नूं पावण
हे भगवान देवकी जाया
साडे सुणन विच्च एह आया।

45

सज्जन मार मुकावण आए?
ऐडा पाप कमावण आए?
राज सुखां दे लालच कारण
लग्गा सां मैं सज्जन मारन।

46

बेहथियारे नूं जे भगवन
कौरव मैनूं रण विच मारन
इस थों चंगा होर की लोड़ां
ऐसी मौत कदे न मोड़ां।

संजय उवाच

इतने वाक बोल के अर्जुन
बैठ गया रथ विच हे राजन!
मोह बस हो पारथ घबराये
हथों धनुष खिसकदा जावे।

इति
श्रीमदभगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा अर्जुन विशाद योग
नामक पहला अध्याय समाप्त होया।

दूजा अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा सांख योग

1

संजय उवाच

मोह विच फसिया व्याकुल होया
अर्जुन नैण नीर भर रोया
तद श्री मधुसूदन फरमाया
अर्जुन नूं एह वचन सुनाया।

2

श्री भगवान उवाच

एह मोह अर्जुन किधरों आया
औखे समय तूं मन भरमाया
भले पुरुष त्यागन मोह तांई
आर्य नूं मोह फवदा नाहीं
जे मोह करे स्वर्ग न जावें
पारथ यश कीर्ती न पावें।

3

त्याग कायरता गल कर चज्ज दी
कायरता तैनूं नहीं सज्जदी
छड चन्दरी कमज़ोरी दिल दी
उठ परंतप उठ तूं जलदी।

4

अजुन उवाच

भीष्म द्रोण साहमणे मेरे

पूजा करन योग ने जेहड़े
कीकण एधर तीर चलावां
किसदे नाल मैं युद्ध रचावां।

5

महां भाव गुरू मैं न मारां
भिक्षा मंग मंग उमर गुज़ारां
रण विच मार मैं पूजण योगां
लहू विच लिवड़े भोग न भोगां।

6

जेत कौरवां दी यां मेरी
पता नहीं गल चंगी केहड़ी
मार जिन्हाँ की जियूं के लैना
खड़ी साहमणे कौरव सेना।

7

मोह बस हो दिल डोले मेरा
नां कुझ समझां धर्म है केहड़ा
सोच समझ शुभ मारग लाओ
शिष्य नूं धर्म उपदेश सुनाओ।

8

जे धरती दा राज मैं पांवां
देवतयां ते हुकम चलांवां
तांवी सुख मैं पाणां नाहीं
शोक दिले दा जाणां नांहीं
शोक मेरा अत्यंत न्यारा
इन्द्रयां नूं सुकावण हारा।

9

संजय उवाच

अर्जुन एह गल करके सारी
बोलिया हे श्री कृष्ण मुरारी
मैं नहीं लड़ना रण विच जाके
चुप साध लई अरज सुणा के।

10

व्याकुल दुखी होया जद अर्जुन

दो सैनां विचकार हे राजन
मुसकाए श्री कृष्ण मुरारी
फिर मुख थों बोले गिरधारी।

11

श्री भगवानोवाच

सोचण योग ही जो गल्ल नाहीं
चिंता सोच करें उस तांईं
बे समझां वांगूं फड़ मारें
सुण अर्जुन जे तत्त विचारें
जीवण यां मर जावण प्राणी
तिस दा शोक न करदे ज्ञानी।

12

मैं, तूं, ते एह राजे अर्जुन
पहलों एत्थे कदी नहीं सन
याँ एह सब अग्गों नहीं आणे
ज्ञानी एह गल्ल मिथ्या जाणे।

13

बालक जिवें जवान हो जावे
देह नूं फेर बुढ़ापा आवे
तिवें फेर सब प्राणी मरदे
ज्ञानी तिसदा शोक न करदे।

14

मात्रा–इन्द्रीयाँ जद अर्जुन
शब्द आदि विषयां नाल छोहण
तद फिर ओस स्पर्श थों वणदे
सरदी गरमी सुख दुख तन दे
एह सब नाशवान कहलावण
पल विच आवण पल विच जावण
समझ तत्त दी गल्ल तूं अर्जुन
सुख दुख सारे झल्ल तूं अर्जुन।

15

सुख दुख विच न पीड़ पछाणें

सुख दुख नूं इक सम जो जाणें
सो नर धीरजवान कहावे
सो नर मोक्ष मारग वल जावे।

16

जो नहीं उस कदी हो न जाणा
जो है उस ने नाश न पाणा
एह गल्ल तत्व ज्ञानी जानण
सत्य असत्य दा भेद पछानण।

17

व्याप रिहा विच सर्व जहानीं
तिस नूं तू अविनाशी जाणीं
नाश करे अविनाशी ताईं
किसे वी ऐसी समरथ नाँही।

18

आत्मा नाश रहित सदवाए
नित्त रहे थापया ना जाए
नाशवान एह देह शरीर
ताँ उठ लड़ हे भारत वीर।

19

जो एहनूँ मारन वाला जानण
या मर जावन वाला मानण
दोंवें ने अज्ञानी भारे
कदी आत्मा मरे ना मारे।

20

न एह जन्मे न एह मरे
न एह जनम मरन दुख जरे
सत्य सनातन सदा ही रैहंदा
नित्य अजन्मा जन्म न लैंदा
जेकर मार दईये देह ताईं
तद वी आत्मा मरदा नाहीं।

21

जो इस नूं अविनाशी जाणे

निर्विकार ते अजर पछाणे
सो नर दस हे पारथ प्यारे
कीकण आप मरे यां मारे।

22

फटे पुराणे वसतर लांहदे
नवें जिवें लोकी फिर पांदे
तिवं आत्मा देह छड जावे
चोला बदल नवीं देह पावे।

23

शसतर मारियां मरदा नाहीं
आत्मा अग्ग विच सड़दा नाहीं
गलदा नहीं पानी विच पैके
सुकदा नहीं वायु विच रहके।

24

न एह सड़े न कट्टिया जावे
न एह गलन सुक्कन विच आवे
पारथ! आत्मा नित्य कहांदा
सब जूनां विच आंदा जांदा।

25

आत्मा थिर इकथांवां अर्जुन
आत्मा है एह अचल सनातन
इन्द्रीयां थों न जाणया जावे
मन दे चिंतन विच न आवे
न एह आत्मा कदे बदलदा
दस खां शोक करें किस गल्ल दा।

26

जे तेरे मनण विच आवे
नित्त ए जन्में ते मर जावे
तद वी हे पारथ प्रिय मेरे
करना शोक योग नहीं तेरे।

27

जो जम्मिया आड़क मर जाणा

जो मरिया फिर जन्म उस पाणां
जम्मण मरन कदे नहीं टलना
ऐसी गल्ल दा शोक की करना।

28

मरियां बाद जनम थों पहलों
रहे अव्यक्त–सदा बिन शकलों
विचली हालत व्यक्त कहावे
आत्मा शकल बने देह पावे
एह गल्ल जाण शोक न कर तूं
अर्जुन धर्मयुद्ध उठ लड़ तूं।

29

असल तत्त नूं कदे न पेखन
आत्मा नूं कई अचरज वेखन
कहण सुणन अचरज कई जिस नूं
सुण के वी समझण न इस नूं।

30

हर देह विच जो आत्मा वासी
हे अर्जुन ओह है अविनाशी
भूत पराणी नाम जिन्हां दा
क्यों करना एं शोक तिन्हां दा।

31

जे तूं अपना धर्म विचारें
क्यों कंबें क्यों हौसला हारें
धर्म युद्ध विच तेज विखावें
क्षत्री हो के होर की चाहवें।

32

भगवान क्षत्री कहलावण
धर्म युद्ध विच जो कोई आवण
बिन मंगे हे पारथ प्यारे
तैनूं खुल गए स्वर्ग द्वारे।

33

धर्म युद्ध विच लड़न थों नस्सें

जे हुण युद्ध करन थों नस्से
सब बडियाई धर्म गवांवें
हे पारथ! पापी सदवावें।

34

लोक करन गे निंदया तेरी
निंदया नालों मौत चंगेरी
पारथ धर्म युद्ध विच लड़ तूँ
यश होवेगा हिम्मत कर तूँ।

35

सूरवीर आखणगे सारे
रण थों नस्सिया डरदे मारे
जो सब अज तैनूं वडयावण
ओहो कायर फेर बुलावण।

36

जो ने वैरी दुश्मण तेरे
निंदसण तैनू पारथ मेरे
बुरा बोल दिल साड़न तेरा
इस थों होर की दुख बधेरा।

37

जे तूं मरें स्वर्गी जांवे
जे जित्ते ते राज कमांवें
कुन्ती नन्दन उठ लड़न नूं
उठ पारथ हुण युद्ध करन नूं।

38

जेत हार लाभ ते हानी
सुख दुख सब इक सम तूं जाणी
ऐसा जाण जे युद्ध लड़ेंगा
तां तूं कोई न पाप करेंगा।

39

एह नें सांख योग दीयाँ राहवाँ
हुण सुण कर्मयोग समझावाँ
कर्मयोग विच जे चित्त लावें

कर्म बधनां थों छुट जावें।

40

छोहया योग न निष्फल जावे
कदीं न एह उलटा फल लियावे
योग दा थोड़ा ही अभ्यास
बड़े बड़े भय करदा ऐ नास।

41

हे अर्जुन! जो नर ने योगी
सभनाँ दी है इक रस बुद्धि
डाँवाँडोल ने चित्त जिन्हां दे
अड़्डो अड़्डरे राह तिन्हां दे।

42

वेद नूं न समझण अज्ञानी
आखण फुलां भरी ए बाणी
एह समझावण खलकत ताईं
कर्मों परे होर कुझ नाहीं।

43

काम विच्च ओह लीन ने प्राणी
स्वर्ग दे सुफने लैण अज्ञानी
मूरख सब कुझ कर्म नूँ जानण
कर्मां दा फल जन्म नूं जानण
भोग पदारथ नूं आह तरसण
कई कई कर्म करो एह दस्सण।

44

भोग पदारथ विच फस जांदे
पारथ! तद ओह अकल गवांदे
बुद्धी तिन्हां दी थां थां वगदी
विच समाधी कदे न लगदी।

45

तिन गुण वेदां विच कहे जांदे
सत, रज, तम गुण नाम तिन्हांदे
तिन्नां गुणां थों दूर हो अर्जुन

आत्मा विच भरपूर हो अर्जुन
सुख ते दुख विच न भरमावीं
द्वंद्वां विच तूं मन न लावीं
मेर तेर सब मनों भुला तूं
आत्मा दे विच ध्यान लगा तूं।

46

जिवें अर्जुन इक छोटा ए सरवर
ते इक जल दा भरिया सागर
प्यासे दोहां थों प्यास बुझावण
पर सर छड सागर न जावण
तिवें योगी जद योग कमांदे
पार ब्रह्म विच लीन हो जांदे
योग सरोवर दा जल चख दे
वेद ज्ञान दी लोड़ न रख दे।

47

धर्म जाण कर्मां नूं कर तूं
फल भोगण वल ध्यान न धर तूं
यां छड बठें कर्मां तांई
एहवी तैनूं वाजब नाही।

48

कर्मयोग विच चित्त नूं ला दे
फल दी इच्छिया मनों भुला दे
हार जेत विच चित्त न धर तूं
इक सम होके कर्म नूं कर तूं
सुख दुख इक सम हो जाणां
इस दा नाम है योग कमाणां।

49

बिन फल इच्छया कर्म कमावे
बुद्धि योग सोई नर पावे
बुद्धि योग नालों हे अर्जुन
कर्म नूं ज्ञानी नीवां जानण
बुद्धि योग दी शरणी आ तूं

योगी बन के योग कमा तूं
जो कर्मां दे फल नूं चाहंदे
हे पारथ सो दीन कहांदे।

50

जो नर बुद्धि योग कमावे
ओह सब पाप पुन्य छड जावे
योग नाल चित्त जोड़ तूं अर्जुन
कर्म फलों मन मोड़ तूं अर्जुन
कर के कर्म फलां नूं चाहणां
इस थों चंगा योग कमाणां।

51

ज्ञानवान जद कर्म कमावण
कर्म करन पर फल न चाहवण
जन्म मरन थों ओह छुट जांदे
तद ओह परमानंद नूं पांदे।

52

हे अर्जुन जद बुद्धि तेरी
लंघे मोह जिल्हण इक वेरी
तद सुणीयां अनसुणीयां त्यागें
बणें विवेकी सुता जागें।

53

वेद ज्ञान दा भेत न पायों
कूड़ीयां गल्लां सुण घबरांयों
जद बुद्धि तेरी थिरता पावे
जद मन इक पासे लग जावे
तद तू ब्रह्म नाल जुड़ जावें
तद तूं योग तत नूं पावें।

54

अर्जुन उवाच

निश्चल बुद्धि वाले योगी
जो थिर रैंहंदे विच समाधी

ऐसे नरां दे जो जो लच्छन
खोल के समझाओ हे भगवन
चित्त जिन्हां दे मूल न डोलण
कीकण बैठण टरन ते बोलण।

55

भगवानोवाच

मन दीआं वासनां जो छड जावे
आत्मा विच जो ध्यान लगावे
आत्मा विच संतोष जो पांदा
सो नर थिर बुद्धि सदवांदा।

56

दुख विच जो घबरावे नांही
सुख विच मन भरमावे नांहीं
मोह, भय, क्रोध नूं जो छड जांदा
सो नर थिर बुद्धि सदवादां।

57

हर हालत विच इक सम रैंहदे
चंगा मंदा सब कुझ सैंहदे
शादी विच खुश होंदे नांहीं
भीड़ पवे ते रोंदे नाहीं
बिन मोह ममता चित्त जिन्हांदे
थिर बुद्धो सोई सदवांदे।

58

जिवें कच्छू सब अंग लुकांदा
तिवें योगी है योग कमांदा
इन्द्रियां नूं वस विच करदा
मन वृत्ति अन्दर वल धरदा
पूरण योगी पूरण ज्ञानी
उसदी बुद्धि तूं थिर जाणी।

59

जती जितेन्द्री मन जित जावण

इन्द्रियां सब रोक बखावण
फेर वी विच्चों चित उन्हां दे
विषय वासनां विच्च भरमांदे
विषय वासना तद वस आवे
जद चित्त ब्रह्म नाल जुड़ जावे।

60

इन्द्रियां जद वेग वखावण
बड़े बड़े ज्ञानी भुल जावण
कर कर यतन जो मन नूं मारन
इन्द्रियां थों ओह वी हारन।

61

इन्द्रियाँ सब वस विच कर तूं
पारथ! ध्यान मेरे वल धर तूं
इन्द्रियां नूं जो जित जांदा
सो नर थिर बुद्धि सदवांदा।

62

विषयां विच जो प्रीत लगांदे
सो प्राणी मोह विच फस जांदे
मोह विच फसियां काम सतावे
कामी नर क्रोधी हो जावे।

63

क्रोध कीतयां लोभ सतांदा
लोभी दा चेता फिर जांदा
तद फिर प्राणी अकल गवावण
अकल गवायां नष्ट हो जावण।

64

राग द्वेष नूं जो तज देंदे
इन्द्रियां नूं वस कर लैंदे
आत्मा दे जो तत्त नूं पांदे
विषयां विच नहीं लगन लगांदे
सेवन कर के विषयां ताईं

ब्रह्मानंद नूं छडदे नाहीं।

65

जद चित्त परम शान्ती पांदा
दुखां दा तद नाश हो जांदा
जो कोई परम शान्ती पावे
उस दी बुद्धि थिर हो जावे।

66

डांवांडोल ने चित्त जिन्हां दे
सो नर बुद्धि अकल गवांदे
हे पारथ! जो अकल गवावण
ध्यान भावना कीकण पावण
ध्यान बिना न शान्ती आवे
अर्जुन सो नर सुख न पावे।

67

शहुदरिया जद ठाठां मारे
लैहरां उट्ठन नदी किनारे
घुम्मण घेर तूफान ने आंदे
उस विच जियों बड़े रूड़ जांदे
तिवें इन्द्रियां मन डोलावण
मन भरमा के अकल गवावण।

68

विशयां विच जो चित्त न धरदे
इन्द्रियाँ नूं वस विच करदे
जो कोई मन नूं नहीं डोलांदे
सो नर थिर बुद्धि सदवांदे।

69

लोकी जिस नूं रात मनावण
कम्म कार छड सब सौं जावण
तद जागे मन जित्तन वाला
उस नूं नज़र पवे उजियाला
जद दिन चड़दा ए जगमांही
रात हनेरी मुनियां ताईं।

70

नदीयां वगण समुन्दर तांई
तांवी सागर डोले नांहीं
थिर बुद्धि सो उपमा पावे
विशयां विच न मन डोलावे
जो विशयां विच मन डोलांदे
सो नर परम गती न पांदे।

71

विशय वासना थों मन मोड़े
खुदी त्याग हंकार नूं तोड़े
मन जित बेपरवाह हो जांदा
सो नर परम गती नूं पांदा।

72

जद कोई इस हालत नूं पावे
ब्रह्म विखे तद लीन हो जावे
ब्रह्म लीन निरमोह हो जांदा
ब्रह्म ज्ञानी ओह सदवांदा
मरन समय एह हालत आवे
तद ओह ज्ञानी स्वर्ग नूं जावे।

इति
श्रीमद् भगवद्‌गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा सांखयोग
नामक दूसरा अध्याय समाप्त होया।

तीजा अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा कर्मयोग

1

अर्जुनोवाच

कर्मां थों जे कृष्ण मुरारी
ज्ञान उत्तम समझो गिरधारी
हे केशव तद एह फरमावो
क्यों फिर घोर कर्म विच पाओ।

2

रली मिली गल तुसां सुणाई
सुण सुण के बुद्धि भरमाई
जिस राह भला मेरा हुण पाओ
कर निश्चय इक मारग लाओ।

3

श्री भगवान उवाच

पहलों आदि विच्च वी अर्जुन
मैं तां दो मारग दस्से सन
ज्ञानी ज्ञान दा रस्ता लोड़न
योगी करमां विच चित्त जोड़न।

4

जो नर कदी न कर्म कमावे
किवें त्यागी ओह सदवावे
छड़ बैहणा सब कर्मां तांई
इस दा नाम त्याग ते नाहीं।

5

कर्म कीतयां बिन हे अर्जुन
प्राणी जी नहीं सकदे इक छण
तिन्न गुण माया दे अखवांदे
बदो बदी ओह कर्म करांदे।

6

कर्म इन्द्रियां नूं जो अर्जुन
जित्तन, कर्म करन थों वरजन
पर विच्चो विच्च चित्त जिन्हां दे
विशय वासना नूं ललचांदे
जो मूरख इयों चित्त भरमावण
दंभी पाखंडी सदवावण।

7

जो विशयां विच्च मन न लावण
इन्द्रियां नूं जो जित जावण
हो निरमोह जो कर्म कमांदे
सो त्यागी उत्तम सदवांदे।

8

वेहले बैहणां समां गवाणां
इस थों चंगा ऐ कर्म कमाणां
कीतियां बाझ नहीं कुझ बणदा
पूरा होवे न धंदा तन दा
नित्त नेम बल मन चित्त धर तूं
अर्जुन नित्त कर्म सब कर तूं।

9

जो कम्म ईश्वर अर्पण नांहीं
बंधन जान तूं अपने तांईं
ईश्वर अर्पण कर्म कमा तूं
फल दी इच्छिया मनों भुला तूं।

10

सृष्टि दी सब खेड रचा के
यज्ञ सहत सृष्टि उपजा के
ब्रह्मा ने एह गल फरमाई
यज्ञ करन विच है बडयाई

कर्म करो मालक दे नां दे
कीतियां सभ्भे फल मिल जांदे
यज्ञ कर्म दा तत्त पछाणों
कामधेनू इस यज्ञ नूं जाणों।

11

यज्ञ कर्म जद लोक कमावण
देवते वी प्रसन्न हो जावण
देवतयां सन्तुष्ट करांवे
तद अर्जुन कल्यान तूं पांवे।

12

देवतयां जो भोग लगांदे
जो कुझ मंगदे सो कुझ पांदे
यज्ञ कीतयां बिना जो खावण
सो नर अर्जुन चोर कहावण।

13

यज्ञों बचिया जो कोई खावे
ओह सब पापां थों छुट जावे
बिन अर्पन जो भोग लगावण
समझो पाप पेट विच पावण।

14

अन्न थों बणदे जीव प्राणी
अन्न उपजे बरसे जद पाणी
बरखा वसदी यज्ञ रचायां
यज्ञ रची दा कर्म कमांयां।

15

ब्रह्म मूल है सब कर्मां दा
अविनाशी जो ब्रह्म कहांदा
सर्वव्यापी घट घट वासी
वसे यज्ञ विच ब्रह्म अविनाशी।

16

इस संसारी चक्कर तांईं
हे अर्जुन! जो समझे नांहीं
जो इस तत्त ते अमल न करदे
विशय वासना विच्च चित्त धरदे

कर्म ब्रह्म दा भेत न पांदे
सो नर बिरथा जन्म गवांदे।

17

नाल आत्मा प्रीत जो लावे
आतम सुख नूं सो नर पावे
अपने विच भरपूर रहे सो
कर्म बंधनों दूर रहे सो।

18

आतम ज्ञानी भक्त जो प्रभ दे
कदी न किसे दा आसरा लभदे
करनां न करनां कर्मां दा
ज्ञानी नूं इक सम हो जाँदा।

19

नेक कर्म नूं सदा करीं तूं
फल वल कदी न ध्यान धरीं तूं
बिन फल इच्छिया कर्म कमांदे
सो नर परम गती नूं पांदे।

20

जनक जहे वी कर्म कमावण
कर्म करेंदे मुक्ति पावन
जगत भलाइयां वल चित्त ला तूं
प्रभ दे नां ते कर्म कमा तूं।

21

जो कम्म भले पुरुष ने करदे
सब लोकी उस राह नूं फड़दे
वड्डे जो जो रीत चलांदे
दुनियांदार मगर लग जांदे।

22

त्रैलोकी विच थोड़ न मैंनूं
कर्म करन दी लोड़ न मैंनूं
सब सृष्टि दा मैं वां सांई
तद वी कर्म त्यागे नाहीं।

23

जे मैं सुण हे पारथ प्यारे
कर्म करन छड देवां सारे
लोकी मेरी रीस करनगे
कर्मां विच न ध्यान धरनगे।

24

जे त्यागां मैं कर्म हे प्यारे
लोकी कर्म त्यागण सारे
कर्मां विच्च कोई मन न लावे
कर्म हीन जग नाश हो जावे
वर्ण मेट जग विच सदवावां
सृष्टि नाशक मैं अखवावां।

25

मूरख फल वल इच्छिया धरदे
जियों फल कारण कर्म नूं करदे
फल इच्छया तिवें त्यागण ज्ञानी
कर्म करन निशकाम ओह प्राणी।

26

ज्ञानवान जो पुरुष कहावे
कदी न ऐसा कर्म कमावे
जिस थों मूरख मन भरमावण
कर्मां थों बेमुख हो जावण
ज्ञानी चित्त मेरे विच लावे
बिन फल इच्छया कर्म कमावे
वेखा वेखी मूरख बंदे
रुझे रैहण कर्म दे धंदे।

27

प्रकृती–माया हे प्यारे!
गुण वस्स कर्म करावे सारे
भुल्ल के ते हंकार विच्च आके
'मैं करदा हां' प्राणी आखे।

28

ज्ञानवान जो गुणां नूं जानण

गुण ते कर्म दा तत्त पछानण
जानण गुणां दे विच गुण वसदे
सो नर बंधन विच नहीं फसदे।

29

मूरख माया मोह विच्च आंदा
कर्म गुणां विच्च ओह फस जांदा
रुझा रैंहदा कर्मां ताईं
असल तत्त नूं समझे नाहीं
ज्ञानी तिस नूं न भरमावे
भरमां विच कदे न पावे।

30

कर्म अर्पण कर मेरे तांई
ध्यान आत्मा दे विच लांई
आशा तज हंकार न कर तूं
फल इच्छिया वल ध्यान न धर तूं
शोक त्याग मन ताप गवा दे
युद्ध करन विच ज़ोर वखा दे।

31

जो नहीं मुझ विच दोष परख दे
मेरे मत विच्च श्रद्धा रख दे
मेरे मारग कदम वधांदे
कर्म बंधनां थों छुट जांदे।

32

जो नहीं मेरे मारग चल दे
दोष फड़न विच्च मेरी गल दे
सो मूरख मुझ नूं नहीं पांदे
ज्ञान हीन सो नाश हो जांदे।

33

पाप पुन्य पिछले जन्मां दे
सब दी प्रकृति बण जांदे
प्रकृती कारण हे प्यारे
ज्ञानी कर्म कमावण सारे
दुनियाँ विच मूरख ते ज्ञानी

प्रकृती वस ने सब प्राणी
रोक पायां कम चलना नाहीं
कर्मों किसे वी टलना नांहीं।

34

राग, द्वेश, जो मन भरमावण
इन्द्रियाँ दे विशय कहावन
राग द्वेश दे वस न आंवीं
हे पारथ मन न भरमांवीं
एह अत्यन्त नीच हत्यारे
प्रभ दे राह थें रोकण हारे।

35

धर्म अपने दा तत्त पछाणीं
सब धर्मा थों उत्तम जाणीं
अपने धर्म ते सीस कटाणा
इस थों वध कल्यान की चाहणा
नेम धर्म जो दूसरयां दा
ओह मारग फड़याँ भय आंदा।

36

अर्जुनोवाच

जीव पाप करनाँ नहीं चाँहदे
तद वी विशयाँ विच्च फस जाँदे
हे माधो ओह कौण कहावे
बदो बदी जो पाप करावे।

37

श्री भगवान उवाच

कृष्ण मुरारी कहे हे अर्जुन
काम, क्रोध सब पाप करावन
काम क्रोध वैरी हत्यारे
रजगुण विच्चों उपजन सारे।

38

धूएं विच्च अग्ग जियों लुक जावे
मल दरपण दा तेज छुपावे
गर्भ जेवर विच्च नज़र न आंदे

काम क्रोध तिवें ज्ञान लुकांदे।

39

पारथ कामनां ज्ञान नूं कज्जदी
बलदी अग्ग वाँगू नहीं रज्जदी
बड़ी कामनां एह बलकारी
ब्रह्म ज्ञान दी वैरन भारी।

40

कामना दा है कौण बसेरा
बुद्धि इन्द्रियां मन तेरा
बुद्धि इन्द्रियाँ मन कारन
कामनां ज्ञान लुकावे अर्जुन।

41

कामना सदा कुमारग पावे
ज्ञान अते विज्ञान भुलावे
इन्द्रियां सब वस्स विच्च कर तूं
फिर इस पापण दा घुट भर तूं।

42

जे अर्जुन तूं तत्त पछाने
देह थों सूक्षम इन्द्रियाँ ने
इन्द्रियाँ थों मन सूक्षम है
मन थों बुद्धि अग्गों ब्रह्म है।

43

बुद्धियों परे ब्रह्म नूं जाणीं
सब थों सूक्षम ब्रह्म पछाणीं
पारथ आत्मा नूं थिर कर के
पारब्रह्म विच्च ध्यान नूं धर के
कामनां रूपी शत्रू मारीं
इस पापन नूं जड़ों उखाड़ीं।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा कर्मयोग
नामक तीजा अध्याय समाप्त होया।

चौथा अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा ज्ञान विभाग योग

1

श्री भगवान उवाच

नाश रहित एह योग दा रस्ता
मैं सी वैवस्वन नूं दसया
वैवस्वन थों मनु ने पाया
उस इक्षवाकू नूं समझाया।

2

इक दूजे थों एहनीं रांहीं
योग पहुंचाया ऋषियाँ तांईं
फिर जद बहुता समां विहाया
लोकां योग मनों विसराया।

3

पारथ योग ओह सब थों आला
उत्तम गूढ़ीयां रमज़ां वाला
तैनूं खोल सुणावां सारा
मित्तर हैं ते भक्त प्यारा।

4

अर्जुनोवाच

आप तां हुण सृष्टि विच्च आए
वैवस्वन नूं समे विहाए
कीकण जाणां जो फरमाया
योग वैवस्वन नूं समझाया।

5

श्री भगवान उवाच

इस सृष्टि विच्च होए घनेरे
कई जनम तेरे ते मेरे
मैं जाणां सब जनमां तांई
तूं इस तत्त नूं समझें नांहीं।

6

हे अर्जुन मैं अजर कहांवां
अविनाशी ईश्वर सदवांवां

सब त्रैलोकी माया मेरी
सब सृष्टि ते छाया मेरी
तद वी मैं माया ते छाके
जनम लवां सृष्टि विच्च आके।

7

धर्म लोप जद होण ते आवे
नेकी घटे पाप वध जावे
दुनियां धर्म हीन जद पांवां
तद मैं आप जनम लै आवां।

8

साधूआं दी मैं रक्षा कारन
दुष्ट पापीयां नूं मैं मारन
युग युग विच्च हे अर्जुन आंवां
मुड़ मुड़ धर्म दा झंडा लांवां।

9

उंज तां जनम कर्म एह दिसदा
पर डूंगा इक मरम है इसदा
जो कोई ऐस मरम नूं पावे
जनम मरन थों सो छुट जावे।

10

काम क्रोध भय नूं जो त्यागण
आके मेरी शरणीं लागण
मेरे बण के ध्यान लगावण
ज्ञान अग्नी विच्च शुद्ध हो जावण
तद ओह मुझ विच्च लीन हो जांदे
ऐसे ज्ञानी मोक्ष नूं पांदे।

11

दुनियां दे सब राह घनेरे
हे पारथ ओह सब ने मेरे
जो जिस मारग कदम वधावे
श्रद्धा नाल मेरे तांई आवे
मैं वी तिस नूं तिंवें अपनांवां
अपना आप तिंवें प्रगटांवां।

12

जो कर्मां विच्च सिद्धी चाहवण
देवतयां नूं भोग लगावण
छिण मातर जीवन है तेरा
कीतयां पार लगेगा बेड़ा।

13

मैं जो चार वर्ण उपजाए
गुण कर्मां अनुसार बणाए
सब दा कर्त्ता मैनूं जाणीं
अविनाशी नूं सदा पछाणीं
कर्म करां सब वर्ण बणावां
तद वी कर्म रहित सदवांवां।

14

न एह कर्म फसावण मैनूं
न फल मोह विच्च पावण मैनूं
एह गल जाण जो मुझ नूं ध्यावे
कर्म जाल विच्च सो न आवे।

15

जो नर सन प्रभ पावण वाले
मुक्ती मारग चाहवण वाले
धर्म कर्म विच्च चित्त सन धरदे
नेम कर्म सब सन ओह करदे
अर्जुन तिवें कर्म नूं कर तूं
पारथ वडयां दा राह फड़ तूं।

16

ज्ञानी पंडित वी भुल जावण
कर्म अकर्म दा भेत न पावण
कर्म तत्त सुण मैं समझावां
सब पापां थों दूर हटावां।

17

कर्म विकर्म दा तत्त पछाणीं
कर्म अकर्म दे भेत नू जाणी
मर्म कर्म दा मुशकिल भारी
पारथ! कर्म गती है न्यारी।

18

कर्म विच्च अकर्म जो वेखे
विच्च अकर्म कर्म जो पेखे
सो नर बुद्धि मान कहावे
कर्म करे योगी सदवावे।

19

बिन संकल्प जो कर्म कहावण
ज्ञान अग्नी विच्च भस्म हो जावण
बिन फल इच्छया कर्म जो छोहंदे
सो नर ब्रह्म ज्ञानी होंदे।

20

कर्म फलां नूं जो छड जावण
हो निर आसरा तृप्ती पावण
सो कर्मां विच्च नहीं भरमांदे
करके वी निशकर्म सदांदे।

21

बिन आशा जो कर्म कमांदे
मन चित्त होवण वस जिन्हाँदे
ममता लोभ नूं जो छड देंदे
नाल शरीर ही कर्म करेंदे
सो मरयादा भन्न दे नांहीं
पाप दे भागी बणदे नांहीं।

22

जो रब दवे सबर नाल खावे
सुख दुःख विच्च न चित्त भरमावे
द्वेष रहित सब कर्म पछाणे
हार जेत जो इक सम जाणे
कर्मा थों सो नसदा नाँहीं
बंधन विच्च पर फसदा नाँहीं।

23

कर्म फलाँ दा संग छड जावे
सो नर जीवन मुक्त कहावे
ज्ञान ध्यान विच्च जो चित्त लाँदे

यज्ञ निम्मित जो कर्म कमांदे
सो नर ब्रह्म ज्ञान नूं पावण
कर्म तिन्हां दे लै हो जावण।

24

ब्रह्म अर्पण सारे यज्ञ ब्रह्म
हवी–सामिग्री ते अग्ग ब्रह्म
ब्रह्म यज्ञ दा कर्त्ता ब्रह्म
कर्मा विखे विचरता ब्रह्म
ब्रह्म नाल जो ध्यान लगावे
पारब्रह्म विच्च लीन हो जावे।

25

देव यज्ञ ने कई करेंदे
देवतयां नूं बलियां देंदे
कई इक योगी ब्रह्म सिमरदे
ब्रह्म अर्पण सब यज्ञ ने करदे।

26

कई इन्द्रियाँ नूं जित्त जांदे
संयम रूपी अग्ग विच्च पाँदे
शब्द स्पर्श रूप रस गंध
विशे इन्द्रियाँ दे संबंध
कई इक शब्द आदिक नूं अर्जुन
इन्द्रियाँ दी अग्ग विच्च साड़न।

27

ज्ञान रूप कई जोत जगांदे
संयम योग दी अग्ग जलांदे
इन्द्रे कर्म आहुती पावण
प्राण कर्म दा यज्ञ रचावण।

28

कई इक यज्ञ करेंदे धन दा
कई इक तप कई योग करन दा
वेद पढ़न दा कई यज्ञ करदे
ज्ञान यज्ञ विच्च कई चित्त धरदे
सब नूं जाण महाव्रत धारी
सभ्भे यज्ञ रचावण भारी।

29

प्राण वायू कई कुंड बणांदे
विच्च अपान आहुती पांदे
कई इक प्राण आहुती पावण
प्राण अपान नूं रोक बखावण
प्राण अपान स्वास वस्स करदे
प्राणायाम तांई चित्त धरदे।

30

नियम नाल आहार जो खांदे
स्वासाँ दा सो यज्ञ रचाँदे
एह सब यज्ञ तत्त नूं पावण
यज्ञों पाप नष्ट हो जावण।

31

यज्ञों बधाया अमृत खांदे
सो नर पारब्रह्म नूं पाँदे
जो नहीं यज्ञ करेंदा कोई
एथे ओथे मिले न ढोई।

32

भाँत भाँत दे यज्ञ करावण
सारे ब्रह्म भेंट हो जावण
पर सब यज्ञ कर्म थों उपजण
जाणयाँ मुक्त हो जावें अर्जुन।

33

सब द्रव यज्ञाँ थों हे प्यारे
ज्ञान यज्ञ वडयावण सारे
सारे कर्म जो लोक कमावण
ज्ञान यज्ञा विच्च लोप हो जावण।

34

जो ने तत्त नूं जानण वाले
सत्त असत्त पछाणन वाले
ज्ञान योग उपदेश करनगे
तेरे भय संताप हरनगे
ज्ञान योग नूं जाण तूं अर्जुन
कर कर खोज पछाण तूं अर्जुन

पुछदा रह जे समझ न आवे
सेवा नाल ज्ञान लभ जावे।

35

ज्ञान योग दा भेद जे पावें
कदी न मोह विच्च मन भरमावें
ज्ञान योग दा तत्त जे भेखें
आत्मा विच्च सब सृष्टि वेखें।

36

भावें केडा ई पापी होवें
जे पर ज्ञान योग नूं छोहवें
ज्ञान रूप बेड़ी चढ़ जाँवें
सब पापाँ थों तूं तर जाँवें।

37

हे अर्जुन जिवें अग्ग बलेंदी
बालण बाल भसम कर देंदी
ज्ञान अग्नी तिवें कर्म जलावे
कर्म ज्ञान विच्च भसम हो जावे।

38

ज्ञानों उत्तम होर न कोई
सब नूं करे पवित्तर सोई
कई इक योगी योग कमा के
कर्म योग विच्च सिद्धी पाके
समय नाल ज्ञानी बण जाँदे
आत्मा दे विच्च ज्ञान नूं पांदे।

39

श्रद्धा नाल जो खोज करेंदे
नित ढूँडन वल ध्यान धरेंदे
इन्द्रियाँ नूं जो जित्त जाँदे
सो नर ब्रह्म ज्ञान नूं पाँदे
जो नर इयों ज्ञानी हो जावण
सहज ही परम शान्ती पावण।

40

जो मुझ विच्च श्रद्धा नहीं रखदे
जो मूरख नहीं ज्ञान परखदे

संशय कर कर मन भरमाँदे
भरमाँ विच्च ओह नष्ट हो जाँदे
ऐसे भरमी ते अज्ञानी
एथे ओथे दोहीं जहाँनी
लोक अते परलोक गवाँदे
कदी वी सो नर सुख नहीं पाँदे।

41

पारथ! जो नर योग ध्यावण
ईश्वर अर्पण कर्म कमावण
नाले ज्ञान दे तत्त नूं पाँदे
मन दे संशय भरम मिटाँदे
सो नर आत्मा विच्च ने वसदे
कर्म बंधनां विच्च नहीं फसदे।

42

हे पारथ! हे कुंती नंदन
संशय सब अज्ञान थों उपजन
योग करन विच्च थिरता पाके
ज्ञान रूप तलवार चलाके
सारे संशय भरम मिटा दे
युद्ध करन विच्च ज़ोर वखा दे।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा ज्ञान विभाग योग
नामक चौथा अध्याय समाप्त होया।

पंजवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा सन्यास योग

1

अर्जुन उवाच

कर्म त्याग दी मैहमा गाओ
मुड़ फिर कर्म योग वडयाओ
इयों न भरमाओ चित्त मेरा
इक राह दस देओ चंग चंगेरा।

2

श्री भगवानोवाच

इक मारग सन्यास कहांदा
दूजा कर्म योग सदवांदा
दोवें राह इक थां लै जावन
मोक्ष द्वारे तीक पहुंचावन
पर जद तुलना कीती जावे
कर्म योग उत्तम अखवावे।

3

नित्त सन्यासी ओह सदवांदा
राग द्वेश वस्स जो नहीं आंदा
सुख दुख विच्च जो न घबरावे
सहज ही बंधन थों छुट जावे।

4

योग अते सन्यास नूं अर्जुन
बाल अज्ञांणे अड अड समझन
पर पंडित जो तत्त पछाणे
सांख योग नूं इक्को ई जाणे
भावें इक राह कदम उठावे
फेर वी दोहां दा फल पावे।

5

जो पदवी पावे सन्यासी
उस जा पहुँचे योगाभ्यासी
सो ज्ञानी एह तत्त पछाणे
सांख योग नूं जो इक जाणे।

6

योगाभ्यास मूल है सभ दा
योग बिना सन्यास न लभ दा
मुनि मुनीशर योगाभ्यासी
सहज ही पावण ब्रह्म अविनाशी।

7

योग कमावे जती कहावे
इन्द्रियाँ ते मन जित्त जावे
शुद्ध आत्म तत्त पछाणे
आत्मा नूँ जो सब विच्च जाणे
ऐसा नर जद् कर्म कमांदा
कर्म बंधना विच्च नहीं आंदा।

8–9

योगी अखीयाँ मीटे, खोले
चल्ले, सुंघे, सुणे, ते बोले
छोहवे, स्वास लवे, सौं जावे
दुनियाँ दे सब कर्म कमावे
पर हर वेले तत्त पछाणे
'मैं कुझ नहीं करदा' एह जाणे
ओखे इन्द्रियाँ गुण कारन
गुण वस्स हो सब काज सवारन।

10

जो नर मोह ममता तज देंदे
ब्रह्म अर्पण सब कर्म करेंदे
सो नर कमल फूल दी न्यांई
पाप दे भागी बणदे नांहीं।

11

योगी मोह ममता छड जांदे
आतम शुद्धी वल्ल चित्त लांदे
तन मन बुद्ध इन्द्रियाँ कारन
योगी सब कम्म काज सवारन।

12

योगी फल इच्छा छड जांदा
तद ओह परम शाँती पांदा

कामी कर्म फलां नूं चाहवे
कर्म बंधनाँ विचच फस जावे।

13

इस नगरी दे नौं दरवाजे
आत्मा तिस विच्च सुखी विराजे
मन थों कर्म त्याग दिखलावे
न कुझ करे न ही करवावे।

14

माया मोह विच्च मन है मचदा
कर्त्तापन ईश्वर नहीं रचदा
कर्मनूं वी प्रभ रचदा नांहीं
न जोड़े प्रभ फल संग तांईं
माया दे स्वभाव थों अर्जुन
कर्म, क्रित, ते संग उपजण।

15

पाप करे कोई पुन्य कमावे
पाप पुन्य प्रभु न अपनावे
विच्च अज्ञान ज्ञान लुक जांदा
जीव इसे गल्ल विच्च भरमांदा।

16

आतम ज्ञान दे कारण अर्जुन
सब अज्ञान नाश हो जावण
ज्ञान रूप सूरज चढ़ जांदा
ज्ञानी तद प्रभ दरशण पांदा।

17

प्रभ दी चरणीं ध्यान लगा के
प्रभ विच्च अपणा आप रमा के
प्रभ दी भक्ति विच्च थिर होके
ज्ञान नाल पापां नूं धोके
ज्ञानी मोक्ष धाम नूं पावण
जिस थां जाके मुड़ न आवण।

18

ज्ञानी पंडित तत्त पछानण
सब जीवां नूं इक सम जानण

शूदर, गौ, विप्र, विद्वान
कुत्ता, हाथी, एक समान।

19

मन इक सम इक थां जो लांदे
एथे इ जनम मरन जित्त जांदे
ब्रह्म इक सम निर्दोष कहांदा
ज्ञानी ब्रह्म विच्च थिर हो जांदा।

20

ब्रह्म विखे जो लीन है ज्ञानी
मोह विच्च भुलया नहीं जो प्राणी
सुख पाके खुश होंदां नाँहीं
दुख आवे ते रोंदा नाँहीं।

21

विषय भोग थों जो मन मोड़न
आत्मा दे विच्च जो सुख लोड़न
सो नर ब्रह्म नाल जुड़ जांदे
सदा ही सो नर आनंद पांदे।

22

जो सुख विशय भोग थों लभ दे
दुख दलिदर मूल ने सभ दे
एह सुख नाशवान तूं जाणी
इस नूं सुख न समझन ज्ञानी।

23

देह त्यागण थों पहलों प्यारे
सबर सबूरी मन जो मारे
मन मारे संसारी होके
काम क्रोध दे वेग नूं रोके
ऐसा नर योगी सदवावे
सो नर परम शाँती पावे।

24

जिस हिरदय विच्च आनंद वसदा
जिस विच्च ब्रह्म दा चानण रसदा
सो योगी निर्माण नूं पांदा
ब्रह्म जोत विच्च लीन हो जाँदा।

25

ऋषि मुनि जो आनंद रत्ते
दुख पाप सब जावण कट्टे
छड दुभदा वस मन चित्त करदे
प्राणी मात्र दा हित करदे
सो मुनि पद निर्वाण दा पाँदे
ब्रह्म विखे ओह लीन हो जांदे।

26

काम क्रोध थों दूर हो रैंहदे
मन अपने नूं वस कर लैंदे
सो आतम ज्ञानी तर जांदे
सहज ब्रह्म निर्वाण नूं पांदे।

27

विषयाँ थों मन दूर हटा के
ध्यान भुवां विचकार टिका के
स्वासां ताईं संयम करके
प्राण अपान नूं इक सम करके।

28

इन्द्र मन बुद्धि जित्त जावे
मुक्ती मारग कदम बधावे
इच्छया भय क्रोध तज देंदे
सो मुनि जीवन मुक्त सदेंदे।

29

यज्ञ तपाँ दा भोगन वाला
मैं सब सृष्टि दा रखवाला
सब संसार रचावण हारा
प्राणी मात्र दा मैं प्यारा
जो कोई मैंनूं ऐसा ध्यावे
सो नर परम शाँती पावे।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा सन्यास योग
नामक पंजवां अध्याय समाप्त होया।

छेवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा आत्म सयंम योग

1

श्री भगवानोवाच

छड्ड के आसरा कर्म फलां दा
करन योग जो कर्म कमांदा
ओह है त्यागी ते सन्यासी
ओह है पूरन योगाभ्यासी
कर्म हीन निरअग्नी भोगी
न सन्यासी न ओह योगी।

2

जिस नूं सब सन्यास बुलावन
योग उस्से नूं जाण तू अर्जुन
जो संकल्प न त्यागे मन दा
सो नर योगी कदे न बणदा।

3

योग मारग जो कदम उठाँदा
उस दा साधन कर्म कहांदा
जद मुनि योग रूड़ हो जावे
उस दा साधन शमाँ कहावे।

4

इन्द्रियाँ थों जो मन मोड़े
कर्म फलाँ विच चित्त न जोड़े
सब संकल्प त्याग दिखलावे
सो नर योगा रूड़ कहावे।

5

आत्मक बल दा आसरा फड़लै
आत्मा दा उद्धार तूं कर लै
आत्मा उत्तम उच्च हो जावे
आत्मा अधोगती न पावे
आत्मा ही है अपना सज्जण
आत्मा अपना वैरी दुशमण।

6

आत्मा अपना मीत कहावे
जद नर अपना मन जित्त जावे
जद एह मन वस आवे नाँहीं
आत्मा शत्रु अपने ताँई।

7

जो मन जित्ते शान्ती पावे
द्वंदा थों जो दूर हो जावे
सरदी, गरमी, मान अपमाना
सुख दुख तिस नूं एक समाना।

8

ज्ञान अते विज्ञान बधावे
थिर चित्त हो के तृप्ती पावे
जती जितेन्द्री तत्त पछाणे
मिट्टी सोना इक सम जाणे
जो इस ज्ञान तत्त नूं पावे
सो पूरण योगी सदवावे।

9

सुहृद, मित्र, मध्यस्थ, उदासी
बंधू, वैरी, साधू, पापी
सभनाँ वल इक सम जो वेखे
सो नर योग तत्त नूं पेखे।

10

आशा तज के बंधन हर के
मन चित्त अपने नूं वस कर के
वखरा बैठ एकान्त नूं लोड़े
योगी ध्यान ब्रह्म विच जोड़े।

11–12

शुद्ध, पवित्तर थां ते जावे
थिर चित्त होके आसन लावे
हेठ कुशा उप्पर मृग शाला
उप्पर इक वस्तर उज्याला
आसन इक सम सुच्चा होवे
न नीवां न उच्चा होवे
उस पर बैठ एकागर होके
इन्द्रियाँ दी बिरती रोके
आतम शुद्धि विच्च चित्त लावे
योगी योगाभ्यास कमावे।

13

बैठे योगी धारनां धर के
सिर, धड़, गल, इक सेधे कर के
चित्त थिर कर इक पासे लावे
नक्क दे सिरे ते ध्यान जमावे
आसियों पासियों बिरती रोके
ब्रह्म चितारे योगी हो के।

14

आत्मा जिस दा शान्ती पावे
जो प्राणी निर्भय हो जावे
ब्रह्मचर्य व्रत विच्च थिर हो के
मन नूं आसियों पासियों रोके
मुझ विच्च ही चित्त अपना जोड़े
सर्वश्रेष्ठ मुझ नूं जो लोड़े
सो नर परम शान्ति पाके
बैठे योग समाधी लाके।

15

योगी मन नूं वस कर लैंदा
सदा आत्मा विच रम रैंहदा
तद ओह परम शान्ती पांदा
ब्रह्म लीन तद मुक्त हो जांदा।

16

अत्त खावन अत्त भोजन त्यागण
यां अत्त सौंवण यां अत्त जागण
इस अत्त थों कम चलदा नांहीं
योग तिन्हां दा फलदा नांहीं।

17

युक्त आहार विहार जिन्हाँदे
नेम नाल जो कर्म कमांदे
नेम नाल जो सौंवण जागण
सो योगी दुख पीड़ न झागण।

18

योगी चित्त नूं जद वस करदा
ध्यान आत्मा दे विच्च धरदा
इच्छिया तृष्णा नूं छड्ड जांदा
तद पूरण योगी सदवांदा।

19

जिस जा पवन वगेंदी नांहीं
दीपक न डोले उस थांईं
एह उपमा सो योगी पावे
ब्रह्म विखे जो लीन हो जावे।

20

योगी दा चित्त शांती पावे
विशय वासनां दूर हो जावे
तद अपने विच्च आप पतीजे
आत्मा विच्च तद आत्मा रीझे।

21

योगी परम अनंत सुख पावे
बुद्धि बिना जो समझ न आवे

इन्द्रियाँ जिस नूं न जानण
जिस सुख दा न तत्त पछानण
उस सुख नूं जद योगी पावन
उसल तत्त थों दूर न जावन।

22

जद योगी लभदा सुख तांईं
जाणे होर परे कुझ नांहीं
तद ओह सुख विच मग्न हो जावे
दुख दरद सब दूर हटावे।

23

दुख दरद थों दूर हो जाण
इस दा नाम है योग कमाणा
निश्चय कर के योग कमा तूं
मन दे संशय भरम मिटा तूं।

24

संशय कामना त्याग तूं अर्जुन
मन नूं जित्त उठ जाग तूं अर्जुन
इन्द्रियाँ सब मन वस कर लै
योग दे मारग ते पग धर लै।

25

तद जद थिर बुद्धि हो जावें
बुद्धि द्वारा धीरज पावें
हौली हौली धीरज पाके
आत्मा दे विच्च ध्यान लगाके
आत्मा दे विच्च तृप्ती पावें
आशा चिंता मनों भुलावें।

26

एह मन चंचल टिक्कदा नांहीं
नित उठ दौड़े उलटी रांहीं
मन नूं रोक ते वागां फड़ लै
मन नूं आत्मा दे वस कर लै।

27

मन चंचल जद शान्त हो जावे

रजगुण जिस नूं न भरमावे
जद नर पाप रहित हो जाँदा
तद फिर ब्रह्मानंद नूं पांदा।

28

सब पापाँ तो दूर रहे जो
ब्रह्म विखे भरपूर रहे जो
सो नर ब्रह्म नाल जुड़ जावे
तद ओह ब्रह्मानन्द नूं पावे।

29

योगी योग तत्त नूं पेखे
आत्मा विच्च सब सृष्टि वेखे
सब सृष्टि विच्च आत्मा जाणे
सो समदर्शी तत्त पछाणे।

30

जो योगी मुझ विच्च चित धरदा
घटघट विच्च मेरा दरशन करदा
जो कोई योग युक्त हो जावे
सब सृष्टि नूं मुझ विच्च पावे
मेथों दूर ओह होंदा नांहीं
न मैं दूर होवां उस तांई।

31

जो योगी इक ब्रह्म पछाणे
घट घट व्यापक मैनू जाणे
कर निश्चय मेरा भजन करेंदा
ब्रह्म रूप विच्च मगन हो रैंहदा
जग झंझट विच्च सो नहीं फसदा
सो नर सदा ही मुझ विच्च वसदा।

32

घट घट विच्च जो एकता वेखे
सर्व आत्मा इक सम पेखे
सुख दुख विच्च वी एकता पावे
सो पूरण योगी सदवावे।

33

अर्जुनोवाच

हे भगवान! देवकी जाया
तूं जो योग उपदेश सुणाया
उस दी नींह थिर नज़र न आवे
चंचलता मन नूं डोलावे।

34

एह मन चंचल नंद दे लाला
एह मन हठी बहुत बल वाला
एह मन मोड़ियाँ मुड़दा नाँहीं
रात दिने उठ पैंदा रांहीं
चंचलता थों एह नहीं उकदा
पवन वेग सम एह न रुकदा।

35

श्री भगवानोवाच

सच पारथ एह कम्म नहीं सौखा
मन चंचल वस करना औखा
फेर वी हे वडड बाहू अर्जुन
मर वैराग अभ्यास दे कारण
चंचलता थों दूर हो जाँदा
एह मन चंचल वस विच्च आंदा।

36

एह मन जिसदा वस विच नाँहीं
योग नहीं लभदा उस तांईं
एह मन जिसदा वस विच आवे
उस दा योग सफल हो जावे।

37

अर्जुनोवाच

श्रद्धा नाल जो योग नूं लोड़े
कर कर यतन जो मन नूं मोड़े

जेकर फेर वी योग न पावे
जेकर फेर वी मन भरमावे
सो नर कौन गती नूं पाँदा
हे भगवन! दस हाल तिन्हाँ दा।

38

सो नर हो निर आसरा रुलके
ब्रह्म दे मारग विच्च भुल भुल के
बदल सम छिन्न भिन्न हो जावे
याँ की होर गती ओह पावे।

39

हे भगवन एह गल समझा दे
मेरे मन दा भरम मिटा दे
तुद्ध विन संशय कौन मिटावे
तुद्ध बिन मारग कौन दिखावे।

40

श्री भगवानोवाच

हे पारथ जो यतन करेंदे
योग दे मारग कदम धरेंदे
फेर वी जो सिद्धी नहीं पांदे
सो नर योगाभ्रष्ट कहाँदे
योगाभ्रष्ट नाश ना पावण
नीच जून विच्च कदी न जावण
जो नर चंगा कर्म कमावे
कीकण नीच गती सो पावे।

41

जो नर योगाभ्रष्ट हो जावण
मर के पुन्य लोक नूं पावण
चिर तक वास करन उस थाँई
जिस जा दुख पाप कोऊ नाँहीं
तद फिर मानुष देह ओह पाँदे
चंगयाँ धर्मीयाँ दे घर आंदे।

42

कोई कोई जद मानुष देह पावण

योगीयाँ दे घर जन्म लै आवण
अत्त दुर्लभ एह जनम कहावे
जन्म ऐसा कोई विरला पावे।

43–44

योगीयाँ दी कुल विच्च जो आंदा
उस दा ध्यान मगर जुड़ जांदा
संसकार पिछले जनमाँ दे
योग मारग वल्ल खिच्च लै जाँदे
जो जिज्ञासू मोक्ष नूं पावे
शब्द ब्रह्म थों पार हो जावे।

45

कर कर यतन जो उद्दम कर दे
पाप कर्म विच्च मन न धर दे
जन्म जन्म विच्च योग कमाँदे
योग करन विच्च सिद्धी पांदे
तद ओह परम गती नूं पावण
तद ओह प्राणी मुक्त हो जावण।

46

तपी तपीशर पंडित ज्ञानी
कर्म करन वाले सब प्राणी
योगी थों सब घट हण अर्जुन
योग कमा योगी बन अर्जुन।

47

योगीयाँ विच्च सो उच्च सदावण
जो कोई ध्यान मेरे विच्च लावण
श्रद्धा नाल जो मुझ नूं ध्यांदे
सो सब थों उत्तम अखवांदे।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा आत्म–संयम योग
नामक छेवां अध्याय समाप्त होया।

सतवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा सन्सास योग

1

श्री भगवानोवाच

केवल मेरे आसरे आके
चित वृती मेरे विच लाके
जद पारथ तूं योग कमावें
जद तूं ब्रह्म नाल जुड़ जावें
पूरण रूप तूं जाणे मैनूं
सो सुण ज्ञान सुनाँवा तैनूं।

2

शास्त्र वेद है जो सिखलांदा
सो अर्जुन है ज्ञान कहांदा
अनभव नाल जो जाणया जावे
पारथ सो विज्ञान कहावे
ज्ञान अते विज्ञान नूं अर्जुन
तत्त रूप विच जाण तूं अर्जुन
सुण दोहां दा तत्त सुनावां
अर्थ खोल तैनूं समझावां
जिस नूं जाण सकल जगमाहीं
जानण योग कोई गल नाहीं।

3

लखाँ विच विरला कोई अर्जुन
यतन करेंदा सिद्धी कारन
यतन करन जो सिद्ध सयाणे
कोई विरला मेरा रूप पछाणे।

4

पृथ्वी–जल–अग्नि हे अर्जुन
वायू–खे–आकाश अते मन
अहंकार ते बुद्धि तेरी
एह सब अठ विध माया मेरी

अठ विध जो एह कहे पदारथ
मेरी प्रकृति जाण तूं पारथ।

5

अठ विध माया पारथ मेरे
वर्णन कीतीयां सनमुख तेरे
एह सब ही निकृष्ट कहावण
एह सब अपरा आखीयां जावण
इस थों परे जो माया मेरी
जग विच जीवन शक्ती जेहड़ी
प्राण रूप जग माँह समावे
परा प्रकृति सो सदवावे।

6

परा अपरा दे मेल थों अर्जुन
स्थावर जंगम प्राणी उपजन
मैं पारथ सब जगत रचावां
नाश दा कारण वी बण जावां।

7

सुण हे पारथ सब जग माहीं
मेथों परे होर कुझ नाहीं
माला दे मणके जिवें सारे
विचरन इक धागे दे सहारे
सब जग दा मैं तिवें सहारा
ओत प्रोत मुझ विच जग सारा।

8

घट घट व्याप रहया मैं आपे
जिवें पारथ जल विच रस व्यापे
जिवें ज्योती चन सूरज ताईं
ओम अक्षर जिवें वेदा माँहीं
शब्द आकाश विच पारथ मैं
पुरुषाँ विच पुरषारथ मैं।

9

पृथ्वी विखे सुगन्ध हां मैं
अग विच्च तेज प्रचंड हाँ मैं

प्राण हां मैं सब जीवाँ माहीं
तप हां तपी तपीशरां ताईं।

10

जग दा कारण मैंनूं जाणीं
मूल सनातन रूप पछाणीं
मैं बुद्धि बुद्धमानां ताईं
मैं हाँ तेज तेजस्वीयां माहीं।

11

बलवानां विच मैं बल सोई
जिस विच कामना राग न कोई
मैं सो काम प्राणीयां माहीं
धर्मो उलट काम जो नाहीं।

12

सत रज तम तिन भाव जो अर्जुन
बीज रूप में सब दा कारण
एह तिन गुण विचरन मुझ माहीं
मैं पर गुण बंधन विच नाहीं।

13

सत रज तम भावां जग मोह्या
तिन गुण वस जग कमला होया
दस पारथ मैंनूं कीकण जाणे
अविनाशी नूं किवें पछाणे।

14

तिन गुण माया मैं जो वरनी
पारथ ओह अत मुशकल तरनी
पर जो शरन मेरी विच आवे
माया रूप नदी तर जावे।

15

जो पापी नित पाप कमांदे
मूरख जो मोह विच फस जाँदे
याँ जो ने अज्ञानी बंदे
लगे रहन विश्याँ दे धंदे
ऐसे नर मैंनूं न ध्याँवण
मूरख मेरी शरण न आवण।

16

चार पुरुष शुभ कर्म कमावण
चार भगत मेरा नाम ध्यावण
रोगी या कोई भोगी प्राणी
या जिज्ञासू या कोई ज्ञानी।

17

ज्ञानी असल तत्त नूं पाके
केवल मेरी शरणी आके
केवल मेरा नाम ध्याँदा
सब भगतां थों श्रेष्ट कहांदा
मैं ज्ञानी दा ज्ञानी मेरा
मेरा उसदा प्यार घनेरा।

18

भगताँ विच मेरा प्रेम वधेरा
पर ज्ञानी है आत्मा मेरा
पारथ भगत ज्ञानी तांईं
मुझ बिन कोई आसरा नाहीं।

19

अर्जुन जद कई जनम विहांदे
तद फिर ज्ञान मुझ नूं पांदे
घट घट विच मेरा रूप पछाणे
आतम रूप जगत सब जाणे
हे पारथ जो ऐसा प्राणी
सो महात्मा दुर्लभ जाणी।

20

भोग वासना वस जो आंदे
कामना वस जो ज्ञान झलांदे
प्रकृति अनुसार विचरदे
अपने अपने इष्ट सिमरदे
मैनूं छड होरना नूँ ध्यांदे
देवतयाँ दी शरणी जाँदे।

21

जो जो जिस जिस इष्ट नूं ध्याँवण
श्रद्धा नाल शरण विच आवण

श्रद्धा भगती नाल जो अर्जुन
जो जो देवतयां नूं पूजन
सब दी श्रद्धा प्रेम बधावां
पारथ आसां तुरत पहुचाँवां।

22

श्रद्धा नाल जो इष्ट सिमरदे
इष्ट देव दा भजन ने करदे
जो वी इष्ट मनोरथ चांहदे
जिस नूं भजदे तिस नूं पांदे।

23

अर्जुन थोड़ी अकल जिन्हांदी
पूजा करन सो देवतयां दी
इस पूजा दा जो फल अर्जुन
उस नूं नाशवान सब जानण
देवतयां नूं जो नर ध्यावे
देवतयां नूं सो नर पावे
भगत मेरे मैनूं जो ध्यांदे
मेरे सत रूप नूं पांदे।

24

बुद्धि हीन न तत्त पछानन
मेरा सत स्वरूप न जानन
निराकार अव्यक्त नूं अर्जुन
व्यक्त रूप साकार ओह मनन।

25

जग माया विच मैं छुप जावां
खलकत नूं मैं नज़र न आवां
मूड़ जगत मैंनूं न जाने
अजर अविनाशी नूं न पछाने।

26

भूत भविष्य दा हाल मैं जानां
वर्तमान दा तत्त पछानां
तिन्न काल विच जो कोई विचरन
मैं सब दी गति जाणा अर्जुन

पर मैनूं न लोक पछानण
मेरा सत्त सरूप न जानण।

27

इछया द्वेश थों पारथ प्यारे
जग विच सुख दुख उपजन सारे
द्वंदां विच प्राणी फस जान्दे
मोह विच फस मेरा ज्ञान भुलांदे।

28

पुण्य कर्म जो लोक कमावन
पाप जिन्हाँ दे नाश हो जावन
सुख दुख थों सो दूर हो जांदे
निश्चय नाल ओह मैनूं ध्यांदे।

29

मौत बुढ़ापे दा दुख भारा
जो उस थों लभदे छुटकारा
ज्ञान कर्म विच ध्यान धरेंदे
मेरे आसरे यतन करेंदे

पारब्रह्म ते कर्म नूं जानन
आत्मा दा सो तत्त पछानन।

30

अधीभूत अधी देव दा अर्जुन
ते अधीयज्ञ दे तत्त नूं जानन
सत्त जान मेरा चिंतन कर दे
ब्रह्म समाधी विच चित धरदे
मेरे पूर्ण ज्ञान नूं पांदे
मरन समय वी मैनूं ध्याँदे।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा सन्यास योग
नामक सतवां अध्याय समाप्त होया।

अठवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा सामवेद तारक ब्रह्मयोग

1

अर्जुनोवाच

हे पुरुषोत्तम हे गिरधारी
की है ब्रह्म हे कृष्ण मुरारी?
अध्यातम की है फरमाओ?
कर्म की है? एह गल समझाओ
अधी भूत की शै अखवावे
अधी देव किस नूं कह्या जावे।

2

इस देह विच दस हे मधुसूदन
अधी यज्ञ की है ते कीकन?
जो नर अपना मन जित जांदे
नियम अंदर हन चित्त जिन्हांदे
मरन समय दस कृष्ण मुरारी
जानन किवें तैनूं गिरधारी।

3

श्री भगवानोवाच

निरविकार जो नाश न पावे
सोई अक्षर ब्रह्म कहावे
आत्मा वांगू घट घट व्यापे
जिसदी सत्ता थां थां जापे

सब थां सहज स्वभाव समावे
अध्यातम तिस नूं कह्या जावे
इस जग विखे विहार जो सारे
एह जग विचरे जिन्हां सहारे
यज्ञ दान जो कीते जावन!
हे पारथ सो कर्म कहावन।

4

जो जो नाशवान है भारत!
सो सब ने अधी भूत हे पारथ
आत्मा पुरुष अधी देव कहांदा
इन्द्रियाँ थों जो कर्म करांदा
इस देह थों जो यज्ञ करावे
सो कर्ता अधियज्ञ कहावे।

5

अंत काल जो मैनूं ध्यावे
सिमरण करदा देह छड जावे
निरसंशय सो मुक्त हो जांदा
मेरे परम भाव नूं पांदा।

6

मरन समय जिस रूप नूं ध्यावे
देह छड के तिस भाव नूं पावे
जिस नूं सिमरन तिस नूं पावन
सब अपने स्वभाव ते जावन।

7

पल पल मेरा नाम सिमर तूं
नाम सिमरदा युद्ध वी कर तूं
मन बुद्धि कर मेरे अर्पन
तद तूं मैनूं पावें अर्जुन।

8

तप अभ्यास करें तूं अर्जुन
योग विखे चित्त धरें तूं अर्जुन
सब जग नालों तार जे तोड़ें
चित केवल मेरे विच जोड़ें

जद तूं अर्जुन मैनूं ध्यावें
परम पुरुष नूं सहज ही पावें।

9

जो तिन्न काल नूं जाने ईश्वर
सोई कहांदा है जगदीश्वर
परम पुरातन शासक सब दा
अत सूखम सरूप है प्रभ दा
हुकमी सब संसार चलावे
फल कर्मा दा तुरंत पहुंचावे
विद्यमान ईश्वर सदवांदा
सोचां चिंतन विच नहीं आंदा
सूरज सम प्रकाश है जिसदा
अंधकार यों दूर जो दिसदा
जो नर ऐसे प्रभु नूं ध्यावे
सो नर सहज परम पद पावे।

10

पारथ अंत समां जद आवे
मौत खड़ी जद शकल दिखावे
तद वी मन चंचल नूं रोके
सोच करे इक पासे होके
भक्ति भजन अंदर चित्त लावे
मन थिर करके योग कमावे
प्राणां नूं तद संयम करके
भृकुटी नूं मस्तक विच धर के
योगी जद सम चित्त हो जांदे
पुरुष पुरातन दे गुण गांदे
ईश्वर दिंया सिफतां नूं ध्यांदा
सो योगी ईश्वर नूं पांदा।

11

वेद ज्ञान नूं जानन वाले
अक्षर रूप पछानन वाले
आखण जिस नूं घट घट वासी
जो है नाश रहत अविनाशी
यतन शील वैरागी ज्ञानी

मोह ममता थों रहत प्राणी
दुनियां नालों नाता तोड़न
पार ब्रह्म संग रिश्ता जोड़न
सब दिसदे याचक उस प्रभ दे
थां थां ब्रह्मचारी ने लभदे
उस प्रभ दा दर्शन करवावां
बीज रूप मार्ग दर्शावां।

12

इन्द्रियां सब वस विच करके
मन वृति हिरदे विच धर के
मसतक विच जा प्राण टिकावे
धारन करके योग कमावे।

13

ओम ओम तद मुख थों उचारे
ओंम नाम दा अर्थ चितारे
ओंम ओंम कह देह छड जावे
सो नर परम गती नूं पावे।

14

जो केवल मुक्त विच चित धरदा
सदा जो मेरा सिमरन करदा
सदा ही जो नर योग कमावे
ध्यान सदा मेरे विच लावे
पारथ मैं तिस नूं अपनावां
सहज ही उस नूं मैं मिल जावां।

15

भक्त मेरे जो मैनूं ध्याँदे
जन्म बंधनों थों छुट जांदे
जन्म चक्कर विच दुख है दिसदा
कोई थिर रूप न जापे इसदा
जो महात्मा मैनूं ध्याँदे
परम गती सिद्धी नू पाँदे
सो नर जीवन मुक्त कहावन
जन्म मरन विच कदी न आवन।

16

ब्रह्म लोक तक जो नर जावन
जन्म मरन विच फिर वी आवन
पर जो मुझ विच लीन हो जांदे
सो प्राणी फिर जन्म न पांदे।

17

कई हजारां युग जद गुज़रन
ब्रह्मा दा तद इक दिन मनन
पारथ कई हज़ार युगां दी
ब्रह्मा दी इक रात कहांदी
ब्रह्म काल दा तत जो पछानन
सो नर ऐस रमज़ नूं जानन।

18

ब्रह्मा दा दिन जद चढ़ जाँदा
सृष्टि विच इक जीवन आंदा
जो अव्यक्त नज़र न आवन
जानन योग व्यक्त बन जावन
तद स्थावर जंगम बन जांदे
समझन योग शकल विच आंदे
जद ब्रह्मा दी रात है आँदी
सृष्टि सब अव्यक्त हो जांदी।

19

स्थार जंगम भूत प्राणी
बार बार उपजन एह जाणी
दिन चड़या उतपत हो जावन
रातीं ब्रह्मा विखे समावन
ब्रह्मा दा दिन फिर जद आवे
सृष्टि फिर उतपत हो जावे।

20

ब्रह्म रात प्रलय जद आवे
माया तद अव्यक्त हो जावे
ब्रह्म उस थों वो परे व्यापे
सत्त सनातन सूक्षम जापे
सब सृष्टि जद नाश हो जावे

तद वी घट घट ब्रह्म समावे।

21

जो अक्षर अव्यक्त सदावे
नाश रहत जो ब्रह्म कहावे
सो तूं सूक्षम ब्रह्म पछाणी
तिस नूं परम गति तूं जाणी
जद प्राणी इस भाव नूं पावन
जन्म मरन विच फेर न आवन
अक्षर ब्रह्म नाम है मेरा
सोई परम धाम है मेरा।

22

परम पुरुष सो ब्रह्म कहावे
जिस विच सारा जगत समावे
जिस दा अंत किसे नहीं पाया
जिस ने सब ब्रह्मांड रचाया
अंतिम ज्ञानी तिस नूं ध्यांदे
कर भगती तिस ब्रह्म नूं पांदे।

23

जद योगी देह नूं छड जावन
मर के फेर जन्म न पावन
ऐसा कौन समय है भारत
वर्णन करन लगां सुन पारथ।

24

सूरज उत्तरायण विच आवे
शुकल पक्ष जग नूं चमकावे
दिन दे वेले प्राण त्यागे
ज्योति अगन दे मारग लागे
ऐसा ब्रह्म उपासक ज्ञानी
परम बह्म नूं मिले सो प्राणी।

25

धुआं धार ते कालियां रातां
दक्षनायन सूरज दिया ज्ञातां
योगी जे तद देह छड जावे
तद ओह चन्द्र लोक नू पावे

जिस थां फल कर्मा दा पांदा
भोग फलां नूं फिर आ जाँदा।

26

जिस मारग विच ज्ञान समावे
सो हे पारथ शुकल कहावे
जिस विच फेर अंधेर हो जांदा
सो मार्ग है कृष्ण कहांदा
जो दो मार्ग आख सुनाए
सदा थों ई दोवें चले आए
शुकल मार्ग जो प्राणी जावे
जन्म मरन विच फेर न आवे
कृष्ण मार्ग जो प्राणी जांदा
मुड़ के फेर है एथे आँदा।

27

योग युक्त हो जा तूं अर्जुन
योग समाधी ला तूं अर्जुन
योग मार्ग ते भुलदा नाहीं
उलटे राह चल रुलदा नाहीं।

28

यज्ञ रचा के वेद नूं पढ़ के
तप ते दान विखे चित्त धरके
ऐसे कर्म कीतयां पारथ
जो जो फल मिलदा हे भारत
योगी जद ब्रह्म मारग जांदा
ऐसे सर्व फलां नूं पांदा
जग कारण जो ब्रह्म सदावे
तिस विच योगी लीन हो जावे।

इति
श्रीमद् भगवद्‌गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा सामवेद तारक
ब्रह्मयोग नामक अठवां अध्याय समाप्त होया।

नौवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा राजविद्य राजमूह्य योग

1

श्री भगवानोवाच

निन्दा रहित हे पारथ प्यारे
दसनां गूढ़े भेत मैं सारे
ज्ञान तत्त मैं खोल सुनावाँ
अनुभव दियाँ बातां समझावाँ
जो गल जान मोक्ष नूं पावें
जग बंधन थों तूं छुट जावें।

2

इलम–ज्ञान–विद्या जग माहीं
इस थों ऊच्चा कोई वी नाहीं
इस थों गूढ़ी रमज न कोई
परम पवित्र उत्तम सोई

अनभव नाल ऐ जानया जावे
सुख देवे ते धर्म वधावे
अत उत्तम ऐह ज्ञान सदाँदा
हे पारथ एह नाश न पांदा।

3

ब्रह्म ज्ञान नू जो न परखदे
धर्म विखे श्रद्धा नहीं रखदे
पारथ सो मुझ नूं नहीं पांदे
जग बंधन विच सो फस जांदे।

4

हे अर्जुन संसार एह सारा
निराकार थों है विसतारा
सब जग पृथ्वी सूरज तारे
मेरे आसरे विचरण सारे
आपे स्थित दुख भंजन मैं
आपे आप निरंजन मैं।

5

ब्रह्म आदिक जो देवते प्राणी
मुझ विच सो तूं स्थित सब जाणीं
कुदरत ईश्वर अपरम पारा
देख योग दा तूं विसतारा
धारन कीता मैं जग सारा
मैं जग रक्षा करने हारा
भूतां अंदर मैं स्थित नाहीं
फिर वी पालां सब जग ताईं।

6

वायू पवन जो हर थां जावे
फेर वी विच्च आकाश समावे
तिवें भारत सब भूत प्राणी
मेरे विच सब स्थित तूं जानीं।

7

हे पारथ जद परलय आवे
जग अव्यक्त रूप हो जावे

प्रकृति अपरा रूप कहाँदी
सृष्टि मुझ विच लै हो जांदी
कल्प नवां जद फेर है आँदा
जग दा तद विस्तार हो जाँदा।

8

कुदरत तों सब खेल रचाँवां
मुड़ मुड़ मैं एह जग उपजाँवाँ
पर एह जग सब माया पाहया
जग विच है अज्ञान समाया।

9

हे पारथ मैं जगत रचावां
तद वी बंधन विच न आँवा
कर्तापन अभिमान न मैंनू
फल भोगन दा ध्यान न मैंनू
उदासीन मानुष दी नियाईं
मैंनू कर्म फसावन नाहीं।

10

सत रज तम गुण रूपी माया
इस थों मैं सब जगत रचाया
कुदरत नूं जद माया चुमदी
इक सुर ते सब सृष्टि घुमदी।

11

सब जग दा मैं मालक स्वामी
परम महेश्वर अंतरयामी
लोक मैंनूं देह धारी जानण
उचियां भावाँ नू न पछानण
ताहियों तां ओह मूरख प्राणी
तुछ जानन मैंनूं अज्ञानी।

12

मूरख उलटी मत चित वाले
फड़न सदा ओह भैड़े चाले
सब आशा ते कर्म तिन्हांदे
सने ज्ञान व्यर्थ ने जाँदे।

13

देवतयाँ जहे चित्त जिनहाँदे
महा पुरूष जो ने सदवांदे
सो मेरा सत भाव पछानन
मैनूं आद अविनाशी जानन।

14

आद अविनाशी विच चित धरदे
इक रस हो मेरा भजन ने करदे
भक्ति निश्चय विच रम रैंहदे
इन्द्रियां नूं बस कर लैंदे
चित्त मेरी पूजा विच लांदे
नमस्कार कर मैनूं ध्यांदे।

15

कई कई ज्ञान यज्ञ चित धरके
कई कई होर कई यज्ञ करके
कई तरां मेरा नाम ध्यांदे
कई मैनूं इक रूप मनांदे
कई पूजन मेरे रूप घनेरे
ऐसे कई उपासक मेरे।

16

सत मैं यज्ञ मैं अन मैं भारत
औषध ते मन्त्र मैं पारथ
हवन दा सामग्री घी मैं
हवन कर्म अग्नी वी मैं
स्थावर जंगम भूत वसेंदे
मुझ विच सब ही निवास करेंदे
हितकारी जग आद हां मैं
सृष्टि दी बुनयाद हां मैं
परलय मैं ते उतपत मैं
जग दा को बीज सत मैं।

17

जगत पिता जग माता मैं
पिता महा ते धाता मैं
ओंम पवित्र नाम हाँ मैं

ऋग मैं यजुर साम हाँ मैं।

18

कर्म फलां दा कर्ता मैं
पालन हारा भरता मैं
प्रभु संसार दा मालक मैं
कर्म साक्षी जग पालक मैं।

19

सूरज बन जग नूं चमकावाँ
चानन ते गर्मी पहुँचावां
किरणाँ थों वर्षा बरसावाँ
किरणाँ थों ही जल नूं सुकावां
जल रोकां असमान चढ़ावां
समय आवन ते फेर बसावाँ
अमृत ते ज़िंदगानी मैं
मृत्यु मौत निमानी मैं
सत्य रूप जग तारन मैं
कारज मैं ते कारण मैं।

20

पढ़ पढ़ वेद जो ज्ञानी थींदे
जो निश पाप सोम रस पींदे
यज्ञ करेंदे भजन करेंदे
स्वर्ग लोक वल ध्यान धरेंदे
आखर स्वर्ग लोक नूं जांदे
देवतयां वाले सुख पाँदे।

21

छोड़ स्वर्ग मृत लोक नूं आवन
पुन्य धर्म जद खे हो जावन
केवल वैदिक धर्म नूं फड़ के
कर्मा दी अभिलाशा करके
मृत्यु लोक विखे फिर आंदे
जन्म मरन विच फिर फस जाँदे।

22

जो केवल मुझ विच चित्त धरदे
इक रस हो मेरा भजन ने करदे

सदा मेरे विच ध्यान लगांदे
कर्म सदा निष्काम कमांदे
योग खेम भक्ति कर डारां
कारज तिन्हां दे आप सवारां।

23

श्रद्धा भक्ति नाल हे अर्जुन
देवतयां नूं जो कोई पूजन
सो वी जान तूं मैनूं ध्यांदे
सिधा छड टेडे राह जांदे।

24

मैं सब यज्ञां दा रखवाला
मैं यज्ञां दा भोगन वाला
जो नर देवतेयां नू ध्यांदे
मेरा सूक्षम तत्त न पांदे
ऐसे ज्ञान हीन गिर जावन
यज्ञ दा असली फल न पावन।

25

जो नर देवतयाँ नू ध्यांदे
सो नर देव लोक नूं जांदे
जो प्राणी पित्राँ नूं ध्यावन
सो नर पित्र लोक नूं जावन
भूत प्राणी जो कोई पूजन
जावन भूत लोक सो अर्जुन
भक्त मेरे मैनूं जो ध्यांदे
सो ज्ञानी मैंनू ने पांदे।

26

जो प्राणी मुझ विच चित धरदे
पत्त फुल फल जल अर्पन करदे
जो वी शुद्ध चित्त भक्त चढ़ावे
सो वस्तु मैंनूं मिल जावे।

27

जो कुछ करें ते जो कुछ खांवें
हवन यज्ञ तप दान कमाँवें

हे अर्जुन हे कुन्ती नन्दन
ओह सब करदे मेरे अर्पन।

28

कर्म अर्पन कर देवें मैंनू
न फिर कर्म फसावन तैनूं
चंगे मंदे फल न पावें
कर्म बंधनां थों छुट जावें
योग युक्त सन्यासी थीवें
जीवंदे जो मुक्ति रस पीवें।

29

देह त्यागें तां मुझ नूं पाँवें
मुझ विच जोती जोत समावें
जग दे जीव हे पारथ प्यारे
मेरे तांई इक सम सारे
न कोई जग विच दुश्मन मेरा
नां ही है कोई सज्जन मेरा
अग्नी जिवें सब जगत तपावे
नेड़े आयां सेक पहुँचावे
तिवें भक्त जो मुझ वल आवन
मेरे सत सरूप नूं पावन
प्रेम नाल जो मुझ ताईं आंदे
मेरे विच सो स्थित हो जाँदे।

30

जो नर होवे अत्त बुरियारा
हद्दों वध के औगन हारा
ओह वी जे मेरे वल आवे
प्रेम पूर्वक मैंनू ध्यावे।

31

केवल मेरा नाम ध्यांदा
मेरा प्रेमी भक्त सदांदा
उस नूं वी तूं साधू जाणीं
उत्तम निश्चय वाला प्राणी।

32

निश्चय जान हे अर्जुन प्यारे

नाश न पावन भक्त हमारे
स्त्री वैश शूदर हे अर्जुन
पापी तक जो मैंनू ध्यावन
जो कोई शरण मेरी विच आवे
निश्चय परम गती नूं पावे।

33

पुन्य शील ब्रह्मन हे पारथ
राज ऋषि जो भक्त यथारथ
भक्ति नाल जो मैंनू ध्यावन
सहज ही परम गती सो पावन
इस गल दा अर्जुन की कहना
पर एह चोला सदा न रहना
छिन भंगुर मानुष देह तेरी
पारथ एह देह दुखां घेरी
तद बी दुर्लभ देह नूं पाके
मैंनूं भज तूं वृत्ती लाके।

34

मेरे विच मन अपना ला तूं
मेरा परम भक्त बन जा तूं
पारथ मेरा पूजन कर तूं
मेरे चरणां विच सिर धर तूं
जद तूं शरण मेरी विच आवें
मेरे सत्य स्वरूप नूं पाँवें
जो नर मेरे आसरे आंदे
सो मुझ परमेश्वर नूं पाँदे।

इति
श्रीमद् भगवद्‌गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा राजविद्य राजगूह्य योग
नामक नौवां अध्याय समाप्त होया।

दसवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा विभूति योग

1

श्री भगवानोवाच

जिस थों तृप्त होवे चित तेरा
फिर सुण परम वचन इक मेरा
तेरे हित खातर हुण अर्जुन
परम बचन आखाँ सुण अर्जुन।

2

देवते महा ऋषि जग माहीं
मेरे आद नूं जानन नाहीं

ऋषि महा ऋषी देवतेयां दा
आद मूल हाँ मै, सदवांदा
नित्य अजन्मा जन्म न पावां
सर्व अनादी ईश सदावां।

3

सब लोकाँ दा पालक मैं
परम महेश्वर मालक मैं
जो कोई मैंनूं ऐसा ध्यावे
तिस दे शोक निकट नहिं आवे
जगझंझट विच सो नहीं फसदा
मेरे परम रूप विच बसदा।

4—5

बुद्धि अते ज्ञान हे पारथ
बिन मोह थों जो ज्ञान यथार्थ
क्षमा—सत—इन्द्री वस करना
शान्ति सुख दुख जम्मना मरना
भय अभय—डरना न डरना
जीवां दी हिंसा न करना
समता दे सत भाव नूं पाना
राग द्वेष थों रहत हो जाना
तप संतोष ज्ञान हे अर्जुन
यश अपयश अपमान हे अर्जुन
अड्‌डो अडरे भाव न्यारे
मेथों भाव एह उपजन सारे।

6

अर्जुन सप्त ऋषि मनूं चारे
मेरे विच विचरन एह सारे
मुझ थों उतपत होई इन्हाँ दी
सब मानुष संतान तिन्हाँ दी।

7—8

योग विभूती नूं जो पहचाने
कुदरत दे समर्थ नूं जाने
मेरे पूरण तत् नूं पावे
निश्चय योग युक्त हो जावे

भक्ति निश्चय वल चित लावे
सो नर परम भक्त बन जावे
मैं सब जग दा प्रभु कहावां
हे अर्जुन सृष्टि उपजावां
घट घट विच सब नूर है मेरा
एह सब जगत ज़हूर है मेरा
पूर्ण प्रेमी भक्त प्यारे
तत् जान मैंनूं भजदे सारे।

9

मेरे ताईं सम चित करके
प्राण अपने मेरे हित करके
जो कोई मेरे तत् नूं जानन
पार ब्रह्म दा रूप पछानन
सत समझ जो मैंनूं ध्यांदे
सदा ही तृप्ति आनन्द पांदे।

10

मेरे नाल जो नर जुड़ जावन
श्रद्धा प्रीत नाल जो ध्यावन
सो नर बुद्धि योग नूं पांदे
सो नर मैंनू प्राप्त हो जांदे।

11

अर्जुन भक्तां दा हित चाहवां
योगीयां दे चित विच रस जावां
योगी ज्ञान तत् नूं पावे
ज्ञान रूप दीपक बल जावे
अंधकार अज्ञान थों आंदा
ज्ञान दीप सब तिमर मिटांदा।

12

अर्जुनोवाच

पारब्रह्म प्रभु परम धाम हैं
नित अजन्मा ईश शाम हैं
दिव्य पुरुष विष्णू नू जो ध्यावन
आद अजन्मा दे गुण गावन।

13

नारद–देवल–असित–व्यासा
देव ऋषि तोहे करें अरदासा
तूं वी तां हे केशव प्यारे
एह गुण अपने वरने सारे।

14

आप ने जो जो गल फरमाई
सत जान मैं हिरदे लाई
दानव देव सार न जानन
रूप तेरे दा पार न जानन।

15

तूं संसार रचावन हारा
पंच भूत दा मालक प्यारा
महा देव पुरशोतम स्वामी
जगत पति प्रभु अंतरयामी
कौन भला तेरा रूप बिखाने
तेरी महिमा तूं ही जाने।

16

तेरियाँ शक्तियां ते गुण सारे
तुझ बिन कौन कहे प्रभु प्यारे
कौन भला गुण गावे तेरे
पूरण रूप नाल प्रभु मेरे
अचरज शक्ति रूप तूं जापें
धार जगत नूं घट घट व्यापें।

17

तूं प्रभु पूरण योगी मेरा
सदा करां चिंतन मैं तेरा
दस मैं किवें पहचानां तैनूं
किन भावां थों जानाँ तैनूं।

18

योग विभूती फिर फरमाओ
महिमा दा विस्तार सुनाओ
अमृत सम गल सुन प्रभु तेरी
तृपति न होवे प्रभु मेरी।

19

श्री भगवानोवाच

वर्नण करन लगां हुण अर्जुन
दिव्य विभूतियां तूं सुण अर्जुन
मुख विभूतियाँ आख सुनावाँ
विसतारां विच मैं ना जावां।

20

सब दे हिरदयाँ दे विच आपे
ईश्वर आतमा रूप व्यापे
जग दा आद मध्य ते अंत
मैं हाँ सो पूर्ण भगवंत।

21

अर्जुन आदितयां विच सारे
मैं हाँ विशनु पारथ प्यारे
जो जो जोतीवान पदारथ
मैंनूं सूरज जान तू पारथ
मरीची हाँ मुरूता विच मैं
चन सब नक्षत्राँ विच मैं।

22

साम वेद वेदां विच मैं
इन्द्र हाँ देवतेयां विच मैं
सब इन्द्रियाँ विच मन मैं
प्राणियाँ दे विच चेतन मैं।

23

शिव शंकर रुदरां विच मैं
हाँ कुवेर यक्षां विच मैं
अगनी वसवां विच मैं अर्जुन
मेरु पर्वतां विच मैं अर्जुन।

24

सर्व प्रोहतां विच हे भारत
मैंनूं जान बृहस्पति पारथ
सकंध सेना पतियां विच मैं
सागर जान सरां विच मैं।

25

भृगु ऋषि ऋषियां विच मैं
ओं अक्षर शब्दां विच मैं

जप हाँ मैं सब यज्ञां ताईं
हिम पर्वत सब स्थावरां माहीं।

26

पिपल हां वृक्षां विच मैं
कपिल मुनि सिधां विच मैं
नारद देव ऋषियां विच मैं
चतरथ गंधरवां विच मैं।

27

अमृत थों जो उपज्या भारत
मैं सो उच श्रवां हां पारथ
ईरावत हां गज इन्द्रां माहीं
राजा हां सब पुरुषां ताईं।

28

बज्रवान शस्त्रां विच मैं
कामधेन गौवां विच मैं
जग उतपत दा मूल जो अर्जुन
मैं हां कामदेव सो अर्जुन

पारथ मेरा तत पछानी
सर्पां विच मैंनूं वासुकी जानी।

29

नागाँ विच मैं शेष कहावाँ
जलचरां विखे वर्ण बन जावाँ
आर्य्य मान पित्रां विच मैं
यम हाँ सब शासकां विच मैं।

30

दैवों विच प्रहलाद हां पारथ
गणत काल विच काल हां भारत
पशुआं विच मैं सिंह कहावां
पक्षियाँ विखे गरुड़ बन जावां।

31

जो सब जग पवित्र कर डारे
मैं सो पवन हाँ पारथ प्यारे
राम हाँ शस्त्र धारियाँ ताईं
मगर हाँ मैं सब जल चरा माहीं

सारी नदियां विच हे पारथ
गंगा जान तूं मैंनूं भारत।

32

सृष्टि दा भगवंत हाँ मैं
आद–मध्य ते अंत हां मैं
विद्या ते इलमां विच सारे
मैं अध्यात्म विद्या प्यारे
झगड़े विच वी वसना मैं
बोली वाद ते रसना मैं।

33

अखरां विच आकार हाँ मैं
सब जग वेखन हार हाँ मैं
मैंनूं द्वन्द स्मास पहचानी
नाशों रहित काल तूं जानी।

34

अर्जुन जो सब जग नूं मारे
मैं सो मौत हां पारथ प्यारे
अगों जिस सृष्टि गति छोहनी
हे अर्जुन मैं हां सो होनी
कीर्ती श्री बानी श्रुती मैं
बुद्धि क्षमा अते धृती मैं।

35

शाम ब्रहत भजनां विच मैं
गायत्री छंदां विच मैं
माघ मास मासां विच मैं
रुत बसंत ऋतुआं विच मैं।

36

छलिये विच फरफेज हाँ मैं
तेजस्वी विच तेज हाँ मैं
जय में निश्चय दा तत् मैं
सत वादियाँ दा सत मैं।

37

यादू वंशयां विच है भारत
वासुदेव मैं हा सुन पारथ

मेरा तत् स्वरूप पछानी
पाण्डुवां विच मैंनू अर्जुन जानी
व्यास मुनि मुनियाँ विच मैं
शुक्र कवि कवियां विच मैं।

38

हाकम दा मैं डंड कहावां
विजयी दी नीती बन जावां
गहर गंभीरां विच चुप पारथ
ज्ञानी विच मैं ज्ञान हां भारत।

39

जो वी जग विच चीज़ हे अर्जुन
सब दा हाँ मैं बीज हे अर्जुन
स्थावर जंगम जीव कहावन
मुझ बिन किसे कार न आवन।

40

मैं सब तों ऊँचा भगवंत
दिव्य विभूतियाँ दा नहीं अंत
एह जा मैं विस्तार सुनाया
बनगी मात्र है दर्शाया।

41

तेज सुन्दरता बल वडयाई
जिस थां वी वेखें चंगिआई
उस विच मेरा तत पछानी
रूप मेरे दी कनी तूं जानी।

42

पर की करने पारथ प्यारे
तूं सुन के विस्तार न्यारे
थोड़े विच मैं गल मुकावां
बीज रूप जग माहीं समावां
तत् सत ओंम् अंश फड़ लीला
उस थों सब जग धारन कीता।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा विभूति योग
नामक दसवां अध्याय समाप्त होया।

ग्यारहवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा श्री विश्वविराट रूप दर्शन

1

अर्जुनोवाच

मेरे हित हे केशव प्यारे
तूं जो मुख तो वचन उचारे
परम गूढ़ विस्तार सुनाया
आत्म ज्ञान दा तत समझाया
विंशया मोह वचन सुन तेरे
संशय दूर होऐ सब मेरे।

2

एह जग जिवें उतपत हो जावे
फेर जिवें ऐह नाश नूं पावे
एह बातां मैं सब सुन रखियाँ
कंवल पाल सम तेरियाँ अखियाँ
कंवल नैन तूं है प्रभु मेरो

सुणया रूप अवनाशी तेरो।

3

जो तूं रूप दा वर्णन कीता
सो सब सत असां मन लीता
सो सब गुण प्रभु अंदर तेरे
तद वी हे पुरशोतम मेरे
ज्ञान शक्ति बल तेज घनेरा
ऐसा रूप विराट जो तेरा
ऐसा रूप अनूप दिखा दे
विश्व रूप अपना दर्शा दे।

4

जेकर जानो कृष्ण मुरारे
मैं कर सकसाँ दर्श तिहारे
हे योगेश्वर अन्तर्यामी
चरणां विच बिनती है स्वामी
तद फिर हे प्रभु घट घट वासी
दस देओ अपना रूप अविनाशी।

5

श्री भगवानोवाच

देख मेरे तूं रूप हजारां
लख करोड़ाँ बाझ शुमाराँ
भाँत भाँत दे रूप निराले
लखाँ रंगाँ शकलाँ वाले।

6

देख तूं आदित्याँ वल पारथ
वसुआँ ते रुदरां वल पारथ
देख अर्जुन अश्वनी कुमाराँ
देख तूँ मुरुतां दियाँ बहाराँ
देख तूं होर अनेक नज़ारे
जो नहीं किसे ने वेखे सारे।

7

चराचर सब जगत पसारा
इक थाँ स्थिर सब वेख तूं सारा
मेरी देह वल ध्यान लगा तूँ
जो इच्छया सो दर्शन पा तूँ

8

पर जे इन अखियाँ नाल तकसें
विश्व रूप मेरा देख न सकसें
लै अर्जुन लै दिव्य दृष्टी
रज के वेख ऐश्वर्य सृष्टि।

9

संजयोवाच

योगियाँ दा जो परम योगेश्वर
नारायन माधो परमेश्वर
विश्व विराट सरूप बटाया
पारथ नू सो रूप विखाया।

10

वाह वाह रूप अनूप निराला
लख मुख ते लख नेत्रां वाला
वेख रूप विसमित ने सारे
हद्दों वध अनगिणत नज़ारे
भूषन सज रहे लख हज़ाराँ
हथ विच शास्त्र वाझ शुमाराँ।

11

गल विच दिव्य हार जिन पाए
तन ते वस्त्र अजब सजाए
देवतयाँ अर्शां तों घलियाँ
सो खुशबूआँ तन ते मलियां
चौं तरफ़ी मुख वेखन जिसदे
जिस विच अजब नज़ारे दिसदे
विश्व विराट अनन्त स्वामी
नज़र पया सो अन्तरयामी।

12

जद माधो ने रूप बटाया
जग विच ऐसा चानन छाया
जे लखाँ सूरज चढ़ जावन
उस चानन नूं कदी न पावन।

13

देवाँ दा जो देव कहावे

तिस विच जगत नज़र सब आवे
जग दा जो विस्तार है सारा
जो कुछ वी संसार है सारा
अर्जुन ने सब इक थाँ पाया
रूप वेख अर्जुन विसमाया।

14

विश्व रूप दा दर्शन पाके
अजब हैरानी दे विच आके
रूप वेख बौराना होया
रोम रोम मसताना होया
पारथ ने तद सीस निवाया
नमस्कार कर वचन सुनाया।

15

अर्जुनोवाच

तेरे विश्व रूप विच प्रभ जी
सारे देवते देखाँ मैं
स्थावर जंगम भूत प्राणी
रूप तेरे विच वेखां मैं
तुझ विच वेखां ईश्वर ब्रह्मा
कमल आसन ते बराज रहे
ऋषि रिषेश्वर नाग देवते
तुझ विच सारे साज रहे।

16

भुजाँ अनेकां उदर अनेकां
मुख ते नैन बे अंत प्रभु
रूप अनूप अन्नत ने तेरे
तूं सच्चा भगवंत प्रभु
आद न लभया मध्य न दिसया
अन्त तेरा किस पाया ए
विसमित हो प्रभु सीस निवावां
विश्व रूप दर्शाया ए।

17

गदा चक्र हथां विच सजदे
मसतक मुकुट सुहांदा ए

तेज तेरे तों हे प्रभु मेरे
सूरज वी शर्मादा ए
लखां दीपक जगमग करदे
जोतियाँ सब शर्मा गईयां
किवें पछानां रूप मैं तेरा
अखियां ने चुंधया गईआं।

18

अक्षर नाश न पावन वाला
परम प्रभु परमेश्वर तूं
आसरा है जो सर्व जगत दा
अविनाशी जगदीश्वर तूं
नियम धर्म जो आदों चलया
रक्षक उस मारग दा तूं
परम पुरुष अविनाशी स्वामी
मालक सारे जग दा तूँ।

19

आद मध ते अन्त न तेरा
कौन कहे गुन तेरो जी
बल समर्थ युक्त मैं वेखां
दर्शन हे प्रभु मेरो जी
हे प्रभु तेरियाँ भुजाँ अनेकां
चन सूरज दो नैन तेरे
अगन ज्वाला निकल रही
ए प्रभु ऐसे मुख हैन तेरे।

20

स्वर्ग लोक ते पृथ्वी दे विच
आकाशां विच व्यापें तूं
ऐसा विश्व रूप है तेरा
सर्व दिशां विच जापें तू
अद्भुत अचरज परम भयंकर
रूप विराट न्यारा ए
रूप वेख विसमित सब होए
सहम गया जग सारा ए।

21

सूरमयां दा भेस धार के देवते
रण विच लड़ रहे ने
तेरे मुख दी ज्वाला दे विच
दौड़ दौड़ के बड़ रहे ने
कई कई जेहड़ दौड़ न सकदे
हथ जोड़ भयभीत खड़े
रूप वेख के विसमित होए
गावन उसतत गीत खड़े
सिद्ध महार्षि सारे प्रभु जी
स्वसती वाचन करदे ने
तेरी उसतत महिमा वाले
रल मिल मन्त्र पढ़दे ने।

22

रूद्र आदित्य वसू हे प्रभु
जो देवते सारे साह रहे
मरुत देवते विश्व अश्वनी
पित्री जन ने विराज रहे
यक्ष असुर गंधर्व सिद्ध जन
जोती तेरी पेख रहे
सारे ही अत विसमित होके
रूप तेरा ने वेख रहे।

23

लखां मुख ते नैन अनेकां
अति महान आकार तेरा
बाहवां लतां चरण अनेकां
उदरां दा न शुमार तेरा
लखां दाढ़ा मुख विच तेरे
वेख मैंनूं भय आंदा ए
परम भयंकर रूप वेख के
सारा जग डर जांदा ए।

24

आकशां विच स्वर्गलोक तक
व्याप रिहा एं ईश्वर तूं

तेरे वर्ण ते रूप अनेकां
जगमग करें जगदीश्वर तूं
हे विष्णु तूं ता मुख अपने
चौ तरफीं फैलाए ने
नेत्र तेरे थां थां चमकन
वेख लोग घबराए ने।

25

वेख रूप भयभीत होया मैं
धीरज शान्ति खो गया मैं
वेख के रूप अनूप मैं
तेरा लट बौरा जिहा हो गया मैं
दाढ़ा परम भयंकर मुख विच
वेख रूप भय आंदा ए
काल अगनी मुख तों पई निकले
मेरा चित घबरांदा ए
पूरब केड़ा पछम किधरे
एह वी मैंनूं सुझदा नहीं
हे विष्णु मैंनूं सुख न कोई
होश ठिकाने मुझदा नहीं
हे देवेश्वर जग दे स्वामी
रूप वेख घबराया मैं
प्रसन्न हो जाओ हे विष्णु!
शरण तेरी हुन आया मैं।

26–27

वेखां राजे योद्धे सूरे जो
इस रण विच लड़ रहे ने
तेरे परम भयंकर मुख विच
आपे आप ही बड़ रहे ने
धृतराष्ट्र दे बेटे सारे तेरे
मुख वल आ रहे ने
भीष्म, द्रोण, कर्ण, अभिमन्यु
काल नूं आप बुला रहे ने
तेरे परम भयंकर मुख वल
दौड़ दौड़ कई आंदे ने

कई इक बोटी बोटी होके
दाढ़ां विच फस जाँदे ने।

28

नदियाँ दे परवाह दौड़ के
सागर विच जियूं पैंदे ने
वेखां तिवें एह योद्धे
तेरी मुख ज्वाला विच ढैंदे ने।

29

जिवें पतंगे वेख के दीपक
लट बावरे हो सड़दे ने
तिवें एह प्राणी काल दे बद्धे
तेरे मुख विच बड़दे ने।

30

सब लोकां नूं तूं हे विष्णु
चिथ चिथ मुँह विच कट रिहाएं
दाढ़ाँ विच मज़बूत पकड़ के
जीभं नाल तूं चट रिहा एं
तेरा तेज महान प्रभु जी
घट घट विच समाया ए
तेज तेरे दी ज्वाला ने
प्रभु सारा जगत तपाया ए।

31

प्रसन्न होवो हे देवेश्वर
चरणी सीस झुका रिहा हां
परम भयंकर रूप है किसदा
सोच सोच घबरा रिहा हां
आद पुरुष नूं किवें मैं जाणाँ
चित विच शौक समाया ऐ
किस कारण हे कृष्ण मुरारे
तूं एह रूप वटाया ऐ।

32

श्रीभगवानोवाच

सब जग नूं जो नाश करेंदा
सो मैं काल भयंकर हां

मारन नूं त्यार सदा मैं
रुद्र रूप शिव शंकर हां
भीष्म द्रोण कर्ण सब योद्धे
काल ग्रास सब कर जाने
तू भावें लड़ न लड़
अर्जुन तद बी सारे मरजाने।

33

अगे ही मरे होए ने सारे
एह गल सची मन अर्जुन
भीष्म द्रोण काल वस सारे
तूं इक कारण बन अर्जुन
उठ अर्जुन उठ हिम्मत कर
तूं दुश्मन मार नसा दे तूं
यश पावें ते राज नूं भोगें
उठ हुण बाण चला दे तूं।

34

भीष्म कर्ण जैदरथ द्रोणा
मैं सब मार छडे अर्जुन
मोयां नूं उठ मार हे पारथ
डर डर के कायर न बन
उठ अर्जुन उठ बाण चला दे
सब शत्रु जित जावेंगा
शत्रु नूं उठ मार तूं अर्जुन
सृष्टि विच यश पावेंगा।

35

संजय उवाच

सुण भगवान दे वचन एह अर्जुन
थरथर कंब कंब पैंदा ए
डर डर जोड़ हथां नूं निंउं के
फिर भगवान नूं कैंहदा ऐ।

36

अर्जुनोवाच

हे माधव हे ऋषिकेशजी
रूप तेरे जग मोहया ऐ

तेरी कीर्ति गाके सुण के
सब जग हर्षित होया ए
राक्षस सारे चौ तरफां नूं
डर डर नसदे जा रहे ने
सिद्ध मुनि सब इकट्ठे होके
तैनूं सीस निवा रहे ने।

37

किओं न सारे सीस नवावन
तुद्ध नूं हे देवेश अनन्त
परमातम जगत आदी कारण
पारब्रह्म पूरण भगवन्त
हिरण गर्भ दा कारण ईश्वर
घट घट विच समावें तूं
सत असत थों परे तू
अक्षर नाश कदे न पावें तूं।

38

आद देव तुं पूरुष सनातन
आसरा सब संसार दा तूं
आपे जानन योग प्रभु तूं
ज्ञाता जग बिस्तार दा तूं
आपे तूं परिपूर्णता जग विच
विष्णु रूप समा रिहा ऐं
परमधाम बेअंत प्रभु सब
सृष्टि आप चला रिहा एं।

39

तूं वायू–यम–वरुण–चंद्रमा
अगनी तूं जग मालक तूं
ब्रह्मा दा वी उतपत कर्ता
अक्षर सृष्टि पालक तूं
नमस्कार प्रभु नमस्कार प्रभु
महिमा तेरी गा रिहा हाँ
नमस्कार प्रभु बारमबारा
चरणी सीस झुका रिहा हाँ।

40

प्राकर्मी समरथ स्वामी
सारा जगत चलावें तूं
तुध विच सारा विश्व वियापे
सर्व रूप अखवावें तूं
पूर्ब पच्छम उत्तर दक्षन
तेरा ही विस्तार प्रभु
सर्व दिशां विच सीस निवांवां
तुद्ध नूं बारमबार प्रभु।

41

बेसमझी या हठ विच तैनूं
कृष्णमुरारी कैहंदा सां
ओ यादव ओ मित्र पियारे
सदा बुलाँदा रैंहदा सां
हासे विच या खेडन वेले
नाम तेरे मैं धरदा सां
कई बार मित्रां विच बह के
मैं बेअदबियाँ करदा सां।

42

क्षमां करी अपराध तूं मेरे
रूप तेरा न जानया मैं
अगम अगोचर अलख अपारा
तैंनू नहीं सी पछानया मैं।

43

जगत पिता परमेश्वर हैं
तूं है गुरू महान प्रभु
त्रैलोकी विच पूजन लायक
कोई न तेरे समान प्रभु
क्षमा करो अपराध प्रभु जी
सीस चरण विच धरदा हां
प्रसन्न होवो हे परमेश्वर
चरण वंदना करदा हां।

44

पुत्र पिता थों मित्र मित्र थों

भुलां जिवें बखशा लैंदा
पति जिवें पत्नी दियां भुलां
बखश के गल नाल ला लैंदा
तिवें प्रभु जग मालक स्वामी
भुलां सब बखशावां मैं
बखश देओ अपराध प्रभु जी
चरणी सीस झुकावाँ मैं।

45

अनडिठया एह रूप वेख के
हर्षित हे भगवान वी हां
डर डर के कुछ व्याकुल वी हाँ
रूप वेख हैरान वी हाँ
प्रसन्न होवो हे विश्वेश्वर
अपना रूप वटा लओ जी
रूप चतुरभुज फेर विखाऔ
रूप विराट लुकाओजी।

46

मोर मुकट ते गदा चकर
प्रभु फेर वेखना चाहवां मैं
रूप चतरभुज फेर विखाऔ
चरणी सीस निवावाँ मैं।

47

श्री भगवानोवाच

प्रसन्न होके लोक दे कारण
रूप अनूप विखाया मैं
परम तेजमय आदतें अनहद
विश्व रूप दर्शाया मैं
विश्व विराट रूप दा अज तक
किसे नज़ारा लीता नहीं
ऐस रूप दा तुद्ध बिन अर्जुन
किसे वी दर्शन कीता नहीं।

48

वेद ज्ञानी यज्ञ दे कर्ता

रूप विराट न वेख सके
कृया कर्म तप दान दे पूरे
सो वी रूप ने पेख सके।

49

रूप वेख के व्याकुल न हो
मूड़पना छड पारथ तूं
निर्भय होके प्रसन्न होके
इष्ट वेख हे भारत तूं
गदा चकर हथां विच सजदे
वेख चतुरभुज मूरत तूं
मोर मुकट पीताम्बर धारी
कृष्ण सखा दी सूरत तूं।

50

संजय उवाच

संजय बोलया हे राजन्!
तद विश्व देव परमेश्वर ने
फिर मानुष देह रूप वटाया
विष्णु परम महेश्वर ने
सोम मूर्ति कृष्ण धार के
पारथ नूं पुचका रह्या ए
डरे होये अर्जुन नूं माधव
मुड़ मुड़ धीर बंधा रह्या ए।

51

अर्जुनोवाच

हे माधव हे कृष्ण मुरारी
हे मन मोहन हे गिरधारी
वेख के फिर मानुष देह तेरी
होश ठिकाने आ गई मेरी।

52

श्री भगवानोवाच

हे अर्जुन शुभ भाग है तेरा
वेखया विश्व रूप जो मेरा
बड़ा कठिन इस रूप दा दर्शन
देवते वी इस रूप नूं तरसन।

53

वेद पढ़े तप दान करे जो
यज्ञ करन विच ध्यान धरे जो
सो नर वी हे अर्जुन प्यारे
विश्व रूप न कदी निहारे।

54

मेरे विश्व रूप दा दर्शन
जे कोई करना चाहवे अर्जुन
सत्तसरूप नूं जानना चाहवे
केवल मुझ विच ध्यान लगावे
सब तरफों मन वागां मोड़े
इक रस भक्ति विच चित्त जोड़े।

55

मेरे हित्त सब कर्म कमांदा
मुझ विच अपना आप रमांदा
जो है मेरा भक्त प्यारा
दुनिया दा मोह त्यागे सारा
जो नर संग रहित हो जावे
वैर भाव सब मनों भुलावे
सो नर सच्चा भक्त कहांदा
मेरे सत्त सरूप नूं पांदा।

इति
श्रीमद् भगवद्‌गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा श्री विश्वविराट् रूप
दर्शन नामक ग्यारहवां अध्याय समाप्त होया।

बारहवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा भक्ति योग

1

अर्जुनोवाच

प्रभु जो तूं उपदेश सुनाया
उस थों एह कुझ समझ है आया
हे माधव हे कृष्ण मुरारे
दो प्रकार दे भक्त तिहारे
इक तां सगुण रूप नूं ध्यावन
सगुण प्रभु नू सीस निवावन
दूजे निरगुण ब्रह्म सिमरदे
निराकार दी पूजा करदे
दोहां विच्च प्रभु जी फरमाओ
कौन है ज्ञानी एह समझाओ।

2

श्री भगवानोवाच

जो नर मन मेरे विच लावे

श्रद्धा ते विश्वास वधावे
सगुण विराट रूप जो ध्यान्दा
सो उत्तम योगी सदवाँदा।

3–4

जो नर सब जग दा हित चांहदें
जो नर सम दृष्टी हो जांदे
इन्द्रियाँ सब वस विच करदे
अक्षर ब्रह्म विखे चित्त धरदे
अक्षर नाश रहित सदवावे
वर्णन विच्च जो कदे न आवे
निराकार अव्यक्त स्वामी
नित्त निरन्तर अन्तरयामी
मन बुद्धि थों परे अविनाशी
अचल एकरस घट घट वासी
जो योगी उस ब्रह्म नूँ ध्यावन
ब्रह्म विखे सो लीन हो जावन।

5

जो निर्गुण दी पूजा करदे
अक्षर ब्रह्म बिखे चित्त धरदे
जो कोई निराकार नूं ध्यान्दे
अर्जुन सो अत्त कष्ट उठान्दे
देह अभिमान मिटाना औखा
र्निगुण ब्रह्म नूं पाना औखा।

6

जो नर मेरे विच्च लिव लांदे
मेरे हित सब कर्म कमांदे
सगुण रूप दा चिन्तन करदे
इक रस हो मेरा नाम सिमरदे।

7–8

मन चित्त जो मेरे विच लावन
मेरे प्रेमी भक्त कहावन
भक्तां दा उद्धार कराँ मैं
भवसागर तों पार करां मैं

मृत्यु रूप घोर संसारा
इस थों करां मैं पार उतारा
पल पल मेरा नाम ध्या तूँ
मन बुद्धि मेरे विच्च ला तूं
इथों जद मुझ विच ध्यान धरेंगा
मेरे विच ही निवास करेंगा।

9

जे इयों हे पारथ मुझ माहीं
चित्त लावन दी शक्ति नाहीं
तद अभ्यास विखे चित्त धर तूं
मैंनू मिलन दी इच्छया कर तूं।

10

जे अभ्यास वी समरथ नाहीं
कर्म अर्पण कर मेरे ताईं
मेरे हित जे कर्म कमावें
सहज ही परम सिद्ध हो जावें।

11

कर नहीं सकदा जे इस गल नूं
त्याग अर्जुन कर्मा दे फल नूं
मन वस कर इस पासे ला तूं
इक रस हो शरण मेरी आ तूं।

12

है अभ्यास थों ज्ञान चंगेरा
ज्ञान नालों है ध्यान उचेरा
ध्यान नालों अत्त श्रेष्ठ हे अर्जुन
सब कर्मा दे फल दा त्यागन
कर्म फलां नू जो छड जावे
सो नर परम शांति पावे।

13

द्वेष भाव जो मनों भुलांदा
सब संसार दा मित्र कहांदा
धृती क्षमा दा मर्म पछाने
सुख दुःख नूं जो इक सम जाने

अहंकार जो करदा नाहीं
दया करे जो जीवां तांई।

14

सदा सबर संतोष जो करदा
योग अभ्यास विखे चित्त धरदा
इन्द्रियां नूं जो जित्त जांदा
निश्चय नाल है मैनूं ध्यान्दा
स्थिर चित्त हो मेरा नाम सिमर दा
मन बुद्धि मेरे अरपन करदा
ऐसा मेरा भक्त दुलारा
सो मैंनूं अत्यन्त प्यारा।

15

जो संसार थों भय न खावे
न ही जिस थों जग डर जावे
हर्ष, विशाद ते भय नूं त्यागे
कर संतोष शरण मेरी लागे
हर्ष शोक तों करे किनारा
सो मैंनूं अत्यन्त प्यारा।

16

अन्दरों बाहरों मैल गवावे
मन इन्द्रे चित्त वस विच्च लियावे
चतुरां वांगू करे गुज़ारा
जग दे मोह तों करे किनारा
निर्भय जग दे दुःख न झागे
कर्म फलां दी इछया त्यागे
ऐसा जो है भक्त चंगेरा
उस विच्च मेरा प्यार वधेरा।

17

जो मन चाहवे सो मिल जांदा
तद वी जो न हर्ष मनांदा
जे न मिले ते सबर है करदा
द्वेष भाव विच्च चित्त न धरदा
जे कोई प्यारी शै गुम जावे

तद वी जो न शोक मनावे
जो अन–मिलनी शै जग माहीं
उस दी इच्छया करदा नाहीं
जो सब कर्मां दा फल त्यागे
बन के भक्त जो शरणी लागे
ऐसा जो है भक्त दुलारा
सो मैनूं अत्यन्त प्यारा।

18

शत्रु मित्र जो इक सम जाने
सुख दुःख विच्च न फरक़ पछाने
मान अपमान ते सरदी गरमी
इक सम जिस नूं सख़्ती नरमी
फल इच्छया छड कर्म कमांदा
जग झंझट विच जो न आंदा।

19

स्तुति निन्दया विच्च इक सम रहंदा
वाणी तीक जो वस कर लैंदा
जो कुछ मिले सबर नाल खावे
जो नर स्थिर बुद्धि हो जावे
स्थान रहित जग मोह तों न्यारा
सो है मेरा भक्त प्यारा
श्रद्धा रखदा जो मुझ माहीं
जिस नूं मुझ बिन आसरा नाहीं।

20

ऐस धर्म विच्च जो चित्त धरदा
धर्म अमृत जो सेवन करदा
पारथ जो नर भक्त है मेरा
उस विच्च मेरा प्यार घनेरा।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा भक्ति योग
नामक बारहवां अध्याय समाप्त होया।

तेरहवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा भक्ति योग

1

श्री भगवानोवाच

हे पारथ हे कुन्ती नन्दन
इस देह नूं सब क्षेत्र आखन
जो क्षेत्र दे तत नूं पावे
सो ज्ञाता क्षेत्र कहावे।

2

सब क्षेत्र विच्च तूं हे पारथ
क्षेत्र मैनूं जान हे भारत
जो क्षेत्रं दे तत नूं जानें
प्रकृति पुरुष दा मर्म पछाने
सो ज्ञानी है तत्त नूं पांदा
सोई ज्ञान है ज्ञान सदांदा।

3

की है एह क्षेत्र हे पारथ
इस दे की विकार ने भारत
क्षेत्र है कौन कहांदा
की इसदा प्रभाव सदांदा
सुन लै कौन उपाधि इस दी
कौन कौन है शक्ति तिसदी
जो दोहां दे गुण हे अर्जुन
थोड़े थोड़े सुन हे अर्जुन।

4

एह गल ऋषि मुनि सब गांदे
वेद वी गल एहो समझांदे
ब्रह्म सूत्र विच्च इसदा वर्णन
कई तरह दा मिलदा अर्जुन।

5

पंच भूत दी एह है काया
है इस विच अहंकार समाया
ऐस शरीर खेत विच्च पारथ

बुद्धि ज्ञान विवेक ने भारत
महा तत्व अव्यक्त कहावे
गुप्त प्रकृति नज़र न आवे
कर्म ज्ञान दस इन्द्रियाँ अर्जुन
गयारवां ऐस शरीर दे विच्च मन।

6

इछया द्वेष ते सुख दुख सारे
चित्त ते धीरज अर्जुन प्यारे
एह सब क्षेत्र विकार कहावन
एह सब काया विखे समावन।

7

मान अते वडपन न चाहना
सुन वडयाई फुल न जाना
धर्म कर्म दा नां वडयाना
किसे नूं नां पाखंड विखाना
क्षमा अहिंसा सरलता करना
गुरु चरणां विच्च सीस नूं धरनां
देह शरीर नूं मल मल धोना
अन्तः करण दो निर्मल होना
स्थिर वित्त हो के ध्यान जमाना
आत्मा नूं सत्त मारग लाना।

8

शब्द स्पर्श रूप रस गंध
छड देना सब दा सम्बंध
कदे वी अहंकार न करना
जन्म मरन दा दुःख चित्त धरना
जरा बुढ़ापा रोग बीमारी
सभनां विच्च दुःख दोष ने भारी
दुःख दोषां विच्च ध्यान जमानां
दुःख दोषां दे तत्त नूं पानां।

9

सुत दारा घर बार हे पारथ
सब विच्च तोड़े प्यार हे पारथ
अत्त मिलाप न कदे वधावे

जग थों उदासीन हो जावे
इष्ट मिले तां सुख न जाने
नां लभे तां दुःख न माने
चंगा मंदा सब कुछ सैंहदा
सदा ही जो नर सम चित्त रैंहदा।

10

एक भाव नाल ध्याना मेनूं
ध्यान योग नाल पाना मैंनूं
श्रद्धा भक्ति प्रेम वधाना
स्वार्थ ते अभिमान भुलाना
जग झंझट तो वखरे बहना
विषय वासना पास न रहना।

11

आतम ज्ञान विखे स्थित होना
ब्रह्म नूं पा चित्त मैल नूं धोना
एह सब समझ ज्ञान तूं अर्जुन
इसदा तत्त पछान तूं अर्जुन
जो इस थों विपरीत कहावे
सो सब ही अज्ञान सदावे।

12

जानन योग तत्त समझावां
ईश्वर दा विस्तार सुनावां
जिस नूं जान अमर पद पावें
प्रभु प्रेम विच्च मगन हो जावें
परम ब्रह्म दा आद न अंत
सत्त असत्त थों परे भगवंत।

13

सब थां हथ पैर उस प्रभु दे
घट–घट अख, सिर, मुख, कन लभदे
सब कुझ वेखे सुने पछाने
सर्व ज्ञाता सब कुझ जाने
घट घट विच ओह ब्रह्म व्यापे
सर्व जगत विच स्थित ओह आपे।

14

उस दियां कोई इन्द्रियाँ नाहीं
पर ओह रम रिहा सब जग माहीं
एह सब जगत जहान है उसदा
इन्द्रियाँ विच्च ज्ञान है उसदा
सब थों वखरा ब्रह्म कहावे
तद वी सब विच्च आप समावे
है ओह निर्गुण पर इयों जापे
सब गुण भोग रिहा ओह आपे।

15

सब दे अन्दर बाहर व्यापे
कदे अचल कदे चलदा आपे
अत सूक्षम जानया न जावे
पर ओह घट घट विच्च समावे
नेड़े आपे दूर वी आपे
घट घट विच्च भरपूर वी आपे।

16

एको ब्रह्म है अड अड नाहीं
वख वख जापे पर जग माहीं
आपे ओह सृष्टि उपजावे
आपे विष्णु जगत चलावे
आपे बन जावे शिव शंकर
परलय उतपन करे भयंकर।

17

जो सब सूरज आद पदार्थ
सब विच्च ब्रह्म दा चानन पारथ
तम गुण थों ओह दूर रहे ब्रह्म
हृदयां विच्च भर पूर रहे ब्रह्म
ज्ञान रूप जग मांहीं समावे
ज्ञान बिना पाया न जावे।

18

खेत ते ज्ञान दा तत समझाया
जानन योग ब्रह्म दरशाया

भक्त मेरा जद एह तत्त जाने
तद ओह मेरा रूप पछाने।

19

प्रकृति पुरुष अनादी जानी
निर्विकार सो ब्रह्म पछानी
गुण विकार जो जग विच अर्जुन
प्रकृति थों सारे उपजन।

20

इन्द्रियाँ अते शरीर जो अर्जुन
प्रकृति जान तूं सब दा कारण
पर शरीर जो सुःख दुःख पावे
एह सब गल्लां पुरुष करावे।

21

प्रकृति विच्च जद पुरुष समांदा
तद दुनियां दे सुःख दुःख पांदा
सुख दुख गुण विच जद फस जावे
तद एह जन्म मरन विच्च आवे।

22

आपे करन करावन हारा
वेखन अते विखावन हारा
पालन आप करे परमेश्वर
परम आत्मा परम महेश्वर
आपे वंडे आपे खावे
आपे विच्च शरीर समावे।

23

जो कोई पुरुष ब्रह्म नूं जाने
प्रकृति नूं सत गुण मानें
भावें ओह रहे कर्म कमान्दा
जनम मरन विच्च पर नहीं आंदा।

24

कई अन्दर वल ध्यान लगांदे
अपने अन्दर ब्रह्म नूं पांदे
कई विवेक विचार करेंदे
सांख दे मारग कदम धरेंदे

कर्म योग नूं कई अपनावन
योग कीतयां ब्रह्म नूं पावन।

25

ऐसे कई लोग जग माहीं
आतम ज्ञान जो जानन नाहीं
गुरमुख थों सब गल सुन लैंदे
भक्ति मारग ते टुर पैंदे
तद ओह ब्रह्म उपासना करदे
भक्ति भजन कीतयां तरदे
मौत नदी थों पार हो जांदे
सिमरन कर कर ब्रह्म नूं पांदे।

26

भारत एह गल सत तूं जानी
स्थावर जंगम आद प्राणी
बिन क्षेत्र क्षेत्रज्ञ हे अर्जुन
बिन संजोग कदे न उपजन।

27

इक सम सब थां जाप रिहा ए
सब चीज़ां विच्च व्याप रिहा ए
नाशवान वी जो शै जापे
सब विच्च ओह अविनाशी व्यापे
जो अविनाशी नू इयों जाने
सोई ब्रह्म दा तत्त पछाने।

28

घट–घट विच्च जो ब्रह्म चितारे
अपने आप नूं कीकन मारे
जो इयों ब्रह्म तत्त नूं पावे
उसदी परम गति हो जावे।

29

माया विखे जदों जुड़ जांदा
तदों पुरुष है कर्म कमांदा
आत्मा दा जो तत्त पछाने
आत्मा नू कर्ता न जाने

सो नर कर्म तत्त नूं पावे
सो प्राणी ज्ञानी सदवावे।

30

जद तूं ब्रह्म दा तत्त पछाने
सब जग ब्रह्म विच स्थित तूं जाने
एको एक है ब्रह्म प्यारा
उस इक थों सब जग विस्तारा
ऐस तत्त नूं जद तूं पावें
तद तूं ब्रह्म रूप हो जावें।

31

ब्रह्म अनादी से अविनाशी
ब्रह्म है निगुर्ण्ण घट घट वासी
ब्रह्म विशे शरीर जद आवे
नाँहीं फसे न कर्म कमावे।

32

जिवें आकाश है हर था वसदा
अत्त सूक्ष्म पर किते न फसदा
तिवें अत्त सूक्ष्म ब्रह्म प्यारा
देह कर्मां थों रहे न्यारा।

33

पारथ जिवें इक सूरज चढ़दा
सारे जग विच्च चानन करदा
आत्मा तिवें जग माँहि समावे
सारा देह क्षेत्र चमकावे।

34

जो देह जीव दा तत्त पछाने
क्षेत्र अते क्षेत्र नूं जाने
नाले जो इस मर्म नूं पावन
प्राणी किंवे मुक्त हो जावन
ब्रह्म ज्ञानी सो सदवांदे
पार ब्रह्म नूं सो नर पांदे।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा भक्ति योग
नामक तेरहवां अध्याय समाप्त होया।

चौदहवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा गुण ते विभाग योग
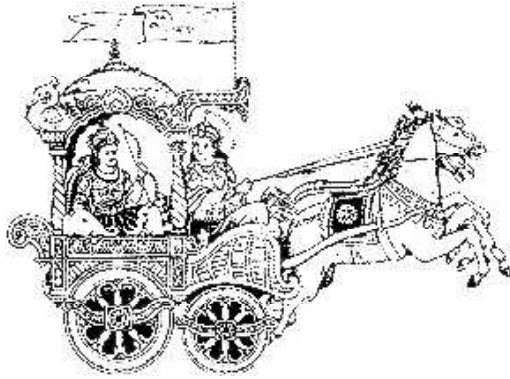
1

श्री भगवानोवाच

जिस नूं जान मुनि जन सारे
पारथ पहुंचे मोक्ष द्वारे
सर्व उत्तम जिस ज्ञान नूं पावां
सो सुन तैनूं ज्ञान सुनावां।

2

जो इस उत्तम ज्ञान नूं पावे
सो मेरे विच्च लीन हो जावे
उतपत समे ओह जनमे नाहीं
नाश न पावे मेरे माहीं।

3

ब्रह्म जोती है प्रकृति माया
सो है महद ब्रह्म कहलाया
उस विच्च गर्भ दा कारण मैं
पिता रूप जग तारन मैं।

4

महद ब्रह्म विच्च बीज मैं पावां
इस थों सब सृष्टि उपजावां
एह सब जूनां शकलां अर्जुन
माया महद ब्रह्म थों उपजन
सब दा पिता कहांवा मैं
बीज रूप उपजावां मैं।

5

सत रज, तम, एह तिन गुण पारथ
माया तो उपजन हे भारत
आत्मा माया मोह विच्च आंदा
गुण बंधन विच्च तद फस जादां।

6

सतगुण अत निर्दोष कहावे
निर्मलता परकाश वधावे
आत्मा नूँ सुःख दुःख ज्ञान है देंदा
आत्मा नूं देह विच्च लभ लैंदा।

7

राग रूप जो रज गुण अर्जुन
तृष्णा संग थों होवे उतपन
कर्मां विच्च सो प्यार वधावे
आत्मा नूं देह विखे फसावे।

8

तम अज्ञान थों उतपन होंदा
तम गुण सारे जग नूं सोहंदा
नींद आलस परमाद वधांदा
आत्मा नूं देह विखे फसादां।

9

पारथ सतगुण सुःख नूं वधावे
रज गुण सारे कर्म कमावे
तम गुण ज्ञान ते परदा पांदा
विषय वासना वल लै जांदा।

10

सत गुण तद परधान कहावे
रज ते मत नूं जद जित जावे
रज गुण तद ज़ोरां विच्च आंदा
सत ते तम है जद लुक जांदा
सत ते रज नूं जितयां अर्जुन
तम गुण भाव हो जावे उत्पन्न।

11

इन्द्रियाँ विच्च ज्ञान समावे
सतगुण दा तद वाधा होवे

देह दे द्वार जदों खुल जावन
ज्ञान रूप चानन जद पावन।

12

लोभ राग कर्मां नूं छोहनां
सबर शान्ती दा न होना
आत्मा एह हालत तद पावे
रज गुण जदों ज़ोर विच्च आवे।

13

मोह अज्ञान उलट मत करना
कर्म करन विच्च चित्त न धरना
अर्जुन एह स्वभाव तद आंदा
देह विच तम गुण जद वध जांदा।

14

सत गुण ज़द ज़ोरां विच्च आवे
जे प्राणी तद जान गवावे
उत्तम लोकां विच्च तद जान्दा
पूरन सुःख ते शान्ती पांदा।

15

रज गुण वाले जद मर जावन
कर्म योनियां विचच मुड़ आवन
तमो गुणी जद देह छडेंदे
मर के पशु पुशाच ओह थेन्दे।

16

पुन कर्म जद कोई कमांदा
सात्विक निर्मल फल है पांदा
रज गुण थों सारे दुःख उपजन
तम गुण है अज्ञान दा कारण।

17

सत गुण भाव है ज्ञान वधावे
रज गुण भाव लोभ उपजावे
जो है तम गुण भाव हे अर्जुन
मोह अनमित अज्ञान दा कारण।

18

सत गुणी देव जून विच्च जांदे

रज गुणी मानुषी देह नूं पांदे
तम गुणवाले जद मर जावन
पशु पशाचां दी देह पावन।

19

जीव जदों इस तत्त नूं पावे
तिन्नां गुणां तों पार हो जावे
मैं कुझ नहीं करदा एह जाने
तद ओह मेरा रूप पछाने।

20

तिन गुण जदों उलंघे जावन
मौत बुढ़ापा तद न सतावन
जन्म मरन थों मुक्त हो जावे
तद ओह जीव अमर पद पावे।

21

अर्जुन उवाच

सत रज तम नूं उलंघन जेहड़े
हे प्रभु उन्हां दे लच्छन केहड़े
किवें आचार तिन्हां दा भगवन
तिन्हां गुणां नूं किवें उलंघन।

22

श्री भगवानोवाच

ज्ञान, कर्म, मोह, बुरा न जाने
ब्रह्म स्थित हो गुण तत पछाने
जे कोई वी गुण लोप हो जावे
तृष्णा विच्च न चित्त भरमावे।

23

हर्ष, शोक थों दूर हो जावे
सत रज तम विच्च चित्त न डोलावे
सत रज तम गुण चलदे जाने
गुंण ते कर्म दा तत्त पछाने
तद ओह प्राणी स्थिर चित्त होके
मन दी चेष्टा तृष्णा रोके।

24

सुख दुःख नूं जो इक सम जाने

अपना सत स्वरूप पछाने
सुख दुःख दोवें इक सम जिसनूं
सत स्वरूप दा आनंद तिस नूं
इक सम सोना, पत्थर माटी
जिवें पराया तिवें ही नाती
धीरज ते सन्तोष नूं माने
प्रशंसा निन्दया एक सम जाने।

25

इक सम तिसनूं मान अपमाना
मित्रा ते शत्रु एक समाना
जद ओह किसे कर्म नूं छोहवे
उस दा फल वल ध्यान न होवे
गुणातीत सो पुरुष कहावे
सत रज तम थों दूर हो जावे।

26

जो कोई मेरे विच्च चित्त धरदे
अचल एक रस भक्ति करदे
सो वी गुणातीत हो जाँदे
मेरे ब्रह्म रूप नूं पाँदे।

27

निर्विकार ते अमर अविनाशी
धर्म रूप जो घट घट वासी
सुख स्वरूप जो ब्रह्म कहावे
नित निरन्तर जगत् चलावे
उस विच वरी परवान हाँ मैं
इस ब्रह्म दा वी स्थान हाँ मैं।

इति
श्रीमद् भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण—अर्जुन संवाद गुण ते विभाग योग
नामक चौदहवां अध्याय समाप्त होया।

पंद्रहवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा पुरुषोत्तम योग
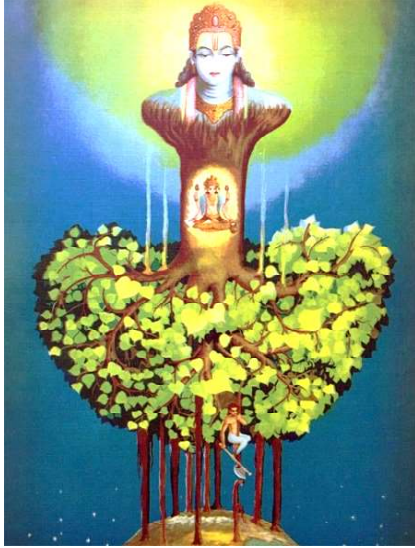
1

श्री भगवानोवाच

एह संसार वृक्ष दी नायीं
उपर जड़ां प्रकाशां ताईं
ऐस वृक्ष दीयां शाखां डालां
फेलन हेठां विच पातालां
उत्तम वेद ग्रंथ जो चारे
ऐस वृक्ष दे पत्ते सारे
ऐस वृक्ष दा तत्त जो पावे
वेद ज्ञानी सो सदवावे।

2

ऐस वृक्ष दियां डालियां अर्जुन
सत रज तम गुन वालियां अर्जुन
विशयां दियां ने कोंपलां फुटियां
जड़ां सरियां फसियां जुटियां
स्वर्गों हेठ पातालां ताईं

वृक्ष फैलिया सब जग माहीं
मानुश लोक विखे पारथ
जड़ां वृक्ष दियां करम ने भारत
करम वृक्ष दियां जड़ां कहांदे
आपो विच्च गुंजल खा जांदे।

3

अंत वृक्ष दा किसे ना पाया
आंप मूल वी समझ न आया
इस दा रूप न जानया जावे
अनुभव विच एह कदे न आवे
ऐस वृक्ष दा रूप न्यारा
कट दियो मार विराग कुल्हाड़ा।

4

तद उस पद दा मार्ग पायिये
जिस पद जा के मुड़ न आयिये
आद ब्रह्म नूं सीस नवावां
महा प्रभु दी शरनी आवां
जिस मुड़ों जग लै चलाई
जग परिवर्तन रस्म बनाई
एह गल कह के सीस नवायिये
ऐस भाव नाल ढूंढन जायिये।

5

जो मोह ते अभिमान गवांदे
विशयां विच जो चित्त न लांदे
उत्तम ज्ञान विखे रम रहदें
कामनां नूं जो वस कर लैंदे
सुख दुख द्वन्द्वां तों छुट जांदे
तद ओह पार ब्रह्म नूं पांदे।

6

ओह तां ऐसा धाम हे पारथ
सूरज चन अग्नि हे भारत
उस पद नूं चमका नहीं सकदे
उस दा तेज विखा नहीं सकदे
उस थां परम धाम है मेरा

उस पद विच जो करे बसेरा
मृत्यु लोक नूं आंदा नाहीं
जन्म मरन दुख पांदा नाहीं।

7

देह विच आत्मा करे बसेरा
जीव रूप जो अंश है मेरा
मानुष लोक विखे हे अर्जुन
जीव रूप है अंश सनातन
इन्द्रियां ते मन विच पारथ
मेरा जो है अंश हे भारत
माया विच सो अंश विचरदा
इन्द्रियां नूं आकर्षण करदा।

8

वायु जिंयु फुंला नूं हलावे
दूर दूर खुशबूई जावे
तिवें जीव जद देह छड जादां
एह देह छड नवीं देह पांदा
मन इन्द्रे चित्त दी खुशबूई
नवें शरीर दी वासना होई।

9

जीव अंधकार रखे इस मन ते
अख नक जीभ त्वचा ते कन ते
सब दा मालिक बन के बंहदा
विषयां दा तद आनन्द लैंदा।

10

देह विच जद एह वास करेंदा
यां जद एह देह नूं छड देदां
शब्द आवक विषयां नाल छोहन्दा
सुख दुख उस थों उत्पन्न होंदा
फेर वी मूर्ख रूप न जानन
केवल ज्ञानी तत्त पछानन।

11

योगी पुरुष समाधि लांदे
आत्मा दा ओह दर्शन पांदे

मूर्ख लोक यत्न कर थकदे
जीव रूप पर वेख न सकदे।

12

सूरज जो कुज़ तेज दखावे
सब जग नूं प्रकाश पहुंचावे
चन, अग्नि विच तेज घनेरा
हे अर्जुन ओह सब है मेरा।

13

पारथ पृथ्वी विखे मैं आके
आपना बल समरथ विखा के
सब जग कीता धारन मैं
जग पोषन दा कारण मैं
चन्द्रमां बन के रस बरसावां
फल सब्ज़ी विच रस मैं पांवां।

14

सब दे अदरां विच मैं समावां
प्राण अपान वायु बन जांवां
चार अन्न पचावां मैं
जठाग्नि बन जावां मैं।

15

सब हृदयां विच मैं रस जावां
स्मृत अते ज्ञान रचावां
दोहां दे लोप दा कारण मैं
चवां वेंदा दा उच्चारण मै
वेद दा रचता ज्ञाता मैं
घट घट बीज समाता मैं
रब थों उत्तम जानना मेरा
असल रूप पछानना मेरा।

16

दो ही पुरुष पदार्थ जानी
क्षर, अक्षर दा तत पछानी
भूत प्राणी क्षर कहलावे
आत्मा नूं अक्षर कहया जावे।

17

दोहां तो उत्तम हे पारथ
है प्रमात्मा जान तूं भारत
ओह है अविनाशी दुख हरता
तीन लोक दा पालन करता।

18

क्षर अक्षर तो उच्च सदावां
ताईयों पुरुषोत्तम कहया जावां
चारे वेद ध्यावन मैंनू
पुरुषोत्तम कह बुलावन मैंनू।

19

जो ज्ञानी मैंनू ऐसा जाने
पुरुषोत्तम दा तत पछाने
जानो सब कुछ जानया उसने
शुद्ध भाव नाल मानयां जिस ने।

20

जो अत्त गूढ़ा शास्त्र अर्जुन
तेरे सन्मुख कीता वर्णन
जानयां बुद्धिमान हो जावें
करन योग सब करम कमावें।

इति
श्रीमद भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा पुरुषोत्तम योग
नामक पंद्रवां अध्याय सामप्त होया।

सोलवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा देवासुर संप्द विभाग
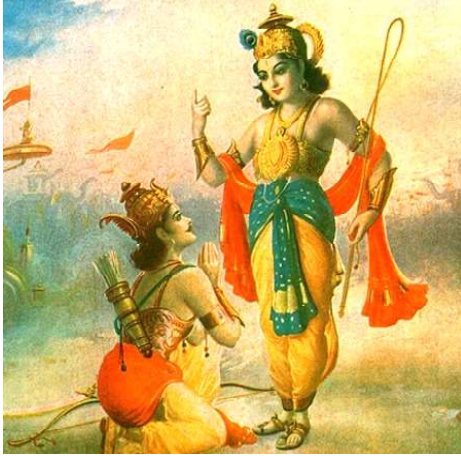
1

श्री कृष्ण बोले

जो प्राणी होवे निर्भय
जिस दा चित्त सदा शुद्ध है
ज्ञान योग विच आनन्द माने
संजम दान दे मर्म नूं जाने
वेद पढ़े तप यज्ञ रचावे
सत्य सरलता भाव वखावे।

2

सत्य अहिंसा दया कमांदा
चुगली क्रोध दे निकट न जांदा
लज्या शान्ति करुणा करे
परधन स्त्रियां चित न धरे।

3

धीरज क्षमा तेज नूं पावे
धख न करे अते मान न भाले

अन्दर बाहर रखे सफाई
भले पुरुष दी एह वडयाई
ऐसे नर गुरमुख कहलावन
देवी संपद युक्त हो जावन।

4

अहंकारी क्रोधी पाखंड़ी
कौड़ा अज्ञानी ते घमंड़ी
सो सब असुर संपदा वाले
मन मुख फड़न अपुथड़े चाले।

5

दैवी संपद मोक्ष दलावे
असुरी बंधन वल लै जावे
दैवी संपद जन्म है तेरा
शोक करन दा थां है केड़ा।

6

जग विच मानुष दो किस्मां दे
इक देवते इक असुर कहांदे
सुने तूं सब दैवी गुण अर्जुन
हुन सब गुण असुरी सुन अर्जुन।

7

असुर संपद वाले अर्जुन
भले बुरे दी सार ना जानन
साफ न होवन विहार तिन्हां दे
मन शरीर आचार तिन्हां दे।

8

आखन एह जग मिथ्या सारा
ईश्वर नहीं इस जग दा सहारा
आखन जग विच ब्रह्म ही है नहीं
काम बिना जग विच कोई शै नहीं
नर नारी दे मिलयां आखन
एह जग सारा होवे उत्पन्न।

9

दुष्ट बेअकल ते शत्रु जगदे
एह सब चन्द्रे करमों लगदे

असुरी मन विच उमर गवांदे
जग दे नाश हेत ने आंदे।

10

इच्छया कामना दे वस आके
मोह विच अपना आप फसा के
दम्भी दुराचारी अभिमानी
उल्टी मत वाले अज्ञानी
औखे कर्मीं हथ चा पावन
फेर पापां विच गरक हो जावन।

11

सो नर बेहद चिन्ता करदे
चिन्ता करदयां आखिर मरदे
काम भोग विच जन्म गवान्दे
काम है जीवन लक्ष सुनांदे।

12

आशा विच ने चित्त भरमांदे
सौ जालां दे विच ने फस जांदे
कामी ते क्रोधी हो जावन
इच्छया कामनां भोगना चाहवन
पापां दा तद मार्ग फड़दे
धन जोड़न दा यत्न न करदे।

13

अज इक कामना पूरी होई
कल होवे गी दूजी कोई
अज तां हो गया एह धन मेरा
कल मिल जासी होर बहुतेरा।

14

अज अपना इक दुश्मन मारां
कल दूजे नूं मार लताड़ां
मेरे जेड स्मरथ है किसदी
सब जग संपत मेरी दिसदी
ऐश सिद्ध धनवान हां मै
भोगी ते बलवान हां मैं।

15

धन वाला ते कुलीन हां मैं
यज्ञदान ते प्रवीण हां मै
मेरे जेहा होर कोई नांहीं
मैं भोगां सब आनन्द ताईं
मूढ़ लोक जग विच हे अर्जुन
ऐस तरां दे वचन उचारन।

16

चित्त जिन्हां दे इयों भरमांदे
मोह जालां दे विच फस जांदे
काम भोग विच जन्म गवावन
सो नर घोर नरक विच जावन।

17

सो नर नर्मता नूं छड जांदे
आपना आप सदा वडयान्दे
धन गुरु दा मान करेंदे
यज्ञ करन दा ढोंग रचेंदे
शास्त्र विधि ध्यान न धरदे
लोक वखावे दा यज्ञ करदे।

18

बली घमंण्डी ते अहंकारी
कामी क्रोधी ते विभचारी
सदा ही पापां विखे विचरदे
सब जीवां दी निंदिया करदे
सो इन्सानां नूं दुकरेंदे
ओह मेरा अपमान करेंदे
सब देहां विच आप समावां
आत्मा रूप पुरुष कहलावां।

19

ऐसे पापी घोर अज्ञानी
साधु द्वेषी ते अभिमानी
असुर जूनियां विच सब जावन
सदा ही घोर दुखां नूं पावन।

20

असुर जूनियां सदा ओह पावन
डिग डिग होर उधम हो जावन
मैथों होर वी दूर हो जान्दे
दुख कलेश सदा ओह पान्दे।

21

काम क्रोध ते लोभ हे भारत
जीवन नाश करन ओह पारथ
एह लै जावन नर्क द्वारे
कर तिन्हां दा त्याग प्यारे।

22

काम आवक जो त्याग दिखावे
नर्क द्वारे तूं छड जावे
सो नर उत्त गती नूं पांदा
सुख दे मार्ग कदम उठांदां।

23

जो शास्त्र दी विधि त्यागन
मन मुख हो विषयां विच लागन
सिद्ध न होवन करम उन्हांदे
न सुख न उत्तम गती पांदे।

24

हुन की करां जे चित्त विच आवे
किस राह जावां मन भरमावे
शास्त्र दा तद आसरा फड़ तूं
जो शास्त्र कहे सो कर तूं
उत्तम सोई विधान है तेरा
इस विच ही कल्यान है तेरा।

इति
श्रीमद भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा देवासुर संप्द विभाग
नामक सोलहवां अध्याय सामप्त होया।

सत्राहवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा श्रद्धात्री विभाग
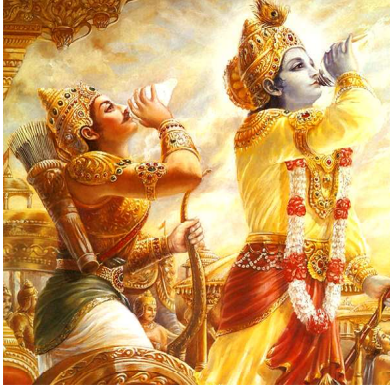
1

अर्जुन बोलिया

जो शास्त्र परमान नूं तजदे
पर श्रद्धा नाल आप नूं भजदे
की होवन प्रभु भाव तिन्हांदे
सत नूं या रज तम नूं पांदे।

2

श्री भगवान बोले

जन्म स्वभाव थों सब जीवां दी
तिन विद्ध श्रद्धा है कही जांदी
सुन सब दा विस्तार सुनावां
सत रज तम दा तत्त समझावां।

3

पिछले संस्कार थों अर्जुन
एह सब श्रद्धा होवे उत्पन्न
ऐसे कारण थों अर्जुन प्यारे

श्रद्धामय एह जीव ने सारे
जो होवे श्रद्धा जीवां दी
तैसी प्रकृति बन जांदी।

4

सातविक श्रद्धा वाले सज्जन
ओह तां देवतयां नूं पूजन
राजस ने विश्वास जिन्हांदे
यक्ष राक्षां वल चित्त लांदे
तमों गुण वल जो चित्त धरदे
भूत प्रेत दी पूजा करदे।

5

ढोंगी लालची ते अभिमानी
कामी अहंकारी अज्ञानी
शास्त्र विधि वल ध्यान न धरदे
ऐवें घोर तपां नूं करदे।

6

इन्द्रियां नूं कष्ट पहुंचांदे
जीव आत्मा नूं वी सतांदे
ऐसे मूर्ख ते अज्ञानी
असुरी श्रद्धा वाले जानीं।

7

भोजन तिन किस्मां दे होवन
तिन ही यज्ञ दान तप अर्जुन
यज्ञ अदिक दा तत समझावां
भोजन दा वी भेत सुनावां।

8

जो भोजन आयु नूं वधावे
जिस दे खायां उत्साह आवे
जो भोजन बलवान बनावे
जो भोजन दुख रोग मिटावे
स्वादी ते पच जावन वाला
बल आनन्द वधावन वाला
सातविक सो भोजन अखवांदे
सत गुन प्राणी तिस नूं खांदे।

9

कौड़े खटे स्वाद जिन्हां दे
राजसी भोजन हैन कहांदे
जिस विच बहुते लून मसाले
रुखे गरमी देवन वाले
दुख रोग ते शोक वधावन
रजोगुनी भोजन कहलावन।

10

रस रहित अध गलया होवे
जूठा बासी सड़या होवे
मधुरता जिस दी दूर हो जावे
यज्ञ होम दे कम न आवे
सो तमोगुनी भोजन सदवावे
तामसी प्राणी जिस नूं खावे।

11

विधिपूर्वक यज्ञ रचावे
फल इच्छया सब मनों भुलावे
जो नर ऐसा यज्ञ रचांदा
सतोगुनी सो यज्ञ सदांदा।

12

कई फल कारण यज्ञ रचांदे
जगत दिखावा ढ़ोंग बनांदे
ऐसे यज्ञ करम हे अर्जुन
सारे रजोगुनी कहलावन।

13

विद्धि अनुकूल यज्ञ जो नाहीं
अन्न दा दान नाहीं जिस मांहीं
मन्त्र सुर दा ध्यान न आवे
दक्षना रहित जो कीता जावे
श्रद्धाहीन जो यज्ञ रचेंदे
तमोगणी सो यज्ञ सदेंदे।

14

देवता ब्राह्मण गुरु विद्वान
सब दी करनी पूजा मान

शौच सफाई चित्त दी सरलता
ब्रह्मचर्य व्रत ते अहिंसा
एह सब प्यारे कुन्ती नंदन
ऐस शरीर दा तप कहलावन।

15

मुख तों ऐसे वाक सुनावे
किसे दे चित्त नूं चोट न आवे
सत्त कहे पर मिट्ठा बोले
जग हित इक इक वाक नूं तोले
मुख तों वेद दा ज्ञान सुनावे
एह बानी दा तप कहलावे।

16

मन वस करना आनन्द रहना
अन्तह करण इक रस कर लैना
चुप साधनी सबर वरवाना
धीरज ते संतोख कमाना
सुद्धभाव छल निकट न आवे
एह सब मानसिक तप कहलावे।

17

फल इच्छया जिस विच न आवे
श्रद्धा नाल जो कीता जावे
ऐसा तप जद पुरुष कमावे
सतोगुणी सो तप कहलावे।

18

पूजा ते संस्कार नूं चाहवे
मान दी खातिर कीता जावे
दंभ कपट जिस तप विच आवे
रजोगुणी सो तप कहलावे।

19

देह अपनी पीड़ पहुंचा के
दूजयां दी बुराई चाह के
मूर्खता अज्ञान दे कारण
जो तप कीता जावे अर्जुन
जो ऐसा तप कीता जांदा

तमोगुणी सो तप कहलान्दा।

20

देना धर्म है एह चित्त लावे
दान देवे पर मान न चाहवे
दान दा बदला चित्त न लोचे
देश काल पात्र सब सोचे
ऐसा उत्तम दान है भारत
सतोगुणी सदवांदा पारथ।

21

ओखे हो जो दान ने करदे
यां फल इच्छा विच चित धरदे
मतलब खातिर दान तिन्हांदा
रजोगुणी सो दान कहान्दा।

22

देश काल पात्र न वचारे
यां कुथां दान कर डारे
अहंकार वस दान कमावे
कर बेइज़ती मगरों लाहवे
ऐसा दान जो कीता जांदा
तमोगुणी सो दान कहांदा।

23

ओम तत सत ब्रह्म कहांदा
ब्रह्म नाम निर्वेष सदांदा
ऐसे उत्तम नाम थों अर्जुन
ब्रह्मन वेद यज्ञ सब उपजन।

24

ब्रह्मन पंडित परम ज्ञानी
वेद पड़न वाले सब प्राणी
विधि नाल जद यज्ञ स्वावन
यज्ञ दान तप करम कमावन
पहलों ओम उचारण करदे
फेर करम वल ने चित्त धरदे।

25

जो प्राणी ने मोक्ष नूं चांहदे

मोक्ष दे मार्ग कदम वधांदे
तत दा शब्द उचारण करदे
करम फलां विच्च चित्त न धरदे
करम करन पर फल न चाहवन
यज्ञ दान तप करम कमावन।

26

जिस कम विच होवे सचयाई
यां नेकी यां जगत भलाई
नेक करम जद कीते जावन
सत नाम तद लोक ध्यावन।

27

सत नाम घट घट व्यापे
सत नाम करमां विच जापे
सत नाम है जग दा कारण
इस थों यज्ञ दान तप उपजन।

28

हवन यज्ञ तप दान हे पारथ
शुभ कम प्रभु गुणगान हे पारथ
बिन श्रद्धा जद कीते जावन
ओह सब कूड़ असत्त कहावान
ऐथे ओथे दोहीं जहानी
न सुख देवन एह गल जानीं।

इति
श्रीमद भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा श्रद्धात्री विभाग
नामक सत्राहवां अध्याय समाप्त होया।

अठाहरवां अध्याय : श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद मोक्ष सन्यास योग

1

अर्जुन बोलया

की है तत्त सन्यास दा भगवन
जानना चाहवां हे मधुसूधन
तत्त त्याग दा वी समझाओ
अडो अडरे अर्थ सुनाओ।

2

श्री भगवान बोले

कई इक यज्ञ करम ने अर्जुन
कामना अर्थ जो कीते जावन
छड देना ऐसे करमां दा
एह वी है सन्यास कहांदा
सब करमा दे फल दा त्यागन
इस नूं आखन त्याग हे अर्जुन।

3

करम दोष है कई फरमांदे
करम त्यागो एहो सुनांदे
कई आखन करमां विच्च लागो
यज्ञ दान तप कदी न त्यागो।

4

सुन मैं अपना मत समझावां
त्याग शब्द दा तत्त समझावां

अडो अडड़े भाग ने अर्जुन
तिन किसमां दे त्याग ने अर्जुन।

5

यज्ञ दान तप करम कहावन
मुनियां नूं पवित्र बनावन
उत्तम करम एहोजग मांहीं
त्यागन योग करम एह नाहीं।

6

परसंग छड के करम एह कर तूं
फल इछिया वल ध्यान न घर तूं
होमे भाव मिटे सब तेरा
एह उत्तम निश्चित मत मेरा।

7

नित्त नेम करमां दा त्यागन
कदे वी एह वाजब नहीं अर्जुन
मोह वस जे कोई त्याग वखावे
तमोगुनी सो त्याग कहावे।

8

कई लोक करमां नूं अर्जुन
दुख दायक दुख कारक मनन
काया दे दुख थों डर जांदे
तद ओह करम त्याग वखलांदे
सो त्यागी राजस कहलावन
त्याग दा फल सो कदे न पावन।

9

नेम करम दा तत्त पछाने
नेम करम नूं कर्तव्य जाने
फल दी आशा मनो भुलावे
अहम भाव वल चित्त न लावे
करता पन नूं मनो त्यागे
हो निशकाम करम विच लागे
ऐसा नर अर्जुन वडभागी
सतोगुनी सो उत्तम त्यागी।

10

जो संसारी करमां तायी।

घृणा द्वेष परगटावे नाहीं
यज्ञ दान करमां विच लागन
एह पर फल दी आशा त्यागन
सो नर संशे भरम मिटावन
सो नर जीवन मुक्त हो जावन।

11

आत्मा जद तक वस्से देह माहीं
करम त्याग हो सकदा नाहीं
सच्चा त्यागी सो सदवांदा
करमां दा जो फल नहीं चांहदा।

12

करम फलां नूं जो न चाहवे
सो पूरन त्यागी सदवावे
मरयां बाद मिलन फल सारे
इष्ट अनिष्ट मिश्रत हे प्यारे
जो है मगन करम फल माहीं
उस नूं एह फल मिलदे नांहीं।

13

साख कहे जो जो ने कारण
जिस थों करम सिद्ध हो जावण
सो सब पंज कारण ने सारे
ओह सब जान हे पारथ प्यारे।

14

कारण इक शरीर कहलावे
हे अर्जुन जो सुख दुख पावे
दूसरा कारण जीव कहांदा
करता भोगता जो सदवांदा
तेरे चेष्ठा दे संबंध
शब्द सपुरुष रूप रस गंध
चौथे वायु प्राण उपान
वायु दियां चालां नूं जान
सूरज चंद्र देवता सारे
पंजवां कारण हैन हे प्यारे।

15

मन बाणी ते शरीर थों अर्जुन

सब प्राणी जो करम कमावन
पाप पुण सब दे हे भारत
पंज ही कारण हैन हे पारथ।

16

जो एह गूढ़ तत्त न पछाने
आत्मा नूं ही करता जाने
सो दुर्गत अंधा अभिमानी
सो नर जान घोर अज्ञानी।

17

जो करमां दा तत्त पछाने
मैं कुज नहीं करदा एह जाने
जिस दी बुद्धि ज्ञान नूं लोड़े
माया दे विच चित्त नूं न जोड़े
ऐसा जो ज्ञानी हे प्यारे
जे ओह किसे नूं जान थों मारे
ओह पापी सदवांदा नाहीं
पाप दे फल नूं पांदा नाहीं।

18

ज्ञान गे तो ज्ञाता भारत
तिन विद्ध करम प्रवृत्ति पारथ
इन्द्रियां करम ते करता अर्जुन
करम संग्रह एह तिन कहावन।

19

ज्ञान करम ते करता भारत
तिन तरह दे समझ तूं पारथ
तिन गुण भेद सांख विच आए
सो सुन पारथ मन चित्त लाए।

20

कसरत विच वहदत जो वेखे
घट घट विच जो ब्रह्म नूं पेखे
सब सृष्टि विच इक सुर जाने
इक सुर दा जा जो तत्त पछाने
जिस ज्ञानों एह तत्त समझ आए
सतो गुणी सो ज्ञान कहाए।

21

सब भूतां नूं अड अड जाने
हर थां अड अड भाव बखाने
जिस ज्ञानों एह भाव है आंदा
रजोगुणी सो ज्ञान कहांदा

22

ब्रह्म नूं जो इक थांवां थापे
समझे ब्रह्म हद अन्दर व्यापे
जिस विच युक्ति अर्थ न आवे
तमो गुणी सो ज्ञान कहावे

23

राग द्वेश विच चित्त न लावन
फल दी इच्छिया मनों भुलावन
जद नर संग रहित हो जांदे
करन योग फिर करम कमांदे
जो वी ऐसे करम ने भारत
सतोगुणी सो जान तूं पारथ

24

खास कामना दे वस आके
फल भोगन विच ध्यान लगाके
अहंकार वस करम कमांदे
करम करन विच्च ज़ोर वरवांदे
ऐसे करम जो कीते जावन
रजोगुणी सो करम कहावन

25

मोह वस हो कई मूर्ख प्राणी
करम करन छोहन अज्ञानी
न कम दा परिनाम चितारन
अपना धन शक्ति न वचारन
अन्ने वा चा करम करेंदे
खलकत दे दुख चित्त न धरेंदे
मूर्ख हूड़ मन ने रखदे
अपने ताकत नूं न परखदे
जो जो इयुं कीते जांदे

तमोगुणी सो करम कमांदे।

26

सतोगुणी करता सो कहलावे
होमे भाव नूं मनो भुलावे
करमां विच जो चित्त न फसावे
मैं करदा हां एह न जतावे
हर दम सबर विखे चित्त धरदे
हार जीत परवाह न करदे।

27

गरज़मंद हो करम जो करदा
करम फलां वल ध्यान न धरदा
लोभी लालची हिंसक बंदा
हर्ष शोक फसया जो बंदा
ऐसा नर जद करम कमावे
रजोगुनी करता सदवावे।

28

मूर्ख शठ कपटी अज्ञानी
रोंदू सुस्त कमीना प्राणी
ऐसा नर जद करम कमावे
तमोमुणी करता कहया जावे।

29

बुद्धि धरती पछान तूं अर्जुन
तिन किसमां दियां जान तूं
बुद्धियां दा विस्तार सुनावां
अड अड सुन तैनूं समझावां।

30

करम दे मार्ग नूं जो जाने
अते सन्यास दा तत्त पछाने
करन योग कम है कि नाहीं
भय अभय है किस गल मांहीं
जो बुद्धि इस तत्त नूं पाए
सतोगुणी बुद्धि सदवावे।

31

धर्म अधर्म नूं जो न जाने

की कर्त्तव्य है एह न पछाने
ऐसी जो बुद्धि है भारत
रजोगुनी सो जान तूं पारथ।

32

जो नहीं धर्म–धर्म तिस माने
हर कर्त्तव्य नूं उल्टा जाने
जद बुद्धि उल्टी हो जाए
तमो गुणी बुद्धि कहलाए।

33

ऐसा धीरज प्राणी लोड़े
जो इस मन दीयां वागां मोड़े
इन्द्रय प्राण नूं वस विच करे
योग समाद्धि विच चित्त धरे
ऐसी धरती ते धीरज भारत
सतो गुणी कहलावन पारथ।

34

जो धर्म अर्थ दी कामना करदे
फिर फल इच्छिया विच चित्त धरदे
कामना वस धीरज जो आवे
रजोगुणी सो धरती कहलावे।

35

दुख भय विषयां विच्च रम रहना
झूठी ज़िद नूं धीरज कहना
आलस दे विच समां गवानां
पागलां वांगू नित अड़ जाना
ऐसा धीरज ते पुरुषार्थ
तमोगुणी तूं जान हे पारथ।

36

तिन किस्मां दे सुख कहे जांदे
अड अड सुन तूं हाल तिन्हां दे
जिस विच आपे ही आनन्द आवे
जिस थों दुख दा नाश हो जावे।

37

पहलां ज़हर वांग विस आए

मगरों अमृत सम बन जाए
उत्तम ज्ञान थों सो सुख आन्दा
सतोगुणी सो सुख कहलायां।

38

इन्द्रियां दे जो सुख अर्जुन
विषयां दे संयोग थों उपजन
पहलों अमृत सम सुख पांदे
मगरों ज़हर रूप बन जांदे
इन्द्रियां दे एह सुख सारे
रजोगुणी कहलावन प्यारे।

39

मोह निद्रा है जिन्हां दा कारण
जो आलस प्रमाद थों उपजन
ऐसे मोह वस सुख हे भारत
तमोगुणी कहे जावन पारथ।

40

पृथ्वी स्वर्ग लोक जग मांहीं
कोई वी ऐसा प्राणी नाहीं
सारे मानुष देवते अर्जुन
सत रज तम बन्धन विच विचरन।

41

ब्राह्मण क्षत्री पारथ प्यारे
वैश ते शूद्र वरन एह चारे
प्रकृति गुण स्वभाव दे कारण
अड अड थापे गये ने अर्जुन।

42

शम दम तप विच मन धरना
शौच सरलता शान्ति करना
ज्ञान अते विज्ञान नूं पाना
शास्त्र विच श्रद्धा दा वधाना
ब्राह्मण दे एह करम कहांदे
सब स्वभाव थों कीते जांदे।

43

शूरवीरता तेज हे भारत

धीरज युद्ध विच हौसला पारथ
युद्ध कदम पिछां न धरना
दान दा देना राज दा करना
क्षत्री दे एह करम कहावन
सहज स्वभाव थों कीते जावन।

44

खेती वजन व्यापार एह सारे
वैश्यां दे हन करम एह प्यारे
कर कर खिदमत समां लंघावन
एह शुद्र दे करम कहावन।

45

आपो आपना धर्म कमांदे
धर्म कमा के सिद्धि पांदे
जिस कारण ओह सिद्धि पावन
सो मारग तूं सुन हे अर्जुन।

46

जो ईश्वर संसार रचावे
सब थां व्यापे जगत चलावे
इस विच प्राणी ध्यान लगावन
अपना अपना धर्म कमावन
धर्म कमा ईश्वर नूं ध्यांदे
पारथ सो नर सिद्धि पांदे।

47

दूजे धर्मां नालों पारथ
अपना धर्म श्रेष्ठ है भारत
अपने धर्म ते चलयां अर्जुन
कोई वी दोष पाप न लग्गन।

48

सहज धर्म जो तेरा अर्जुन
सब थों जान चंगेरा अर्जुन
भांवें दोष होवे उस मांहीं
तद वी त्यागना वाजब नाहीं
सब धर्मां विच दोष ने पारथ
अग विच धुआं रहे जिऊं पारथ।

49

जग झंझट विच चित्त नां लावे
मन ते इन्द्रियां नूं जित जावे
सो नर परम सिद्ध हो जांदा
सो नर तत्त सन्यास दा पांदा।

50

इओं जद प्राणीं सिद्ध हो जांदे
सिद्धि पा जद ब्रह्म नूं पांदे
ब्रह्म ज्ञान विच चित जिऊं लावन
सो मार्ग हुन सुन तूं अर्जुन।

51

बुद्धि शुद्ध पवित्र करे
आत्मा जित्ते धीरज धरे
शब्द संपर्ष रूप गंद्ध
विषयां थों तोड़े संबंद्ध
राग द्वेश सब मनों भुलावें
त्याग भाव नूं मन विच ल्यावे।

52

नदी नीर बन पर्वत जावे
बैठ एकान्त ब्रह्म लिव लावे
जद खावे हलका अन्न खावे
आलस निद्रा दूर नसावे
मन बाणी शरीर वस सारे
करम फलां विच चित्त न धरे
ध्यान करे मन वागां मोड़े
आत्मा विच चित्त अपना जोड़े।

53

अहंकार ते कपट त्यागे
काम क्रोध आदक थों भागे
कामना युक्त समरथ जो भारत
ऐसा बल त्यागे हे पारथ
परम हंस सन्यासी थीवे
ममता रहित जग विच जीवे
ऐसा नर जो ब्रह्म ज्ञानी

तिस नूं ब्रह्म रूप तूं जानीं।

54

ब्रह्म ज्ञानी आनन्द पावे
ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म हो जावे
ब्रह्म ज्ञानी सदा निर लेप
जैसे जल में कंवल अलेप
ब्रह्म ज्ञानी कछु न चाहवे
तिस दे शोक निकट न आवे
ब्रह्म ज्ञानी वरष्ट समाने
सुख दुख नूं ओह इक सम जाने
ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म नूं पावे
रूप मेरे विच लीन हो जावे।

55

ब्रह्म ज्ञानी दा प्रेम घनेरा
पूरण तत्त ओह जाने मेरा
जद ओह पूरण तत्त नूं पावे
तद ओह मुझ विच लीन हो जावे।

56

जो प्राणी सब करम कमावे
पर जो शरण विच मेरी आवे
केवल मेरा आसरा लोड़े
सब मेरे अर्पण कर छोड़े
ऐसा भगत विष्णु पद पावे
अबनाशी विच लीन हो जावे।

57

कर्म अर्पण कर मेरे ताई
बुद्धि नूं कर स्थित मुझ मांहीं
बुद्धि योग दा आसरा छड़ तूं
मन चित्त मेरे समर्पण कर तूं।

58

मन चित्त मेरे समर्पण कर के
पारथ ध्यान मेरे विच्च धर के
श्रद्धा नाल मेरे दर आवीं
सब कठिनाईयां नूं तर जावीं

जे तें अहंकार वस आके
पारथ अपना धर्म भुला के
मेरा सत्त स्वरूप न पावीं
तद अर्जुन तूं नाश हो जावीं।

59

अहंकार वस मूंह नूं खोलें
मैं नहीं लड़ना एह गल बोलें
एह गल अर्जुन मिथ्या तेरी
इस गल विच नहीं शान वधेरी।

60

तूं क्षत्री क्षत्रानी जाया
रग रग विच क्षत्रिय धर्म समाया
प्रकृति ने जोश वखाना
आपे धनुष बाण चढ़ जाना।

61

तूं अर्जुन कुन्ती दा जाया
रग रग विच बल तेज समाया
क्षत्रिय धर्म स्वभाव है तेरा
शूरवीरता भाव घनेरा
मोह वश हो अज्ञान दे कारण
मैं नहीं लड़ना बोलें अर्जुन
जद उठनी ललकार मैदानों
निकल आनी तलवार म्यानों
घट घट विच प्रभु जाप रहया ए
सब हृदयां विच व्याप रहया ए
सब कुज आपे आपे करावे
जग नूं पुतली वांग नचावे।

62

सब बातां थों ध्यान हटा तूं
इक ईश्वर दी शरणी आ तूं
तद तूं परम शान्ति पावें
तद तूं मुझ विच लीन हो जावें।

63

सर्व ज्ञाता मैं जगदीश्वर

सब जग पालन हारा ईश्वर
मैं तैंनूं उपदेश सुनाया
तैंनूं गूढ़ ज्ञान समझाया
कर विचार ते मन धारण करें
फिर जो इच्छया होवे सो कर।

64

परम गूढ़ जो वाक कहावे
सब थों उत्तम मनया जावे
फिर सुन गूढ़ तत्त समझावां
तैनूं सार रूप दरशावां।

65

मन चित्त मेरे समर्पण कर तूं
भक्ति वी मेरे अर्पण कर तूं
प्रेम नाल कर मेरा पूजन
नमस्कार कर मैनूं अर्जुन
तद तूं प्राप्त होवें मैनूं
मित्र हैं सत्त सुनावां तैनूं।

66

सब धर्मां नूं मनों भुला तूं
केवल मेरी शरणी आ तूं
सब कुज मेरे अर्पण कर दे
करम धर्म मेरी चरणी घर दे
तद सब पापां तों छुट जावें
तद तूं अर्जुन मोक्ष नूं पावें।

67

तेरे हित सब तत्त समझाया
परम गूढ़ विस्तार सुनाया
जो प्राणी तप दान न करे
ईश्वर भक्ति चित्त न धरे
निश्चय हीन न सत्त पछाने
मुझ विच पारथ दोष बखाने
सो इस ज्ञान दा पात्र नाहीं
नहीं सुनाया योग उस तांईं।

68

जो ने मेरे भक्त प्यारे
मुझ विच श्रद्धा रखन हारे
जो कोई उन्हां नूं तत्त समझांदा
उत्तम गीता ज्ञान सुनांदा
सो मेरा अत्यन्त प्यारा
उस नूं खुल जाये मोक्ष द्वारा।

69

ऐसा जो जो भक्त है मेरा
उस विच मेरा प्यार घनेरा
उस थों वद कोई प्यारा नाहीं
एथे ओथे हर दो थाईं।

70

गीता ज्ञान दा पाठ करे जो
कृष्ण–अर्जुन संवाद पढ़े जो
ऐसा ज्ञानी श्रेष्ठ कहावे
सो नर परमानन्द नूं पावे।

71

भक्त जो मुझ विच मन चित धरे
केवल गीता श्रवण ही करे
सो प्राणी वी मुझ नूं जावे
मर के पुनलोक नूं पावे।

72

की तूं सुनया ज्ञान हे पारथ
चित्त एकाग्र कर के भारत
की मोह तेरा विन्शया नाहीं
खोल के दस गल मेरे ताईं।

73

अर्जुन बोलया

नष्ट होया मोह केशो प्यारे
होश टिकाने आ गये सारे
तेरे परम कृपा नाल भगवन
सारे संशय हो गये छिन–भिन।

74

संजय बोलया

ऐसी परम पवित्र बानी
मैं है सुनी वसुदेव ज़बानी
कृष्ण–अर्जुन संवाद नूं सुन के
विसमत हो उठ्ठन लूं कंडे।

75

ब्यास मुनि जी होए सहाय
जिस थों दिव्य चक्षु मैं पाये
कृष्णा योगेश्वर परम ज्ञानी
तिस थों आप सुनी एह बानी।

76

ऐस अद्भुत संवाद दा सिमरन
मन नूं हृष्ट करे हे अर्जुन
एह संवाद याद जद आवे
रोम रोम विच खुशी समावे।

77

जद अद्भुत हरि रूप चितारां
विश्व विराट स्वरूप निहारां
तद चित्त विच असचरज समावे
रोम रोम हृष्ट हो जावे।

78

जिस पासे होवे कृष्ण योगेश्वर
मधुसूदन माधो प्रमेश्वर
जिस वल पारथ अर्जुन होवे
गांडीव धनुष नूं चाढ़ खलोवे
हे अर्जुन एह सत करमानी
श्री जय नीति असूल जानी।

इति
श्रीमदभगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र
श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद दा मोक्ष सन्यास योग
नामक अठहरवां अध्याय सामप्त होया।
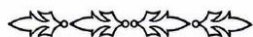
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

yadã yadã hi dharmasya glãnir bhavati bhãrata
abhyutthãnam adharmasya tadãtmãnam srijãmyaham

श्री कृष्ण कहते हैं–
जब–जब धर्म की हानि और अधर्म
की वृद्धि होती है, हे अर्जुन! तब–तब मैं अपने
स्वरूप की रचना करता हूँ (अवतार लेता हूँ)।

Shri Krishna says:
'that whenever there is a decline
in righteousness and increase in
unrighteousness, O Arjuna,
at that time I manifest myself.'

अरुण पब्लिशिंग हाउस
49-51, सैक्टर - 17C, चण्डीगढ़ - 160 017
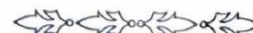
श्रीमदभगवतगीता कर्मयोग

प्रस्तुत भगवद् गीता के सभी अध्यायों का गुरुमुखी अनुवाद जो देवनागरी लिपि में है, पंडित राम शरन दास जी ने किया है। यह अनुवाद स्वतंत्रता के पूर्व का है। यह संस्करण डा. नीरा शर्मा और डा. विभा शर्मा के अथक प्रयासो व सहयोग से संभव हुआ है। आशा है पाठक इस अमूल्य कृति का भरपूर लाभ उठा सके गे। गीता के अनुसार वह कर्म जो निष्काम भाव से ईश्वर के लिए जाते हैं वह बंधन नहीं उत्पन्न करते तथा ऐसे कर्म मोक्षरूप परमपद की प्राप्ति में सहायक होते हैं। इस प्रकार फल की कामना न कर ईश्वर के लिए कर्म करना वास्तविक रूप से कर्मयोग है। भारतीय दर्शन में कर्म, बंधन का कारण माना गया है। किंतु कर्मयोग में कर्म के उस स्वरूप का निरूपण किया गया है जो बंधन का कारण नहीं होता। अब यह प्रश्न उठता है कि कौन से कर्म बंधन उत्पन्न करते हैं और कौन से नहीं? गीता के अनुसार जो कर्म निष्काम भाव से ईश्वर के लिए जाते हैं वे बंधन नहीं उत्पन्न करते। वे मोक्षरूप परमपद की प्राप्ति में सहायक होते हैं। गीता के अनुसार कर्मों से संन्यास लेने अथवा उनका परित्याग करने की अपेक्षा कर्मयोग अधिक श्रेयस्कर है। मनुष्य एक क्षण भी कर्म किए बिना नहीं रहता। कर्म करना मनुष्य के लिए अनिवार्य है। उसके बिना शरीर का निर्वाह भी संभव नहीं है। भगवान कृष्ण के अनुसार तीनों लोकों में उनका कोई भी कर्तव्य नहीं है। उन्हें कोई भी अप्राप्त वस्तु प्राप्त करनी नहीं रहती। फिर भी वे कर्म में संलग्न रहते हैं। यदि वे कर्म न करें तो मनुष्य भी उनके चलाए हुए मार्ग का अनुसरण करने से निष्क्रिय हो जाएँगे। अज्ञानी मनुष्य जिस प्रकार फलप्राप्ति की आकांक्षा से कर्म करता है उसी प्रकार आत्मज्ञानी को लोकसंग्रह के लिए आसक्तिरहित होकर कर्म करना चाहिए। इस प्रकार आत्मज्ञान से संपन्न व्यक्ति ही, गीता के अनुसार, वास्तविक रूप से कर्मयोगी हो सकता है।

ISBN 978-81-8048-275-5

Price: ₹ 251.00 - US $ 31.00